# स्वर्ण आभा

## सन् 1961-2011

प्रकाशक

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति

श्रीडूँगरगढ़

# स्वर्ण आभा

सन् 1961-2011

सम्पादक मण्डल
**राम उपाध्याय**
**चेतन स्वामी**
**मदन सैनी**
**सत्यदीप**
**रवि पुरोहित**
**बजरंग शर्मा**
**विजय महर्षि**

प्रकाशक
**राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति**
**श्रीडूँगरगढ़ 331803 (राज.)**
hindipracharsamiti@gmail.com

आवरण : गौरी शंकर आचार्य

प्रकाशन वर्ष : अक्टूबर, 2011

मुद्रक : महर्षि प्रिंटर्स, श्रीडूँगरगढ़ 331803 (राज.) फोन 01565-222670

# अनुक्रमणिका


1. सम्पादकीय 5
2. समिति के पचास वर्ष : एक दृष्टि 6

**श्रीडूँगरगढ़ के काव्य गौरव** **17-38**

त्रिलोक शर्मा 18
मालीराम शर्मा 19
श्याम महर्षि 20
नंद भारद्वाज 21
कमला भादानी 22
सतीश कुमार 23
चंदनमल 'चांद' 24
गुलशन बोथरा 25
चेतन स्वामी 26
मदन सैनी 27
पृथ्वीराज व्यास 28
सत्यदीप 29
रतन 'राहगीर' 30
भोजराज सोलंकी 31
रवि पुरोहित 32
श्रीभगवान सैनी 33
पुष्पा सिंघी 34
पूनम गुजरानी 35
इन्द्र भादानी 36
सुमेरमल पुगलिया 37
मणिकांत वर्मा (सोनी) 38

**संस्मरणों के आइने में** **39-58**

3. फूले-फले साहित्य की यह वाटिका 41
4. श्रीडूँगरगढ़ की सांस्कृतिक छवि का पर्याय है : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति 44
5. राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ की पांच दशक की यात्रा 48
6. सरोकार, स्नेह और सम्बल की अजस्र त्रिपथगा का स्नान 52
7. व्यक्तित्व विकास का अनुष्ठान : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति 54

8. श्रीडूँगरगढ़ राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति मेरे मन में रची है 56
9. मेरी अपनी संस्था 58

**साहित्य-संस्कृति के सोपान** **59-76**
10. साहित्य, समाज और हमारा समय 61
11. हिन्दी भाषा की साहित्यिक उपलब्धियाँ 63
12. पर्यटन क्षेत्र में अग्रणीय राजस्थान 65
13. पांच सौ वर्ष पूर्व धोरों की धरती पर लिखी गई राजस्थानी रामायण 67
14. डायरी के पन्नों में पसरा है गौरवशाली अतीत 70

**स्मृति शेष** **77-84**
मुखाराम सिखवाल, डॉ. नन्दलाल महर्षि, हनुमानमल पुरोहित, हनुमान प्रसाद उपाध्याय, इन्द्रचंद बिन्नाणी, गुलशन बोथरा, भंवरलाल पुरोहित (बिग्गा), चान्दरतन डागा, जीवराज वर्मा

**संस्था विवरण** **85-112**
15. प्रथम कार्यकारिणी समिति-1961 विवरण 85
16. मनोनीत मानद सदस्य 86
17. कार्यकारिणी समिति (2009-2014) 87
18 'साहित्यश्री' से सम्मानित विद्वान् 89
19. संरक्षक सदस्य 91
20. आजीवन सदस्य 92
21. कार्यकारिणी अद्यतन 95
22. समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं 96
23. राज्य स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विवरण 97
24. मरुभूमि शोध संस्थान : परिचय 101
25. मरुभूमि शोध संस्थान के परामर्श मण्डल के सदस्य 102
26. पुरातत्त्व सामग्री का विवरण 104
27. मरुभूमि शोध संस्थान का अनुसंधान कार्य विवरण 105
28. आयोजित राष्ट्रीय सेमिनारों का विवरण 106
29. राष्ट्रभाषा पुस्तकालय 108
30. राष्ट्रभाषा पुस्तकालय कार्यकारिणी समिति वर्ष (2009-2014) 109
31. राष्ट्रभाषा पुस्तकालय-वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाएं 110

# सम्पादकीय

सन् 2011 का संपूर्ण वर्ष राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। बहुत भव्य और महत्त्व के आयोजन इस वर्ष हुए हैं। ऐसा नहीं है कि इस संस्था के प्रांगण में इस वर्ष ही महत्त्वपूर्ण समारोह-कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, अपितु गरिमामय समारोहों का आयोजन करना इस संस्थान की प्राचीन परम्परा रही है और इसी परम्परा के निर्वहन हेतु प्रतिवर्ष कई ऐसे समारोह, संगोष्ठियां तथा प्रकाशन के कार्य किए जाते हैं, जिन्हें स्मरणीय कहा जा सकता है। इस वर्ष के प्रारंभ में यह निर्णय लिया गया था कि स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रतिमाह दो बड़े आयोजन किए जाएंगे। इस घोषणा का निर्वहन अनेक दृष्टिकोण से इतना सहज नहीं है। किसी एक समारोह की परिकल्पना ही कितनी बातों को सोचने पर बाध्य कर देती है, पर ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि समूचे वर्ष भिन्न-भिन्न भांति के समारोहों की नगर में धूम रही और राष्ट्रभाषा के प्रति इसके अनुरागी साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिरुचि वाले जनों के मन में पूर्व की आश्वस्ति को और गहरी जड़ें मिली। संस्था के प्रति नगर का विश्वास और दृढ़ बना। नगर के हर बौद्धिक को सगर्व यह लगा कि यह संस्था हमारी है।

किसी स्वयंसेवी संगठन के लिए यह बहुत अभिमान की बात हो सकती है कि पचास वर्षों में उसने अपनी छवि को कभी धुंधला नहीं होने दिया, बल्कि चमक में वृद्धि ही की। पचास वर्षों की यात्रा में भाई श्यामजी की भूमिका रेल के इंजन जैसी रही, पर डिब्बों ने भी सहयात्रा में चलने से कभी आना-कानी नहीं की। बस, श्यामजी की खूबी यही है कि उन्होंने डिब्बों की संख्या को सदैव बढ़ाने में ही अपनी ऊर्जा लगाई। हर व्यक्ति को जोड़े रखने की यह कूवत कोई श्यामजी महर्षि से सीखे। बड़े से बड़ा साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्य वे इसीलिए आसानी से कर जाते हैं, क्योंकि उनके पास एक भावनाशील और हरेक कार्य में दक्ष तथा अनुशासित टीम है जो किसी भी कार्य को कर जाने की चुनौती में कभी पीछे नहीं रहती। बाहर से जो भी लोग यहां के आयोजनों में शरीक होने आते हैं वे हमेशा कृतज्ञ-भाव आंखों में बसाए लौटते हैं। संस्था की गतिविधि और कार्यकर्ताओं की मोहक शैली को वे अपने हृदय में उतार कर ले जाते हैं। इस संस्था के लोगों की सदैव यह आकांक्षा रही है कि यह संस्था इस नगर के सांस्कृतिक गौरव को ऊंचा उठाए।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष के इस शुभ अवसर पर पचास वर्षों में इस संस्थान के अग्र-प्राण बने प्रत्येक व्यक्ति को हम आदर के साथ याद करते हैं तथा उनके उदार भाव को नमन करते हैं। परस्पर सहयोग के बिना संस्था तो क्या, राज्य और राष्ट्रों की सत्ताएं भी नहीं चल पातीं। बिना किसी सम्प्राप्ति आकांक्षा के न जाने कितने ही स्नेहीजनों ने इस संस्था के साथ अपना अनुरक्त हृदय जोड़ा है। ऐसे सभी सहृदयों का आभार।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में इस स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया था। स्मारिका को उपयोगी एवं पठनीय बनाने के निमित्त इसमें श्रीडूँगरगढ़ की सभी काव्य-प्रतिभाओं की काव्य-रचनाओं को स्थान दिया गया है, वहीं संस्था से जुड़ी स्मृतियों को ताजा करने वाले कतिपय आलेख एवं चित्र भी पाठकों को रुचिकर प्रतीत होंगे। संस्था से मन-प्राण की तरह जुड़े रहे उन दिवंगत पुण्यात्माओं का भी हमने स्मरण किया है।

इस सुन्दर स्मारिका के प्रकाशन में नगर के सहृदय विज्ञापनदाताओं का भी प्रशंसनीय सहयोग रहा है, इन सभी सुधीजनों का सहयोग हमें और भी निरंतर मिलता रहा है। ऐसे साहित्यानुरागी मित्रों का जितना आभार व्यक्त किया जाए, उतना कम है।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष के इस पुनीत अवसर पर संस्था परिवार यह आकांक्षा करता है कि नगर में भ्रातृत्व एवं सौहार्द उत्पन्न करने वाली सारी भावनाएं साहित्य के माध्यम से और उन्नत भाव से संपोषित होती रहे और आप तथा हमारा साहचर्य अधिक प्रगाढ़ बने। यही कामना है।

◈◊◈

# समिति के पचास वर्ष : एक दृष्टि

**श्याम महर्षि**

सन् 1959-60 की बात होगी। मैं मुंबई से लौटा ही था, सुभाष मिडिल स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगा। विद्यालय में मेरे हमउम्र साथी रामस्वरूप चोटिया (रामगढ़), भंवरलाल पुरोहित (बिग्गा), भंवरलाल खत्री (बीकानेर) भी अध्यापन करते थे। रामस्वरूप चोटिया ने विद्यालय में मुंबई हिन्दी विद्यापीठ एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति वर्धा की हिन्दी परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित किया था। हम लोग उनके साथ उठते-बैठते थे। विद्यालय में प्रधानाध्यापक उन दिनों हनुमानमल पुरोहित हुआ करते थे। परीक्षा केन्द्र को लेकर तत्कालीन व्यवस्थापक और चोटिया के बीच मनमुटाव हो गया। विद्यालय से केन्द्र हटा दिया गया। कहां खोला जाए? फलस्वरूप 14 नवम्बर 1960 में श्री चिड़पड़नाथ की बगीची में कुछ युवा लोग इकट्ठे हुए, जिसमें मेरे अलावा रामस्वरूप चोटिया, भंवरलाल पुरोहित, रामकिशन उपाध्याय भी उसमें उपस्थित हुए और विचार विमर्श के पश्चात् निश्चय किया गया कि कस्बे में हिन्दी परीक्षाओं के केन्द्र के लिए एक स्वतंत्र संस्था का गठन किया जाए।

कस्बे के सामाजिक कार्यकर्ता पं. मुखाराम शर्मा से संस्था की स्थापना मीटिंग की अध्यक्षता हेतु अनुरोध किया तो उन्होंने कहा कि मैं जिस संस्था का अध्यक्ष होता हूं, वह अब तक बंद ही हुई है। 1 जनवरी 1961 को उन्होंने हमारे अनुरोध को स्वीकार किया और श्री हजारीमल बिन्नाणी की हवेली में उनकी अध्यक्षता में एक मीटिंग हुई, जिसमें 11 सदस्यीय कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। संस्था का नाम रखा गया राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़। कार्यकारिणी में प्रमुख रूप से वैद्य श्री नंदलाल महर्षि (अध्यक्ष), गोविन्दराम पुरोहित (उपाध्यक्ष), रामस्वरूप चोटिया (मंत्री), मुझे उपमंत्री, इन्द्रचंद बिन्नाणी संरक्षक, भंवरलाल पुरोहित (कोषाध्यक्ष) तथा देवीदत्त पालीवाल को प्रचार मंत्री का दायित्व सौंपा गया। सर्वप्रथम संस्था का कार्यालय श्री शिवालय बिग्गाबास में स्थापित किया गया। जहां से स्थानान्तरित होकर क्रमश: समय-समय पर चांडकों का ऊपरी कमरा, चिड़पड़नाथजी की बगीची, शोभाचंद बल्देवा का माळिया तथा चांदरतन डागा की हवेली में कार्यरत रहा। 1994 में समिति राष्ट्रीय उच्च मार्ग स्थित अपने निजी भवन में स्थानान्तरित हुई।

1965 में समिति द्वारा संभागीय स्तर के साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् गांधी विद्या मंदिर सरदारशहर के सलाहकार पं. गौरीशंकर आचार्य, प्रदीप शर्मा, माधव शर्मा, एम.ए. मंसूर, मूलचंद पारीक तथा भाषा विभाग राजस्थान जयपुर के उप संचालक श्री शुभकरण कविया प्रमुख थे। 1968 में समिति का राज्य सरकार से विधिवत रजिस्ट्रेशन करवाया गया।

समिति के कार्यकर्ताओं के सतत प्रयत्न से तथा मेरे व्यक्तिगत अनुरोध पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के हिन्दी परामर्श मण्डल में उस समय के संयोजक रामधारीसिंह दिनकर की अनुशंसा पर संस्था को हिन्दी की साहित्यिक

संस्था के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। 7वें दशक में समिति को राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर से साहित्यिक संस्था के रूप में यथा राज्य/शिक्षा विभाग से शोध संस्था के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।

1977 में राजस्थानी तिमाही 'राजस्थली' व 1995 में शोध पत्रिका 'ख्यात' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। जो अनवरत प्रकाशित हो रहा है। दोनों पत्रिकाओं के अनेक विशेषांक चर्चित हुए।

1973 में संस्था का प्रथम प्रकाशन 'काव्यांजली' (काव्य संग्रह) के रूप में हुआ, जिसमें 100 से अधिक रचनाएं थी। संस्था द्वारा अब तक चालीस से अधिक विभिन्न विषयों के ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। सातवें दशक में संस्था द्वारा कस्बे में तीन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का संचालन व हिन्दी संस्कृत आदर्श विद्यालय तथा बच्छराज पाठशाला का संचालन भी किया गया। कालान्तर में इन विद्यालयों में संस्था के अंतर्गत 1981 में राष्ट्रभाषा पुस्तकालय की स्थापना की गई। वर्तमान में समिति परिसर में इसका अलग कक्ष है, जिसमें विभिन्न विषयों की 12 हजार से अधिक पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएं हैं। वाचनालय में 50 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं के पठन की व्यवस्था है।

संस्था के प्रबंधकों को महसूस हुआ कि समिति के अंतर्गत अलग शोधकक्ष हो। 1987 में मरुभूमि शोध संस्थान के नाम से एक स्वतंत्र संस्था का गठन किया गया। मानद शोध परियोजक/शोध अधिकारी के रूप में डॉ. परमेश्वर सोलंकी, मू.च. प्राणेश, डॉ. चेतन स्वामी, श्री मालचंद तिवाड़ी व डॉ. मदन सैनी ने वर्षों तक अपनी सेवाएं दी। संस्था सचिव के रूप में मैंने भादरा व सोनारी (खेजड़ी) की शोध यात्राएं की तथा प्राप्त पुरातत्त्व सामग्री संस्था को उपलब्ध करवाई गई।

अनेक शोध ग्रंथों का सम्पादन व प्रकाशन करवाया गया। श्रीडूँगरगढ़ तहसील क्षेत्र के गांवों से सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त 18वीं व 19वीं शताब्दी के 250 से अधिक हस्तलिखित ग्रंथ, बहियां तथा 300 के लगभग रुक्के-परवाने संग्रह किए गए, जो आज संस्था की अमूल्य धरोहर हैं। संस्था की मुख्य पत्रिका ख्यात जो अब नये रूप में 'जूनी ख्यात' के नाम से प्रकाशित होने लगी है।

1974 में समिति ने सर्वप्रथम सम्मान समारोह का आयोजन किया, जिसमें ख्यातनाम साहित्यकार हरीश भादानी, बैजनाथ पंवार, किशोर कल्पवनाकांत तथा यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' को मानद उपाधि 'साहित्यश्री' से अलंकृत किया गया। गत 37 वर्षों से अनेक राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय साहित्यकारों को सम्मानित किया गया है। गत वर्ष से पत्रकारिता क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा करने वाले पत्रकारों को भी 'पत्रकारिता गौरव' से सम्मानित किया जाना प्रारंभ किया गया है।

समिति के मंच से गत 30 वर्षों से कस्बे के अनेक युवा साहित्यकारों ने अपनी पहचान राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर बनाई। मालचंद तिवाड़ी, डॉ. चेतन स्वामी, डॉ मदन सैनी, सत्यदीप तथा रवि पुरोहित, श्रीभगवान सैनी तथा रतन राहगीर ऐसे नाम हैं, जिन्हें राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए। गत 50 वर्षों में अनेक राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय संगोष्ठियों (सेमिनारों) के आयोजन हुए, जिसमें देश-प्रदेश के अनेक नामी-गिरामी साहित्यकारों, विद्वानों, नेताओं व प्रशासनिक अधिकारीगण ने सान्निध्यता प्रदत्त की।

विगत 50 वर्षों से राष्ट्रीय स्तर के अनेक साहित्यकार, शिक्षाविद्, संस्कृति के विद्वान् तथा प्रशासनिक अधिकारीगण ने संस्था में पदार्पण किया तथा संस्था व संस्था के कार्यकर्ताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

संस्था की प्रगति में साहित्यकारों व संस्कृतिकर्मियों की भूमिका ही उल्लेखनीय रही, बल्कि यह कहूंगा कि साहित्य अनुरागियों का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा। एक ऐसा वर्ग जो संस्था की गतिविधियों में गत तीन दशक से सहयोगी के रूप में निरन्तर जुड़े रहे हैं, जिसमें रामकिशन उपाध्याय, बजरंग शर्मा, शिवप्रसाद सिखवाल, नारायण प्रसाद शर्मा, भरतसिंह राठौड़, विजयराज सेठिया, भीखमचंद पुगलिया, भंवर भोजक, श्रीकृष्ण खण्डेलवाल, तुलसीराम चौरड़िया, रामचन्द्र राठी तथा हुलास वर्मा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

स्थानीय विधायक श्री मंगलाराम गोदारा ने संस्था परिसर में पृथक् पुस्तकालय कक्ष का निर्माण विधायक कोटे से करवाया। उन्हें जितना धन्यवाद दें, कम है। वर्तमान में उनके द्वारा दो लाख रुपये एक कमरे हेतु और स्वीकृत किये गये हैं। इनका पुनः आभार। ऐसे साथियों का सहयोग भी कम उल्लेखनीय नहीं है, जो अब इस संसार में नहीं हैं, परन्तु ये लोग वर्षों संस्था के साथ समर्पित भावना से जुड़े रहे। नंदलाल महर्षि, हनुमान प्रसाद उपाध्याय, हनुमानमल पुरोहित, गुलशन बोथरा, चांदरतन डागा, भंवरलाल पुरोहित, त्रिलोक शर्मा, इन्द्रचंद बिन्नाणी तथा देवीदत्त पालीवाल के नाम उल्लेखनीय है।

मैं कुछ ऐसे लोगों के नामों का उल्लेख भी करना चाहूंगा, जिनके बिना राष्ट्रीय उच्च मार्ग नं. 11 पर संस्था का विशाल भवन बनना संभव नहीं था। एल.सी. बिहानी एडवोकेट, सीताराम मोहता सी.ए., बंशीलाल बाहेती, कैलाश नारायण मोहता, विजयसिंह पारख, सुमेरमल पुगलिया, नथमल शर्मा, पुष्पराज पुगलिया, बजरंग झेडू, शिवप्रसाद सिखवाल, चांदरतन बल्देवा तथा धर्मचंद पुगलिया का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

अर्थ सहयोग करने वालों की एक लम्बी सूची है। उन सभी दानदाताओं, सहयोगियों का हार्दिक आभार, साधुवाद।

◈◊◈

# राजस्थान सरकार

## रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र

## क्रमांक-148, 1967-68

यह प्रमाणित किया जाता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ जिला चूरू (राज.) संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 अधिनियम नं. 28, 1958 के अंतर्गत रजिस्ट्रीकरण आज किया गया।

यह प्रमाण-पत्र मेरे हस्ताक्षरों और कार्यालय की सील से आज दिनांक बारह माह फरवरी सन् एक हजार नौ सौ अड़सठ को जयपुर में दिया गया।

**रजिस्ट्रार संस्थाएं**

**राजस्थान, जयपुर**

# कार्यालय निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

## कार्यालय आदेश

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ जिला चूरू की शोध संस्था को स्थाई मान्यता दिनांक 1.7.88 से प्रदान की जाती है। विभागीय नियमों की पालना न करने पर स्थाई मान्यता रद्द की जा सकती है।

**(ललित के. पंवार)**
**निदेशक**
**प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा**
**राजस्थान, बीकानेर**

क्रमांक-शिविरा/प्राथ/सी/19483/267/84-88 दिनांक 7.10.88 प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है–

1. उपनिदेशक (पुरुष), शिक्षा विभाग, चूरू।
2. जिला शिक्षा अधिकारी (छात्र संस्थाएं), चूरू।
3. मंत्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ जिला चूरू।
4. अनुभाग अधिकारी, अनुदान अनुभाग, शिक्षा निदेशालय, राज. बीकानेर।
5. रक्षित पंजिका।

**संयुक्त निदेशक (प्राथमिक)**
**प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा**
**राजस्थान, बीकानेर**

# साहित्यिक संस्था के रूप में मान्यता

National Akedemi, National Academy of Letters
Rabindra Bhawan
NEW DELHI
Telegram : Sahityakar, Phone 386247

सा.अ. 691/2468 दिनांक :- 29 जनवरी, 1971

मंत्री
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
श्रीडूँगरगढ़ (राजस्थान)

प्रिय महोदय,

30 मई 1969 के हमारे पत्र को देखने की कृपा करें। अब हमें आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि साहित्य अकादमी के हिन्दी परामर्श मण्डल एवं कार्यकारी मंडल ने आपको हिन्दी की साहित्यिक संस्था के रूप में मान्यता देने का निर्णय कर लिया है। अलग डाक से हम आपको अपने वार्षिक विवरण की एक प्रति भेज रहे हैं, जिसमें आपको अकादमी की गतिविधियों का परिचय मिल जाएगा। निवेदन है कि आप भी समय-समय पर अपनी संस्था की गतिविधियों से हमें परिचित कराते रहें।

शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय
**(डॉ. भारतभूषण अग्रवाल)**
सहायक मंत्री

# सम्बद्धता प्रमाण-पत्र

## राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) उदयपुर, राजस्थान
## (राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित 1958 ई.)

क्र. 3070

मंत्री
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
श्रीडूँगरगढ़ (राजस्थान)

**विषय : संस्था सम्बद्धता**

महोदय,

इस कार्यालय के पूर्व प्रेषित पत्र क्रमांक 2935 दिनांक 27.7.83 के क्रम में निवेदन है कि अध्यक्षीय आदेशानुसार रा.भा.हि.प्र. समिति श्रीडूँगरगढ़ को सरस्वती सभा के अनुमोदन की प्रत्याशा में सम्बद्धता प्रदान की जाती है।

कृपया पत्र प्राप्ति सूचना भेजें।

धन्यवाद ।

**सचिव**
**राजस्थान साहित्य अकादमी**
**राजस्थान**

## सम्बद्धता प्रमाण-पत्र

पत्रांक-328/85
दिनांक-25.7.77
नागरी प्रचारिणी सभा
वाराणसी

श्री श्याम महर्षि
मंत्री
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
श्रीडूँगरगढ़ (राजस्थान)

प्रिय महोदय,

आपका दिनांक 6.6.77 संख्यक पत्र सभा की 2.7.77 की प्रबंध समिति में रखा गया।

इसके संबंध में निम्नलिखित निश्चय किया है–

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़, चूरू (राजस्थान) को सूचित किया जाय कि यत: उनकी संस्था इस सभा से सम्बद्ध है, अत: पत्रोक्त समस्त कार्यवाही वे अपनी ओर से भलीभांति कर सकते हैं, इसके लिए सभा की वहां शाखा खोलना आवश्यक नहीं प्रतीत होता।

**भवदीय**
**सहायक मंत्री**

## संदर्भ केन्द्र की स्वीकृति

पत्रांक-702
दिनांक-13.9.84

### राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

श्रीडूँगरगढ़ में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति रै तहत थापित 'राजस्थानी साहित्य संस्कृति पीठ' एक शुभ चरण है, अपवाद रूपेण संस्था स्तर 14 सितम्बर, 84 रै दिन हिन्दी दिवस रै अवसर पर संदर्भित ग्रंथ अर पत्रिका सैट समर्पित करता थकां अकादमी कानी सूं 'राजस्थानी संदर्भ केन्द्र' री सरुआत श्रीगणेश करता थकां हमा भरोसो राखां हां।

**सचिव**
**राजस्थानी भाषा साहित्य एवम्**
**संस्कृति अकादमी, बीकानेर**

**राजस्थान सरकार**

# भाषा एवं पुस्तकालय विभाग

**डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा संकुल परिसर, ब्लॉक संख्या-8**

**जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर**

क्रमांक : प.2(39)निभापुवि/मान्यता/05/ दिनांक :-

## आदेश

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ द्वारा संचालित राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) को राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान की समतुल्य/गैर समतुल्य योजनाओं एवं केन्द्रीय योजनाओं के तहत सहायता/अनुदान आदि के लिए अस्थाई मान्यता प्रदान की जाती है। इस मान्यता के अंतर्गत संस्था राज्य सरकार से किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता/अनुदान आदि प्राप्त करने के लिए पात्र नहीं होगी।

**(डॉ. अमरसिंह राठौड़)**
**शासन उप सचिव**

क्रमांक : प.2(39)निभापुवि/मान्यता/05/8409-12 दिनांक :- 26/05/2005

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु–

1. निदेशक, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग।
2. सचिव, राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)।
3. निदेशक, राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कोलकाता।
4. रक्षित पत्रावली।

**शासन उप सचिव**

# मंगल कामनाएं

अब बुझा दीजिये हर शमा मेरी महफिल की
उनके आने की ख़बर रोशनी को काफी है।

**—विक्की नागर**

# श्रीडूँगरगढ़ के काव्य गौरव

त्रिलोक शर्मा
मालीराम शर्मा
श्याम महर्षि
नंद भारद्वाज
कमला भादानी
सतीश कुमार
चंदनमल 'चांद'
गुलशन बोथरा
चेतन स्वामी
मदन सैनी
पृथ्वीराज व्यास
सत्यदीप
रतन 'राहगीर'
भोजराज सोलंकी
रवि पुरोहित
श्रीभगवान सैनी
पुष्पा सिंघी
पूनम गुजरानी
इन्द्र भादानी
सुमेरमल पुगलिया
मणिकांत वर्मा (सोनी)

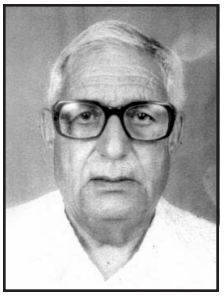

**त्रिलोक शर्मा**

कामरेड त्रिलोक शर्मा की श्रीडूँगरगढ़ के राजनीतिक क्षेत्र में गहरी पैठ थी। वे बुलंद गले के धनी और गरीब मजदूर किसान के हितैषी थे। नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। फुटकर हिन्दी, राजस्थानी की कविताएं यत्र-तत्र प्रकाशित हुईं। संकलन नहीं आ पाया। पत्रकारिता से भी आपका सम्पर्क रहा। एक पाक्षिक अखबार 'संयुक्त संघर्ष' नाम से प्रकाशित किया। पत्रकारिता के इतिहास में तहसील के प्रथम अखबार राजस्थान रिपोर्टर के संस्थापक सम्पादक रहे।

# हिलमिल चालो

हिलमिल चालो रे भाई
चालै चाल कुचाल जमानो
पग-पग ऊपर खाई,
हिलमिल चालो रे भाई

झूठा सपनां में मत भटको
सीधी गैल पकड़ल्यो
प्रेम-प्रीत री बात मिलै तो
मन री गांठ जकड़ल्यो

आपां रो दुख दरद सरीखो
एक पंथ रा राही
रळमिळ चाल्यां सगळां रै बस
दूर हुवै कठिनाई
हिलमिल चालो रे भाई

रात अंधेरी आंधी चालै
मारग में ना सूझै
कायर पाछो पग दे भागै
हिम्मत हाथे जूझै

अणजाणो मारग में चालै
अलबेली तरुणाई
दुख-दरदां री रात कटैली
जागैली अरुणाई
हिलमिल चालो रे भाई

ऊंचै धोरै बजै बांसरी
धरती अंगड़ासी रे
कमतरिया किरसाणा जमीं में
अन-धन निपजासी रे
आज अंधेरै री छाती पर
सोनकिरण मुसकाई
कोढ़-पाप मिटसी धरती रो
सुख री सांस समाई
हिलमिल चालो रे भाई

◈◊◈

**मालीराम शर्मा**

श्रीडूँगरगढ़ तहसील के सत्तासर गांव में जन्म। कविताएं और व्यंग्य विधा में अधिकांश लेखन। शिविरा में लिखे लेख भी चर्चित हुए। आत्मकथा–'ओ सत्तासर' ने बड़ी प्रसिद्धि पाई। स्तम्भ लेखक भी रहे। कई मान-सम्मान प्राप्त। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के सभापति रहे। शिक्षा विभाग में उपनिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए।

# त्रिशंकु की परम्परा

मैं आज हूँ
कल का बेटा
इतिहास का धनी
त्रिशंकु का वंशधर
अन्तरिक्ष का पहला मानव
जो उड़ गया पंचतत्त्व के कैपसूल में
पंचशील के सूट में
जब लगा एक धक्का
विश्वामित्र के लाँचिंग पैड से
पहुंच गया अन्तरिक्ष में
धकेलने लगी धरती
दुतकारने लगी जन्नत
इसी धक्कम पेल में
शीत युद्ध में
दो ताकतों के झगड़े में
चपेट में, लपेट में
लटक गया अधर में
निरावलम्ब
शून्य में शीर्षासन किये हुए
घूमता हुआ
पेंडुलुम सा
कभी दायें
कभी बायें
तरक रिश्ता
जहाँ से जन्नत से
यह है मेरा ऐतिहासिक परिवेश
मैं आज हूं, कल का बेटा
त्रिशंकु का वंशधर!

◈◊◈

**श्याम महर्षि**

बाल्यकाल से ही लेखन, सम्पादन और संस्था संचालन की अभिरुचि। पचास वर्षों से राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का संचालन एवं सैकड़ों साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन। शोध-अनुसंधान के कार्यों में भी सक्रियता। अब तक पचीस पुस्तकें प्रकाशित, अनेक पुस्तकें तथा 'राजस्थली' तिमाही का सम्पादन तथा 'जूनी ख्यात' शोध पत्रिका के प्रबंध सम्पादक।

# खेजड़ा

तुम्हारी पहचान
नई नहीं है
महाभारत-काल में
पांडवों ने छिपाए थे-
अपने अस्त्र-शस्त्र
तुम्हारे खोखलेपन में!

परिचित हैं हम,
सदियों से रहते आए हैं....
साँप-गोह और लक्ष्मी के वाहन
तुम्हारी खोह में !

सूखी धरती पर
अविचल खड़े हो तुम...
तुम्हीं ने सिखाया है कि
बिना पानी भी जिंदा रहा जा सकता है,
सूखे में हरियाली के पर्याय हो तुम !

ईंधन, सब्जी, पशु-चारा के
पूरक तुम हो !
तुम ही इस मरुधर की धड़कन हो
जीवन हो !
तुम प्रकाश हो !

# गृहिणी का रुक्का

बिन कहे ही
पकड़ा दिया है रुक्का
गृहिणी ने
इस बार !

मुन्ने की फीस
बबलू की चप्पल
और बेबी के फ्राक की कीमत
चुकता करनी है
इस बार !

माँ जी का घाघरा,
ननद बाई का स्वेटर,
पापा जी के लिए मेथी
बनानी है
इस बार !

दूध का हिसाब,
मकान किराया
और बिजली का बकाया
चुकाना है
इस बार !

मेरी ओढ़नी तो न सही
पर बिटिया को
ससुराल से
लाना है
इस बार !

◈◊◈

**नंद भारद्वाज**

श्रीडूँगरगढ़ तहसील के बिग्गा गांव से संबंध। सन् 1969 से लगातार हिन्दी राजस्थानी की विभिन्न विधाओं में लेखन। अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त। एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। दूरदर्शन निदेशक पद से सेवानिवृत्त। जयपुर में निवास।

# अपना घर

ईंट-गारे की पक्की चहार-दीवारी
और लौह-द्वार से बन्द
इस कोठी के पिछवाड़े
रहते हुए किराये के कोने में
अक्सर याद आ जाया करता है
रेगिस्तान के गुमनाम हलके में
बरसों पीछे छूट गया वह अपना घर
घर के खुले अहाते में
बारिश से भीगी रेत को देते हुए
अपना मनचाहा आकार
हम अक्सर बनाया करते थे बचपन में
उस घर के भीतर निरापद अपना घर
बीच आंगन में खुलते गोल आसरों के द्वार
आयताकार ओरे, तिकोनी ढलवाँ साळ
अनाज की कोठी, बुखारी, गायों की गोर
बछड़ों को शीत-ताप और बारिश से
बचाये रखने की पुख्ता ठौर!

न जाने क्यों
ऐसा घर बनाते हुए
अक्सर भूल जाया करते थे
घर को घेर कर रखने वाली
वह चहार-दीवारी

◈◊◈

**कमला भादानी**

श्रीडूँगरगढ़ के प्रतिष्ठित भादानी (ओसवाल) परिवार की बहू। हिन्दी एवं राजस्थानी में काव्य लेखन। राजस्थानी में कई चर्चित कहानियां लिखीं। तेरापंथ धर्म संघ की महिला संस्थाओं में सक्रिय पदाधिकारी रही। आचार्य श्री तुलसी से आशीर्वाद प्राप्त।

# महावीर-वंदना

वज्र समान कठोर, घोर कष्टों में अटल रहे अविचल
पुष्प समान सुकोमल, झरता करुणा-स्रोत विमल अविरल।

शीतल इतने, देख उन्हें शीतल हो जाए हृदय, नयन
उष्ण प्रबल इतने भीषण कर्मों का क्षण में हरे दहन।

एक जून की रोटी जिसके पास नहीं वैसा निर्धन
महाधनी ऐसा जग में है, कहीं दूसरा कोई जन?

कितना मंद! युक्त अस्तित्व, रहे फिर भी अनजान अव्यक्त
कितना तेज! स्मरण से भागे आत्म-कलुष बनकर परित्यक्त।

तुच्छ समझ अपने को न्योछावर कर छोड़ दिया असहाय
उससे बढ़ कर कौन महत्? जो सब जीवों का शरण-सहाय।

कैसा रुक्ष! हृदय में मोहनाम की चीज नहीं जिसके
कितना स्निग्ध! हृदय लुट जाते लाखों चरणों में उसके।

श्रद्धासिक्त विनत हृदयाम्बुज, विकसित है कर उनका ध्यान
स्मरण, शरण, अनुसरण उन्हीं का करे चेतना को अम्लान।

◈◊◈

**सतीश कुमार**

कस्बा श्रीडूँगरगढ़ के ओसवाल परिवार में जन्मे सतीश कुमार प्रखर वक्ता व सामाजिक परिवर्तन के हामी रहे हैं। तेरापंथ धर्म के आचार्यश्री के सान्निध्य में कुछ वर्ष संत रहे। बाद में साधुत्व त्याग कर गृहस्थी हो गये। वाराणसी में रह कर उन्होंने आचार पत्रिका का सम्पादन किया। उन्होंने दुनिया की बिना पैसे यात्रा की। मन से भावुक कवि रहे हैं। वर्तमान में एक अंग्रेजी पत्रिका के सम्पादक हैं।

# समर्पण

आज मन की कल्पना ने
गगन में दीपक जलाया,
स्नेह जीवन का उंडेला
बीन ने संगीत पाया,
वेदनाओं का कुहासा
दीप ने जल कर मिटाया
रूँधे कंठों तब किसी ने
समर्पण का गीत गाया,
भावनाओं के समर्पण
में भरा आनन्द मन का,
बिना अर्पण किए जीवन
विहग है केवल विजन का,

आज जीवन में समर्पण का नया आधार ढूंढ़ा
पुरुष भी तो है अधूरा और नारी भी अधूरी,
आज दोनों ने धरा की पूर्णता का द्वार ढूंढ़ा।
है रहस्य विकास का यह जिन्दगी का हो समर्पण,
उस समर्पण के सुरों ने वीणा का शृंगार ढूंढ़ा।
पुरुष नारी की इकाई सृष्टि की जड़ में छुपी है,
आज दोनों ने हृदय का मधुरतम उपहार ढूंढ़ा।
एक आकर्षण दृगों का पूर्ण जीवन बींध देता,
उस बिंधे मन में अचानक आज पहला प्यार ढूंढ़ा।।

◈◊◈

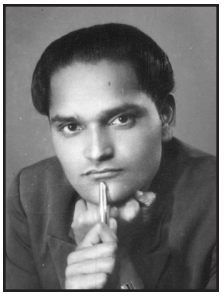

**चंदनमल 'चांद'**

श्रीडूँगरगढ़ में जन्मे चंदनमल 'चांद' गंभीर और चिन्तनशील व्यक्तित्व के धनी थे। आप कविता और नाटक विधा के सफल लेखक थे। उनके 'जागा हिन्दुस्तान' नाटक, सुहागिन (उपन्यास), हाथी के दांत (नाटक) तथा धरती के गीत पुस्तकें चर्चित रही। वे वर्षों जैन महा मण्डल के पदाधिकारी भी रहे।

# अजाने अर्थ

आहिस्ते बोलो, द्वार न थपकाओ
गम हारा थका अभी सोया है।
वादों की फसल उजाड़ो मत,
यादों का खेत नया बोया है।।
सांसों ने सींचा बिरवा अपनी चाहों से,
पीड़ा ने पथ ढूंढ़ा, नयनों की राहों से।
नयनों की गहराई में उतरो मत,
कोई श्यामल चेहरा उजला धोया है।।
जंजीर जड़ो मत चेतनता चौंकेगी,
सांकल सुधियों की हर क्षण टोकेगी।
भावों का तूफान मचल जाने दो,
खामोशी का बोझ बहुत ढोया है।।
शब्द अधूरे अर्थ अजाने से लगते हैं,
अर्थों के सौदागर भावों को ठगते हैं।
शब्द-जाल की उलझन में फंसना मत,
शब्दों ने पाया कम, ज्यादा खोया है।।
सपनों का संसार कल्पना में जीता है
प्यार धर्म की नींव, प्यार गीता है।
दर्द भुलाने का अभ्यास करो मत,
दर्दीला मन एकाकी रोया है।।

◈◊◈

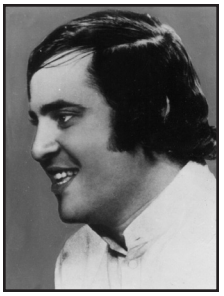

**गुलशन बोथरा**

गुलशन बोथरा का जन्म श्रीडूँगरगढ़ में हुआ, किन्तु उनका कार्य क्षेत्र धुबड़ी था। बहुत छोटी वय में आपका देहावसान हो गया। दो काव्य पुस्तकें तथा एक उपन्यास प्रकाश में आया। आपकी रुचि संगीत में भी थी। स्वयं भी अच्छे गले के धनी थे।

# छोटे होते हैं बड़े

छोटों को
छोटा न समझिये
सूई बहुत पतली होती है,
उसके सिर पर का
सुराख
बहुत हुआ करता है छोटा
पर तुम देखो
उसके करतब
सुबह से सांझ
सीधे कपड़ों को
कतर-ब्योंत
आकारों का
ढेर लगाती
नंगे तन ढांपा करती है

इस जग की
छोटी सी चीज
पर करतब की
शक्ति प्रबल है
भीमकाय को
हरा दिया करती है
आनन-फानन
इसलिये
तुच्छ मत समझो
तुम छोटों को
जो छोटे हैं
उनको
उनकी क्षमता का आदर दो
उनके कर्म
और परिणाम को
अपने मन का आदर दो

जो छोटे हैं
उन्हें सहेजे रखो
जाने कब आ जाए काम
छोटी सी रह गई
कमी के कारण
ठहरे रहें
बड़े बड़े काम
सूई सरीखी
जाने कितनी
छोटी-छोटी सी चीजों से
भरी हुई है
इतनी बड़ी तुम्हारी दुनिया

जितने बड़े हुए
इस जग में
छोटे से ही बड़े हुए हैं
इसलिये सुनो
दूर-निकट
या आस-पास
जितने हैं छोटे
उन सबको अपनाओ
अपना बड़प्पन सही बनाओ

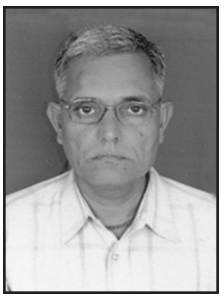

**चेतन स्वामी**

जन्म श्रीडूँगरगढ़ में। कार-मजूरी के अनेक कार्यों के बाद वर्तमान में अध्यापकी। दस-बारह किताबें प्रकाशित। कई पत्रिकाओं का भी सम्पादन। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति से बाल्यकाल से ही सक्रिय जुड़ाव। कुछ पुरस्कार, सम्मान भी मिले। वर्तमान में सीकर में अध्यापकी। मो. 9461037562

# मैं घुना हूं

हां, मैं घुना हूं।
जानता हूं भली भांति
घुना होना गाली है,
घुने को देखा जाता है हेय आंख से।

तुम्हें क्या पता?
कितनी दफा मैंने
परिधि से बाहर
पांव निकालने की-की है कोशिशें,
पर भय, संत्रास, बेबसी से
फिर समेट लेता उन्हें अपने भीतर
देखता चोर कनखियों से
किसी ने यह दुस्साहस करते
देख तो नहीं लिया है?
मुझे आश्वस्त और सहज होने
में ही बड़ा टेम लगता

तुम समझते हो मैं घुना हूं?
मैं घुना ही सही
हूं तो सही?

कोई चलते में ही शहीद करदे
तो मेरा कोई इतिहास थोड़े लिखा जाएगा
कितने घुनों को देखा है मैंने
सस्ते में मरते
मेरे जैसे कितनों ने शोखियां बिखेरते
कहा था-बेवकूफ कुछ कर भी नहीं पाया
खामखाह जान गंवा दी।
हां, मैं घुनों का लोहा मानता हूं
घुने जान नहीं गंवाते
घुने रिसते हैं–
हर वक्त उनमें कुछ टीसता है
पर मरने से तो टीस भली
घुनों के लिए नहीं रीस भली।

घुनों को रहती है प्रतीक्षा
किसी चमत्कार की,
वे होते हैं आशावादी
कल कोई अवतरेगा
पोंछ-पांछ-झाड़-झूड़ देगा जालों को

हम क्यूं नजरों में चढ़ें
फोड़े क्यूं विषैले फालों को

करे कोई क्रांति-जिसे करनी हो
सब करनी का फल पाते हैं
क्रांति कहां है, कम अगन से
कई बेवकूफ उसमें जल जाते हैं

ना, खिड़की से झांकना ही है ठीक
दरवाजा खोल कर बाहर क्यूं निकलें
गुजर जाएंगे हल्ला करते लोग
अंदर जो हैं उसी से मौज मनाएं
गरियायें-जो मर्जी गरियायें
हां हम घुने हैं
हमारी भी है कौम-संस्कृति
हम हैं बहुमत में
बहुमत को कौन करेगा-इन्कार
तुम हल्लेबाजों पर हम कब नहीं पड़े भारी
फिर तुम्हारी और हमारी
कैसी यारी?

◈◊◈

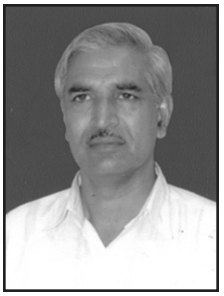

**मदन सैनी**

श्रीडूँगरगढ़ के कालूबास में जन्मे। हिन्दी-राजस्थानी की लगभग सभी विधाओं में लेखन। अब तक आठ पुस्तकें प्रकाशित। सम्पादन कार्य भी किया। भरपूर मान-सम्मान प्राप्त किया। राजस्थानी राम काव्य पर शोधकार्य किया। रामपुरिया महाविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक रहे–अब सरकारी सेवा में। आध्यात्मिक लेखन में भी गहन रुचि।

# बोल जंबूरे

टोपी चिलक रही है
ऊपर-
जनता तड़प रही है
भू पर,
तुच्छ झोंपड़ी
के सीने पर-
इठलाते हैं
महल-कंगूरे !
बोल जंबूरे...

बड़े-बड़े यहां
मगरमच्छ हैं
सीधे-सच्चे
साफ-स्वच्छ हैं,
निगल रहे
भोली मच्छियों को
बिना दांत ही
छप्पन-छुर्रे !
बोल जंबूरे...

पूंजी की खातिर
बाजीगर
डम-डम डमरु बजा रहा है–
पूंज की खातिर ही मानव
दानवता को
सजा रहा है,
इसके आगे
सब फीके हैं
चंग-मृदंग-धमाल-तंबूरे !
बोल जंबूरे....

महिला वर्ष में
महिला रोई
बालवर्ष को
बालक झूरें-
विकल हुए विकलांग करें क्या?
सीताएं सब
सत्त बिसूरे!
बोल जंबूरे...

मंडराते हैं
बादल काले,
महंगाई-जनसंख्या वाले
तांडव करने
आते हैं शिव
पीकर-खाकर
भांग-धतूरे !
बोल जंबूरे...

अब जन्मेंगे
भूख मरेंगे
बाग-बगीचे
सूख मरेंगे,
किए कर्म ही
रंग लाएंगे
भाई भूरे
लेखे पूरे
बोल जंबूरे!
हिप्प-हिप्प हुर्रे !!

◈◊◈

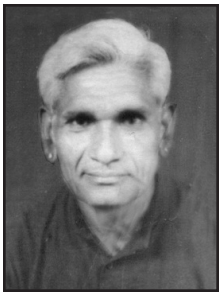

**पृथ्वीराज व्यास**

श्रीडूँगरगढ़ में जन्म। वर्षों कर्मचारी आंदोलनों में सक्रिय। हिन्दी अध्यापन के पश्चात् अब सेवानिवृत्त। वर्तमान में एक निजी शिक्षण संस्था में सेवारत तथा साहित्य और समाज सेवा में रुचि।

# बगावत

आये दिन जनता लुटती है, पर सुनती जब सरकार नहीं
उस अंधी बहरी, हुकूमत को, शासन का कोई अधिकार नहीं
इक तन पर सोने के, तार खिंचे, इक तन पर सूत का तार नहीं
मैं तभी बगावत करता हूं, यह न्याय मुझे स्वीकार नहीं,
यह न्याय मुझे स्वीकार नहीं
सोने की चिड़िया लुट बैठी पर गेण्डे सुनहरे सींगों के हैं
हल की सूरत तो नहीं देखी पर मालिक हजारों बीघों के हैं
इक हल संग हस्ती मिटा रहा, दिन रात पसीना बहा रहा
पर बीघे का हकदार नहीं। मैं तभी बगावत....
खेतों की धरती सिमट गई, बन गये भवन कुछ मनमानी
पूरे एकड़ में बनी हवेली, पर रहने वाले दो ही प्राणी
इक दस हाथ का घर और दस रहते पर क्या करते
सो सकते पाँव पसार नहीं। मैं तभी बगावत....
कुछ के कुत्तों को कतली है, कुछ को रोटी का टूक नहीं
कोई दिन में ड्रेस तीन बदले, कहीं धोती का भी सलूक नहीं
अम्बर के तारे गिनते हैं, वे भूखे-नंगे सोते हैं
बिस्तर का कारोबार नहीं। मैं तभी बगावत....
वो दिन में बीस दफा चरता, इसको रोटी का कहां खयाल
वो चर्बी के मारे परेशान, यह कोरे हाड का है कंकाल
सर्दी-गर्मी-वर्षा सहता, आहें भरता
चमड़ी का भी आधार नहीं। मैं तभी बगावत....
इक सुरा-साकी के प्याले संग, महफिल में मस्ती छान रहा
इक धूप-घाम-आंधी प्रचण्ड, वर्षा में उगाता धान रहा
वो दर्द दिल का मारा है, दूजा अखण्ड कंवारा है
उसका कोई दिलदार नहीं। मैं तभी बगावत....
ऊपर अम्बर, नीचे धरती, इन्सान सड़क पर सोता है
न जाने कितना अनाचार, बंगलों के भीतर होता है
ए बंगले वालो! नीचे देखो, रहती है वहां आधी जनता
जहां रहती तुम्हार कार नहीं। मैं तभी बगावत....
पूंजी-पतियों के टैक्स माफ, बकाया करोड़ों के कर हैं
गरीब भाड़ में जाय मगर, इनको तो कुर्सी का डर है
मैं साफ बताता, हूं मतदाता, अब पूरा खुल गया सबका खाता
कुछ कहने की दरकार नहीं। मैं तभी बगावत....

◈◊◈

**सत्यदीप**

प्रगतिशील विचारधारा के प्रखर प्रवक्ता के रूप में सामाजिक सरोकारों से सदैव प्रतिबद्ध। संस्था से साहित्यिक जुड़ाव 1978 से। शुरू से ही समर्पित और सक्रिय कार्यकर्ता। अब तक दो काव्य कृतियां प्रकाशित, तीन काव्य संकलन शीघ्र प्रकाश्य। कुशल मंच संचालन एवं अनेक सम्मान प्राप्त।

# सड़क पर सुबह

वैसे तो
सड़क सो भी
नहीं पाती है
शहर की।
बहाना भर
कर पाती है
नींद का।
किनारे के
पेड़ अपने
अलसाए तने
से फेंक देते
हैं कुछेक
पीले पड़े पत्ते
किरणों से
कुछ पहले
सड़क सोचती है
हो गई सुबह
दूधिये की
साइकिल
खड़खड़ाती
गुजर जाती है
किसी पत्थर से
टकरा कर
तो टीसतें बदन से
थरथराती है सड़क
अल सुबह
अपने बदन
को फिर से
जगाती है
आधी अधूरी नींद
उनींदी आंखों
को पोंछ
धौंकनी से
सिकुड़ती/फैलती
है गाड़ियों की
चिल्लपों के बीच
भागती जिन्दगी
के बोझ ढोने
की तैयारी में/हो जाती है
न जाने कब सड़क पर
सुबह

◈◊◈

**रतन 'राहगीर'**

श्रीडूँगरगढ़ के जाए जन्मे रतन राहगीर शांत प्रकृति के व्यक्ति हैं। आपकी हिन्दी, सिंधी एवं राजस्थानी में कई पुस्तकें प्रकाशित हुई। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद लेखन एवं समाजसेवा के कार्य में जुटे हुए हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति से भी आपका सदैव नाता रहा।

# समाज रै दरपण में

सतरंज रो खेल
प्यादा अेक खांनी
बीजा घोड़ा दौड़ै
समाज रै दरपण में।
दरपण रै कोणै में
मोटा-मोटा आखरां में
नांव लिखा र
दानी कुवाणै री भूख
कियां मिट सकै?
मोटै नांव नै घेर्यां
खून-पसैवां रा नांव
पळपळाट करता
समाज रै दरपण में
आपरो न्यारो-निरवाळो
उणियारो सामै ल्यावै
फैरूं बी
समाज रे कारज में
कमती दाम दैय नै
आपरै नांव रो ठप्पो
लगा र कियां भूख मिटा सकां?
छोटा-छोटा आखरां में
लिख्योड़ा नांव पळपळावै
पळकै बांरो भाटो
अर नांव रै भूखा नै
समाज रो दरपण दिखावै।
मोटा-मोटा आखरां सूं
लिख्योड़ो भाटो चुगली करै
बांकी जका पंगत सूं हट'र
नांव रो भाटो लगावै मन चावै बी ठौड़
म्है बी सोच्यो
समाज रै दरपण रै बिचाळै
म्हारो नांव लिखायनै इतिहास बणूं
पण समाज रै दरपण में
उणियारो देखनै म्हैं फैरूं सोच्यो
सन् बासठ में
बूंट पॉलिस कर हजारां रिपिया
प्रधानमंत्री रक्षा कोस में
जमा करा र सेवा सूं
आपरी जिग्यां
समाज रै दरपण में बणाई
उण जिस्यां री पंगत में
म्हैं कियां आ सकूं?
समाज रो दरपण
नीं बां री राखै, नीं थांरी राखै
नीं राखै म्हारी
राख सी तो इंसान री
नेकियत नै राख सी
सेवा भाव जाग्याऊं ई
समाज रो दरपण मुंडै बोलसी।

◈◊◈

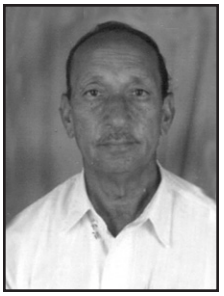

**भोजराज सोलंकी**

जन्म श्रीडूँगरगढ़ में। सुशान्त प्रकृति के मनमौजी कवि। अभी कुछ ही रचनाएं की है, जिन्हें स्थानीय कवि संगोष्ठियों में प्रस्तुत करते हैं। कस्बे की एक बैंक में कार्यरत रहे हैं।

# गुरु

गुरु प्रकाश पुञ्ज
मिटाता है, शिष्य के
अज्ञान रूपी, अंधकार को
अपनी ज्ञान की तरंगों से
जैसे, कुम्हार मिट्टी के
लोन्दे को कूट-पीट कर
चाक पर चक्कर लगा
बर्तन के रूप में
नया रूप देता है
वैसे गुरु, अपनी प्रयोगशाला की
चाक पर चढ़ा, मन्द बुद्धि शिष्य का
आकार-प्रकार गढ़ता है
और बदल देता है
उसके जीवन को
फिर, ढोता है, उस ऊँचाई तक
अपने ज्ञान के बल से
जिसकी शिष्य को जीवन में
सफलता हासिल करने के लिए
है जरूरी।

◈◊◈

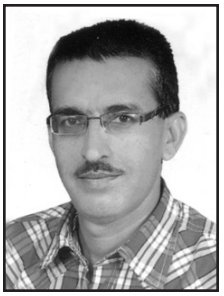


**रवि पुरोहित**

रवि पुरोहित का जन्म श्रीडूँगरगढ़ में हुआ। आदर्श शिक्षक पं. भीष्मदेव शर्मा के पौत्र। बाल्यकाल से साहित्य की ओर रुझान। अब तक छह पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादमी, उदयपुर की कार्यकारिणी में भी रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के सक्रिय कार्यकर्ता एवं 'राजस्थली' त्रैमासिक के प्रबंध सम्पादक। वर्तमान में बीकानेर में राजकीय सेवा में।


# रधिया

मर-मर कर
जीने का उपक्रम करती है रधिया,
तगारी के सम्बल से
आठ जनों की भूख को
आश्वस्त करती है
वह !

बल पड़ती रीढ़ की मालकिन/
शर्म-शाइस्तगी से
सजाती है
गिट्टियां
तरल कोलतार में
मरणासन्न रधिया
तन्मयता से !

संवेदनायें
मर चुकी है सड़क की
पर कोलतार की भूख नहीं मिटी !

लाचारगी
पसरी रहती है आस-पास,
भूखहा अंधियारा
गहराता रहता है
आंखों के आगे...
गिरा देना चाहता है
जड़-प्राय: रधिया को
पर मैले-कुचैले नंग-धड़ंग बच्चे
दारूखोर पति के हाथों पिटते
और भूख से त्रस्त हो रिरियाते
तैर जाते हैं
चुंधियाते कोर्णियां में/
थाम लेते हैं कलई

परिवार-कल्याण का मुद्दा
लगा देता है उसे
दूने उत्साह से
तगारी उठाने में

ठेकेदार
ताकता रहता है टुकुर-टुकुर
ठण्डे जिस्म की
मैली पिण्डुलियों को
और महसूसता रहता है
इनकी आग !

रधिया
अनजान बनी लगी रहती है
धियाड़ी पकाने में

प्रतिरोध का हश्र
मजूरी से हटना ही होगा
वह जानती है
दुनियावी उसूल
इसीलिए मजदूरी के वक्त
औरत नहीं होती
सिर्फ मजदूरन होती है
जमाने की रधिया !

◈◊◈

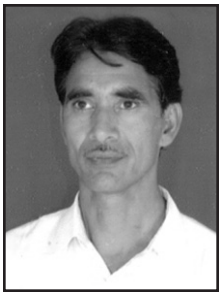

**श्रीभगवान सैनी**

श्रीडूँगरगढ़ में जन्म। हिन्दी एवं राजस्थानी में समान लेखन। बाल लेखन भी किया। अब तक पांच पुस्तकें प्रकाशित। वर्तमान में बीकानेर में बीमा एवं प्रावधायी निधि कार्यालय में कार्यरत। मोबाइल- 9460564514

# चार शब्द चित्र

(1)
आंख,
कयामत है तुम्हारा उठना,
इनायत भी है।
उठा देता है जमीं से,
बिठा देता है फलक पर
तुम्हारा उठना।
बहुत कुछ हो जाता है,
जब उठती है
आंख।

(2)
आंख,
तुम्हारा गिराया हुआ
कोई नहीं उठता।
आंसू तो अनमोल है तुम्हारा !
कोड़ियों के भाव भी नहीं बिकता
इन्सान.....

(3)
आंख,
थिरकती है
कपोलों पर
लाज की लालिमा
शर्मो-हया की मूर्ति
बन जाती हो।
धधकती है पुतलियों में
ज्वाला क्रोधाग्नि की
ताण्डव की प्रतीक।
मन दर्पण हो तुम
आंख।

(4)
आंख,
प्रकृति के नजारे
सूरज-चांद-सितारे
मोहताज सब तुम्हारे।
गूंगे की जुबां/
बहरों के कान...
तुमसे ही तो है
सारा जहान।

◈◊◈

**पुष्पा सिंघी**

जन्म सरदारशहर में। श्रीडूँगरगढ़ के मालचंद सिंघी की धर्मपत्नी। बाल्यकाल से काव्य लेखन के प्रति आकृष्ट। कई पत्रिकाओं का सम्पादन। तेरापंथ धर्म संघ की अनेक संस्थाओं में पदाधिकारी। 7 काव्य पुस्तकें तथा एक उपन्यास प्रकाशित। राजस्थानी लोक गीतों का संकलन। वर्तमान में कटक (उड़ीसा) निवास। मोबाइल-09937534060

# अजन्मी पुत्री और माता

सृजित हुआ सपनों का सुन्दर संसार।
मैं ऋणी रहूंगी माँ! देना जीवन उपहार।।
विज्ञान को मान लिया तुमने अब वरदान
नहीं है यह किसी की मौत का सामान
साहस से देती मुझ को मेरी पहचान
नवोदित सूर्य को नमन, छंटेगा अंधियार।
मैं ऋणी रहूंगी माँ! देना जीवन उपहार।।
वात्सल्य के पीयूष झरने में हो स्नात
भाव सरोवर में निकसेंगे पुष्प नवजात
स्वर्णित दिवस होंगे, रजतमयी प्रति रात
विश्वास करना मेरा आगमन होगा सुखकार।
मैं ऋणी रहूंगी माँ! देना जीवन उपहार।।
परमपिता की कृपा से तुम्हारी रत्न कोख पाई
छूना है मुझ को हिमगिरि की ऊंचाई
मापना है एक दिन सागर की गहराई
मेरे साथ तुम्हारा आशीष, स्नेह, संस्कार।
मैं ऋणी रहूंगी माँ! देना जीवन उपहार।।

◈◊◈

**पूनम गुजरानी**

श्रीडूँगरगढ़ के छत्रमल छाजेड़ की पुत्री। जन्म 17 फरवरी 1970, लेखन के अलावा संगीत एवं सामाजिक कार्यों में रुचि। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में गद्य-पद्य में सैकड़ों रचनाएं प्रकाशित। दो कविता संग्रह छपे हैं। टी.वी. चैनल पर भी कार्यक्रम संचालन। कवि सम्मेलनों में शिरकत। अनेक संस्थाओं से जुड़ाव। वर्तमान निवास सूरत में। दूरभाष-0261-2221718, मो. 09825473857

# लापता गांव

बरगद बाबा से पूछा मैंने, उसने तब एक बात कही
गांव शहर में हुआ लापता, तुमने क्या देखा है कहीं?
बिन झूलों के सावन कैसा
रूठ गई मेहंदी, मल्हारें
सूख गया है हंसता टेसू
ननद-भावज के तीज सिंजारे
पनघट पानी से रीता है, चारों ओर फैले खाता-बही
गांव शहर में हुआ लापता, तुमने क्या देखा है कहीं?
हरियाले खेतों पर आफत
आग लगी जब रिश्तों में
जीवन एक व्यापार हो गया
जहां प्यार निभाते किस्तों में
माटी गुमसुम करे पुकार, अब तो जागो, सोओ नहीं।
गांव शहर में हुआ लापता, तुमने क्या देखा है कहीं?
सांझ पड़े दीए शरमाते
नेह की बाती सुस्ताये
खुले न ताले अब तक घर के
रात पड़े फिर पछताये
जादू कब पश्चिम का उतरे, जानता कोई नहीं
गांव शहर में हुआ लापता, तुमने क्या देखा है कहीं?

◈◊◈

**इन्द्र भादानी**

साहित्य में नव हस्ताक्षर हैं–इन्द्र भादानी। अपने निजी व्यवसाय से समय निकाल कर वे कविता-कहानी रचते हैं। अभी कुछ ही रचनाएं यत्र-तत्र पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। वे साहित्य के पाठक भी हैं। वर्तमान में जयपुर में रह कर व्यवसाय कर रहे हैं।

# नीम का पेड़

नीम के पेड़
तले खड़ा आदमी
अपनी ही
उधेड़बुन में खोया हुआ
सोच रहा है
कि उससे
अच्छा यह पेड़ है
जो खुद
धूप में तप कर भी
राहगीर को
दे रहा है ठंडी छांव
और एक आदमी है
जो
करता है शोषण
काट डालता है उसे
जो
देता है ठंडी छांव

◈◊◈

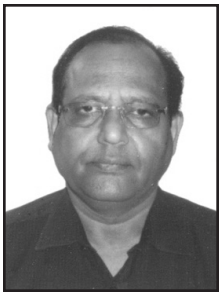

## सुमेरमल पुगलिया

श्रीडूँगरगढ़ के धनिक परिवार में जन्म। वाणिज्य स्नातक शिक्षा के पश्चात् अपने पुश्तैनी व्यवसाय में सक्रिय। साहित्य-कला के अनुरागी रहे श्री सुमेर पुगलिया गीत-संगीत के शौकीन। फुर्सत के समय में राजस्थानी में गीत गाते और लिखते हैं। वर्षों समिति से जुड़े रहे हैं। अब कोलकाता प्रवासी।

# गीत

ताती चालै पून बावळी, धूळ उड़ावै अे
मंगसौ पड़सी रूप अे थारो, घुंघटौ ढकलै अै।
सासरियै स्यूं पैल्यां साजन, क्यूं मूं ढकल्यूं जी
कंचन सी आ निखरी काया, लूवां में खेली जी।
ताती चालै.....
जे देखेला रूप उघाड़ो, लाज सरम मर ज्यावैला
लोग लुगायां सगळा मिलर र, बातां भोत बणावैला
कै ल्यायो है छोरो बीनणी, लाज सरम नीं आवै है
पल्लो छिटकायां चालै बावळी, सगळां नै बतलावै है।
ताती चालै.....
मरुधर रा ओ पिउजी म्हारा, हरियाळी रा सांसा पड़ग्या
रूप रूपाळी गोर्‌यां देख र, इन्द्र देव नै आणौ होसी।
झूला झूलां घूमर घालां, उण नै कियां रिझावां हो
खेतां नै जावां हळिया जोतां, खुशयाळी मनावां हो
ताती चालै.....

◈◊◈

**मणिकांत वर्मा (सोनी)**

राजलदेसर में जाये-जन्मे श्री मणिकांत वर्मा कुछ वर्ष प्रदेश में नौकरी करने के बाद राजलदेसर से श्रीडूँगरगढ़ में स्थाई रूप में आकर बस गये और अपना पुश्तैनी स्वर्णकार का कार्य करने लगे। साथ में कविता, गीत के प्रति रुचि होने स्वरूप कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में निरन्तर भागीदारी देने लगे। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के संस्थापक सदस्य वर्मा की एक पुस्तक 'बीनणी को परवानो' विगत वर्षों में छपी है। स्वभाव के मनमौजी एवं तुकान्त कविता में गति रखते हैं।

# सोची घणी

सोची घणी हुई कोनी
बस
इक ओ ही एक धोको रहग्यो।

उमर भर कुण काम करे,
चट धन बरसे बो काम करूँ,
हुकम करूँ बेठ्या-बेठ्या,
सेठाई में काम करूँ,
जद एक जणों बोल्यो आकर,
'कवि' जूवे में धन आ ज्यासी,
बो कोड्या को खेल देख,
थारों भाग बदळ ज्यासी,
मैं हार गयो रुपया सारा,
बर्तन कपड़ा बेच दिया,
कोडी पलटती पलट गई,
होग्या पाँच, चोको रहग्यो,
सोची घणीं हुई कोनी...

टोळायाँ परिया की निकल,
बानें देख-देख गस आ जावे,
एक मनचलो, बोले भाई,
मिल ज्यावे तो रस आ जावे,
म्हारो भी मन डोलण लाग्यो,
म्हे केयो एक क सारे जा,
तूँ देवी है या परी है, अफसरा
है तो, सुरगा ने जा,
बा हँस कर तिरछा नेण करया
और कर्‌यो इसारो आवँण को
मैं घबरा कर भागण लाग्यो,
जद यार बोल्या, बाको रहग्यो
सोची घणीं हुई कोनी...

मैं करी नौकरी नाटक में
बठे जरा मन लाग्यो हो
पण झूठा पोल का ढोल देख
मैं ज्यान छुटा कर भाग्यो हो
म्हारी तो आसा ही टूट गई,
बठे नहीं अफसरा मिल पाई,
अरे म्हारे हाथ कुण आवँण दे
ओ लूँठाँ को डोको रहग्यो
सोची घणीं हुई कोनी
इक ओ ही बस धोको रहग्यो

◈◊◈

# संस्मरणों के आईने में

जब भी आता है तेरा नाम मेरे नाम के साथ
जाने क्यों लोग मेरे नाम से जल जाते हैं।

**—क़तील शिफ़ाई**

# फूले-फले साहित्य की यह वाटिका

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇ **मदन सैनी** ◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

श्रीडूँगरगढ़ की साहित्यिक संस्था राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का स्वर्ण जयंती वर्ष साहित्यकारों के लिए ही नहीं, कस्बेवासियों के लिए भी आह्लादकारी है। आज से पचास वर्ष पूर्व जब इस संस्था का बीज-वपन हुआ, उस समय से लेकर अद्यावधि पर्यन्त एक बागवान की तरह इसकी सार-संभाल करने वाले श्याम महर्षि का वर्षों पूर्व देखा गया सपना कि संस्था का अपना भवन होना चाहिए, समृद्ध पुस्तकालय होना चाहिए और साहित्यिक जगत् में उल्लेखनीय योगदान होना चाहिए, आज साकार रूप ले चुका है। कस्बे के मध्य मोचीवाड़ा में स्थित छोटे से कार्यालय में जब यह संस्था थी, तभी से कस्बे के प्रबुद्ध नागरिकों के हृदय में इसने अपना स्थान बना लिया था। यहां से चांदरतन डागा की हवेली और फिर वहां से वर्तमान स्थल पर सुशोभित यह संस्था आज एक ऐसी वाटिका के रूप में अपनी सुषमा बिखेर रही है, जहां जुड़े एक-एक साहित्यकार, एक-एक पुष्प की भांति हर किसी का मन मोहते हुए साहित्य की सौरभ से देश और समाज को सुवासित कर रहे हैं। आज साहित्य की इस वाटिका को सभी फूलता-फलता देख रहे हैं और कामना कर रहे हैं कि यह अनवरत उन्नति की ओर अग्रसर होती रहे।

**जीवन के पहले प्रभात में आंख खुली जब मेरी**

समाज में हर कोई अपने जन्म से नहीं जाना जाता, बल्कि अपने सृजन से, अपने कर्म से व्यक्ति की पहचान होती है। जब किसी रचनाकार की कोई रचना छप कर समाज के सामने आती है, तो समझो कि वह दिन उसके जन्मदिन की तरह है। किसी की जब कोई पुस्तक प्रकाशित होती है, जिससे उसकी पहचान होती है तो वह दिन भी कुछ इसी तरह का एहसास दिलाता है। साहित्य में मेरी रुचि तो चौथी-पांचवी कक्षा से ही थी, पर दसवीं-ग्यारहवीं कक्षा में आते-आते मेरी रचनाएं हिन्दी पत्रिकाओं में छपने लगी थी और जब श्रीडूँगरगढ़ से हायर सैकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करके मैंने सरदारशहर के एस.बी.डी. राजकीय कॉलेज में प्रथम वर्ष वाणिज्य में प्रवेश लिया तो उन्हीं दिनों राजस्थानी में लिखा मेरा एक गीत 'सिंझ्या-वंदन' शीर्षक से बीकानेर के एक प्रतिष्ठित साप्ताहिक में छपा। मुझे पहली बार लगा कि साहित्यिक जीवन में यह मेरा पहला प्रभात है और मैं सब कुछ एक नए अंदाज में देख रहा हूं। इस गीत को श्रीडूँगरगढ़ में श्री श्याम महर्षि और चेतन स्वामी ने भी पढ़ा। इन्होंने कस्बे के दोनों पुस्तकालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों से मेरे बारे में जानकारी लेनी चाही, पर वे नहीं दे पाए। पर चेतन की शोध खोज की प्रवृत्ति ने पता लगा लिया। एक दिन मुझे कॉलेज के पते पर 'चेतना नॉवेल स्टाल' की मुहर लगा एक पोस्टकार्ड मिला। लिखा था कि छुट्टियों में आते ही मिलना। हम लोग यहां से एक पत्रिका निकालेंगे। यह पत्र पढ़ते ही मुझे लगा कि जैसे वहां की सभी पुस्तकें मुझे निमंत्रण दे रही हो। पाठ्य पुस्तकों के अलावा साहित्यिक पुस्तकें पढ़ने की रुचि और भी प्रबल हो उठी। उन्हीं दिनों सरदारशहर तहसील के पेशकार कुंदनजी कम्मा ने मुझे बताया कि श्रीडूँगरगढ़ के साहित्यकार श्याम महर्षि की नियुक्ति यहां तहसील में हो गई है। वे आपसे मिलना चाह रहे हैं। कह रहे थे कि उन्होंने आपका कोई गीत पढ़ा था, जो उन्हें बहुत पसंद आया।

मैं वहां तो उनसे नहीं मिल पाया, पर छुट्टियां होते ही बस स्टैण्ड के निकट चेतना नॉवेल स्टाल पर एक साथ ही चेतन स्वामी व श्याम महर्षि से मिला। मुझे श्यामजी में अपने बड़े भाई नजर आने लगे। चेतन ने उनकी साहित्यिक सूझ-बूझ की भरपूर सराहना की और घर पर जब मां से इस बारे में मैंने चर्चा की तो उन्होंने भी श्यामजी की खूब प्रशंसा की और आज भी करती हैं।

श्यामजी चाहते थे कि कस्बे में एक स्वस्थ साहित्यिक वातावरण का निर्माण हो। उनके सौम्य एवं सौजन्यशील व्यवहार के कारण साहित्यिक रुझान वाले युवा लोग उनसे बेहद प्रभावित थे। उनकी इच्छानुसार कस्बे में साप्ताहिक एवं पाक्षिक गोष्ठियों का आयोजन होने लगा। सभी के लिए अनिवार्य था कि वे अपनी एक-एक रचना सुनाएं। जो व्यक्ति गीत, कविता या कहानी नहीं लिख सकता, उसे हास्य-व्यंग्य लेख, संस्मरण और यह भी नहीं तो चुटकुले ही सही पर सुनाने जरूरी थे। यह दौर चल निकला और गोष्ठी में बोलने वालों में आत्मविश्वास बढ़ने लगा, अभिव्यक्ति कौशल में निखार आने लगा और युवाकवि श्याम महर्षि के नाम के साथ-साथ अन्य युवा साहित्यकारों के नाम भी पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाने लगे और साहित्य जगत् में चर्चित होने लगे।

उस दौर की गोष्ठियों में भाग लेने वालों में वरिष्ठ साहित्यकार त्रिलोक शर्मा, प्रबुद्ध विचारक जीवराज वर्मा, हनुमान पुरोहित के अतिरिक्त माणक पेंटर, फरीद खान, राम उपाध्याय, सूर्यकांत 'कांत', रतन 'राहगीर', भोजराज सोलंकी, सत्यदीप, मालचंद तिवाड़ी, चेतन स्वामी, बजरंग शर्मा, गुलाब सोनी, केसरीचंद 'मांडण' आदि भी हमारे साथ होते थे। यह सिलसिला बढ़ता रहा और फिर रवि पुरोहित, श्रीभगवान सैनी, केऊमल सुथार, अशोक सांखला, महेन्द्र चोरड़िया आदि नए रचनाकार भी इन गोष्ठियों में भाग लेने लगे। बीच-बीच में बड़े सेमिनारों का आयोजन भी होता था। लेखक सम्मेलन, कवि सम्मेलन और सांस्कृतिक समारोह भी यहां आयोजित किए जाने लगे, जो कस्बे के प्रबुद्धजनों में चर्चा का विषय बने।

**कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुण तीन**

संगति के लिए हमारे यहां कहा गया है–'जेसी संगति कीजिए, वैसो ही फल लीन। कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुण तीन।' अर्थात् जो व्यक्ति जैसी संगति करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। जैसे- स्वाति नक्षत्र के जल की बूंद केले में गिरने पर 'कपूर' बन जाती है, सीप के मुंह में गिरने पर कीमती 'मोती' बन जाती है और सांप के मुंह में गिरने पर 'कालकूट विष' बन जाती है, तो यह भी स्पष्ट है कि साहित्यिक समुदाय की संगति करने वालों में भी कोई-न-कोई रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास होना अवश्यंभावी है। मैं अपने बारे में एक उदाहरण देना चाहूंगा, जब मैंने प्रारंभ में राजस्थानी प्रकृति-काव्य के प्रति रुझान होने के कारण छंदबद्ध गीत और कविताएं लिखी, तो श्यामजी ने कहा कि ये रचनाएं अपनी जगह ठीक है और इनका महत्त्व भी स्वत:सिद्ध है, लेकिन नई शैली की कविताओं को भी जानो-समझो और लिखने का मानस बनाओ। मेरे लिए उनका यह कथन प्रेरणादायक सिद्ध हुआ और मैंने पहले-पहल 'अस्तित्व' शीर्षक से कविता लिखी, फिर 'भटकाव' कविता लिखी, ये क्रमश: 'लोक-शिक्षक' और 'विवेक विकास' में प्रकाशित हुई। फिर 'बातघर' में कुछ कविताएं छपीं और फिर आकाशवाणी, बीकानेर से 'मेरी कविता' कार्यक्रम में भी प्रसारित हुई।

बी.कॉम. के बाद श्रीडूँगरगढ़ टंकण प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना में भी श्यामजी और मालचंद तिवाड़ी की प्रेरणा रही। इनके सहयोग के बिना ऐसा संभव नहीं था। श्यामजी चाहते थे कि मैं एम.ए. और पीएच.डी. करके मरुभूमि शोध संस्थान में निदेशक पद पर सेवाएं दूं। उनकी प्रेरणानुसार मैंने उक्त अर्हता अर्जित की और मरुभूमि शोध संस्थान में परियोजना निदेशक के रूप में तीन वर्ष तक अपनी सेवाएं दी, जिनके आधार पर भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर और मोहता लोक संस्कृति शोध संस्थान, सादुलपुर में शोध अधिकारी के पद पर मैंने आगे जाकर सेवाएं दी। एक बात और श्यामजी ने 'राजस्थली' का सम्पादन शुरू किया, जिसमें एक दशक से अधिक समय तक मैंने भी सहायक संपादक के रूप में कार्य किया। फलत: आगे चल कर भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान की शोध पत्रिका 'वैचारिकी'

और राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर की मुख पत्रिका 'जागती जोत' में क्रमशः सह संपादक और अतिथि संपादक के रूप में संपादन कार्य करने का अवसर भी मुझे मिला। संपादन कार्य के कारण प्रूफ रीडिंग भी देखनी होती थी, अतः इसमें भी मैंने दक्षता प्राप्त की। यह सब संगति का ही सुफल था। आज जब हम मित्रों में यह चर्चा होती है कि यदि हमें श्रीडूँगरगढ़ में श्याम महर्षि का सान्निध्य नहीं मिला होता, तो आज हम कहां होते? इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं है।

संगति का प्रभाव सिर्फ सकारात्मक ही नहीं होता, अपितु नकारात्मक भी होता है। नकारात्मकता में एक चुनौती होती है, जो प्रगति के नए द्वार खोलने में प्रभावकारी सिद्ध होती है। यही कारण है कि सामाजिक, आर्थिक एवं साहित्यिक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए कस्बे के अनेक सृजक आज अपनी एक स्वतंत्र छवि रखते हैं। इनमें श्याम महर्षि के सृजन-संसार पर ही नहीं, अपितु मालचंद, चेतन, रवि और श्रीभगवान के सृजन को भी शोधार्थियों ने अपने शोध प्रबंधों में स्थान दिया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ का निजी भवन आज राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 पर अंगद के पांव की तरह अटल होकर जैसे राष्ट्र का आह्वान कर रहा है कि आओ, हम सभी एक और एक मिल कर ग्यारह हो जाएं। राष्ट्रभाषा और राष्ट्र का मान बढ़ाएं और इस स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर श्रीडूँगरगढ़ के सामाजिक-सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सौहार्द को स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर भावी पीढ़ी को दिशा-बोध दें और उसका पथ प्रशस्त करें।

◈◊◈

# श्रीडूँगरगढ़ की सांस्कृतिक छवि का पर्याय है : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति

**चेतन स्वामी**

इस धरा धाम पर कितने ही महान् पुरुष हुए हैं, उन सभी का गुणगान और वर्णन बड़े विस्तार से इतिहास ग्रंथों, धर्मग्रंथों और विभिन्न ग्रंथों में किया गया है। वस्तुतः इस सृष्टि में लोक को आनंद और सृजनात्मक ढंग से जीवन जीने का निर्देश महान् पुरुष ही देते आए हैं। वे सामान्य जन के प्रति एक जिम्मेदारी का भाव लेकर अवतरित होते हैं। महानता का बड़ा गुण यह है कि उनका जीवन स्वयं के लिए नहीं होता, वे दूसरों के जीवन को सुखमय बनाने के लिए जीते हैं। हेरोडोट्स प्रसिद्ध यूनानी इतिहासकार हुए हैं, उन्हें इतिहास का जनक भी कहा जाता है। उनका मानना था कि इतिहास का विधाता महापुरुष ही होता है, उनके बिना इतिहास में लिखा ही क्या जाए? उनके इस सूत्र को आगे बढ़ाते हुए दार्शनिक इतिहासकार टॉमस कार्लायल ने अपनी अति चर्चित कृति 'हीरोज एण्ड हीरोवर्शिप' के द्वारा महान् लोगों के क्षेत्र और संज्ञा का विस्तार कर दिया, उन्होंने कहा कि महान् पुरुष साहित्य, कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि न जाने कितने क्षेत्रों में होते हैं। उन सबका अपना महत्त्व है।

सांस्कृतिक नगरी श्रीडूँगरगढ़ की रज को पावन करने तथा वर्तमान और आगे की पीढ़ी को प्रेरणा पाथेय प्रदान करने को यहां भी अनेक महापुरुष अवतरित हुए हैं। किसी का आध्यात्मिक महत्त्व रहा है तो किसी का सामाजिक तो किसी का साहित्यिक और सांस्कृतिक। महान् लोग सदैव अपनी सुयश सुरभि को सुविस्तृत होने का अवसर देते हैं। साहित्य के क्षेत्र में श्रीडूँगरगढ़ ने जो ख्याति अर्जित की है, उसकी बुनियाद का नाम श्याम महर्षि है। वे महा ऋषि जैसे ही हैं। विगत पचास वर्षों से किसी सुरभित लौ की भांति वातावरण को प्रकाशित और सुगंधित कर रहे हैं। न मान न अभिमान। एक ही ध्येय है, किसी तराशकार की भांति कि उनके तराशे हुए नगीने अधिक मोल वाले और चमकीले बनें।

श्यामजी की अध्यवसायी लगन साहित्यकार, कलाकार बनाती है। यह वाक्य सामान्य तर्कबुद्धि से अटपटा लगता है, पर सचाई की बुनियाद पर टिका हुआ है। नहीं होती होगी साहित्यकार बनाने की स्कूल, पर श्यामजी के पास है वह तकनीक, जिससे साहित्यकार घड़े जा सकते हैं। उनकी न हारने वाली सूझ ने यही तो किया है। कोई तीस से अधिक लोग जो दो-तीन पीढ़ी के हैं, श्यामजी से अनुप्रेरित होकर साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीयता प्राप्त कर चुके हैं। पचास वर्ष में तीसरी पीढ़ी प्रवेश पा जाती है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि श्याम महर्षि ने अपनी उम्र से पचास वर्ष छोटे बालकों को भी साहित्य के क्षेत्र में उतारने का सफल प्रयोग किया है। उनका यह उद्योग केवल कविता/कहानी रचने वाले साहित्य के विद्यार्थियों, रचनाकारों तक ही महदूद नहीं है, वे इस बहाने अपने नगर को एक साहित्यिक-सांस्कृतिक सुघड़ छवि प्रदान करते हैं। उन्होंने तीस साहित्यकारों को ही नहीं जन्मा है, कितने कलाकार उन्हें अपना संरक्षक मानते हैं तो कितने ही साहित्य, संगीत और कलाप्रेमियों को उन्होंने एक विशेष कला प्रेम से न केवल परिचित करा दिया है, वरन् उन्हें उपरोक्त कलाओं का पिपासु बना दिया है। शायद ही ऐसा कोई कस्बा होगा, जहां लगभग हर माह कोई न कोई सांस्कृतिक, साहित्यिक आयोजन होता होगा? यह सौभाग्य श्यामजी के माध्यम से श्रीडूँगरगढ़ को सहज प्राप्त है। अब वे यहां विश्वास का प्रतीक बन गए हैं, नगरवासी जानते हैं कि श्यामजी कोई आयोजन कर रहे हैं तो वह अवश्य ही यथेष्ट है। नहीं तो किया ही नहीं जाता।

मुझे नवीं कक्षा तक पढ़ाने के बाद पिताजी ने जब कह दिया कि हमारे खानदान में तुम सबसे ज्यादा पढ़ गए हो, अब तुम्हें नौकरी अथवा धंधा करना चाहिए। मैं भी पढ़ाई से थोड़ा जी चुराने लगा था और दूसरा यह ज़ज्बा भी था कि मुझे अपने वृद्ध पिता का आर्थिक सहयोग करना चाहिए, सो सहज ही नौकरी अथवा घरेलू कोई धंधा करने के लिए तैयार हो गया। उन्होंने अपने रसूख से पहले एक दर्जी के यहां सिलाई का काम सीखने के लिए लगाया, पर एक ही दिन में जब बटनकाज गोठते-गोठते ऊब गया तो दर्जी के यहां जाने की मनाही कर दी। वे थोड़ा खीझे-उनकी राय थी दर्जी बहुत कमाते हैं, पर दूसरे दिन एक परिचित की मदद से उन्होंने मुझे विद्युत् विभाग में हैल्पर की पक्की नौकरी दिलवा दी। पहले ए.ई.एन. को ही विद्युत्कर्मी को नौकरी देने का अधिकार था, पर विद्युत् खम्भों पर चढ़ने-उतरने का काम भी मन को नहीं भाया, इस पर पिताजी ने लगभग रुआंसे जैसे होते हुए कहा कि अब मैं तुम्हें बालिस्टर कहां से बना दूं। बालिस्टर से उनका तात्पर्य बैरिस्टर से था। मित्रों से चिंतन कर यह ठहराया कि मुझे पुस्तकें बेचने का काम करना चाहिए। स्वयं ही बाजार जाकर मैंने एक कठोर पर उदार व्यक्ति चंदन सिंधी से रेहड़ी किराये पर लेने की बात की, उन्होंने चवन्नी रोज के भाड़े पर अपनी रेहड़ी जिसे हम यहां 'गाड़ा' कहते हैं, दे दी। मैंने हिंद पॉकेट बुक्स से बूआ से उधार लिए सौ रुपयों से सौ पाकेट बुक्स मंगवा ली, जिन्हें गाड़े पर सजा कर बेचने के लिए बस स्टैण्ड चला। उस दिन संकोच, ग्लानि, कुछ करने का ज़ज्बा, अपरिचित लोगों के बीच जाकर धंधा करने का डर, न जाने ऐसे कितने ही भावों से भरा मेरा सत्रह वर्षीय मन, कितनी ही दुश्चिंताओं से घिरा हुआ था।

व्याकुल और लगभग अबोध युवा को आते ही एक-दो बस स्टेण्डिया तांगे वालों और गाड़े वालों का विरोध सहना पड़ा। मनोनुकूल जगह पर खड़ा नहीं होने दिया तो मन मसोस कर एक कोने में अपनी रेहड़ी को जमाया। उसी समय सौम्य से दिखने वाले दो युवकों का आगमन हुआ। वे मेरी रेहड़ी के समीप पहुंचे और मुझे बड़े गौर से देख कर मुस्कुराए, उनमें से एक राम उपाध्याय ने कहा- किताबें बेचने आए हो- कहां के हो लाडी? मैंने संकोच से दबते और लगभग बुदबुदाते हुए कहा-कालूबास से आया हूं, रेंवतदासजी स्वामी का लड़का हूं, आज पहला ही दिन है। रामजी तो नहीं पहचान पाए पर श्यामजी शायद मेरे पिताजी को पहले से जानते थे, उन्होंने कहा-अच्छ्या-अच्छ्या और गाड़े की किताबों को सरसरी दृष्टि से देखने लगे। दोनों मित्रों (रामजी, श्यामजी की पचास वर्षों से जुगल जोड़ी रही है, ऐसी अटूट दोस्ती विरल ही देखने को मिलती है) के अपनत्व भरे बोल से मैं थोड़ा सहज और आश्वस्त हुआ। रामजी ने कहा कि वे नगरपालिका में बाबू हैं और यहां खड़ा होने में तुम्हें कोई तकलीफ हो तो मुझे बताना। उनकी यह बात मेरे लिए बहुत बड़ा सम्बल थी। जो तांगे वाले, गाड़े वाले मुझे थोड़ा परेशान कर रहे थे, उन्होंने भी रामजी को कनखियों से देखा। श्यामजी तहसील में पटवारी थे, उनका भी अपना रोब था। साहित्यकार के अलावा भी रामजी-श्यामजी का अपना रुतबा अलग रहा है। उनकी जुझारू प्रवृत्ति के कारण हर कोई उनसे झगड़ा या ईर्ष्या मोल लेना आज भी ठीक नहीं समझता। कुल मिला कर इन दोनों की दबंग छवि का मुझे भरपूर लाभ मिला। मैं जो डरा-डरा और दब्बू किस्म का था, थोड़ा मुखर होने लगा। मुझे दो बड़े लोगों का अपनत्व और सम्बल मिल गया था।

घर से तहसील और नगरपालिका आते-जाते रामजी और श्यामजी मेरे गाड़े पर एकाध-बार जरूर आने लगे। इस बीच श्यामजी ने मुझसे पूछा कि पुस्तकें पढ़ने में तुम्हारी रुचि है? मैंने हामी भरी तो उन्होंने कई साहित्यकारों के नाम सुझाए और कहा कि ये सब पुस्तकें हमारी श्रीडूँगरगढ़ लाइब्रेरी में है। मैंने उनसे कहा कि मैं पहले से ही शहर के दोनों पुस्तकालयों का सदस्य हूं, पर मैंने अधिक न बोलने की प्रवृत्ति के कारण उन्हें यह नहीं बताया कि घासलेटी साहित्य का मैं घनघोर पाठक हूं। अपनी इस रुचि के कारण ही मैंने उपन्यास आदि बेचने का निर्णय लिया था, ताकि खुद भी पढ़ेंगे और दूसरों को भी बेचेंगे। अब तक मैं कुशवाह कांत, प्यारेलाल, जयंत कुशवाह, गुलशन नंदा, प्रेम वाजपेयी और इसी तरह के अन्य अनेक रोमांटिक उपन्यासकारों के तमाम उपन्यास पढ़ चुका था। उस समय ऐसे उपन्यास पढ़ना बेशर्मी की बात समझी जाती थी। साहित्यकार लोग इसे घासलेटी एवं फुटपाथी साहित्य कह कर हेय दृष्टि से देखते थे।

इस समय तक श्यामजी-रामजी हिन्दी प्रचार समिति से 'काव्यांजलि' नामक राजस्थान के कवियों का एक संकलन छाप चुके थे, उन्होंने उसकी एक प्रति मुझे देकर कहा, इसे पढ़ना। अतुकांत कविताएं-जिन्हें आजकल आधुनिक कविताएं कहते हैं, मेरी समझ में नहीं आती थी। सच्ची बात तो यह है कि आज भी अधिकांश कविताएं समझ नहीं पाता। यह शायद रुचि का मसला है। रुचि हो तो कवि कुछ भी लिखे, आस्वादक अपने हिसाब से कुछ न कुछ अर्थ निकाल ही लेता है। खैर, श्यामजी ने अपना मिशन शुरू कर दिया था। हर मुलाकात में उनके हाथ में कोई न कोई साहित्यिक कृति अथवा पत्रिका हुआ करती थी। वे अपने हाथ में कम्यूनिज्म का साहित्य भी रखते थे, उनकी त्रिलोकजी शर्मा से गहरी प्रगाढ़ता थी। बाद में त्रिलोकजी और दूसरे कई कॉमरेड साथियों का भी मेरे पास आना-जाना शुरू हो गया। इसी बीच श्यामजी ने देखा कि मेरी छोटी-छोटी रचनाएं वर्तमान साप्ताहिक, जलते दीप आदि में छपने लगी है। यह सब उनके लिए उत्साहवर्द्धक था। इसी बीच उन्होंने समिति की ओर से प्रकाशित होने वाले दूसरे काव्य संकलन 'रेत के पठार' की रचनाएं इस उद्देश्य से मुझे सौंप दी कि मैं एक सुन्दर प्रेस कॉपी तैयार कर दूं और मैंने यह कार्य तुरत कर दिया। अब उन्होंने मुझे पक्के शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया था और मुझे साहित्यकार बनाने के लिए उन्होंने पूरी ऊर्जा लगा दी थी। इस बीच मुझे पता चला कि श्यामजी के साथ साहित्यिक रुचि के अनेक लोग जुड़े हुए हैं और छोटे-मोटे साहित्यिक आयोजनों के अलावा 14 सितम्बर का हिन्दी दिवस वे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं और इस दिन सायंकाल को एक कवि सम्मेलन भी आयोजित करते हैं। नगर के लोग चौदह सितम्बर की प्रतीक्षा किया करते थे।

इस दौरान राष्ट्रभाषा की हर गतिविधि से मैं पूरे भावात्मक लगाव से जुड़ चुका था। ओळमो के कुछ अंक, मरुवाणी के भी तथा नानूरामजी संस्कर्ता और बैजनाथजी पंवार के कथा संकलनों को पढ़ने के कारण मेरी रुचि हिन्दी की बजाय राजस्थानी पठन-लेखन की ओर अधिक होने लगी। मैंने राजस्थानी में एक त्रैमासिक पत्रिका निकालने की सलाह श्यामजी को दी और वे सहज ही मान गए। इस तरह से 'राजस्थली' का जन्म हुआ और सत्रह वर्षों तक मैं उससे जुड़ा हुआ रहा।

मैंने देखा कि श्यामजी चौतरफे दृष्टिकोण से काम करते हैं। उनका रुझान वामपंथी रहा, इसलिए अपने से जुड़ने वाले लोगों से उन्होंने अधिकाधिक वामपंथी साहित्य पढ़ने का आग्रह रखा। अच्छी कृतियां उपलब्ध कराते। उन्होंने बहुत जल्दी मुझ पर विश्वास कर राष्ट्रभाषा के किराये के कार्यालय की चाबी मुझे सौंप दी। कई दिनों तक मैं यह देख कर हैरान होता रहा कि ये वर्धा और प्रयाग की हिन्दी परीक्षाएं लोगों को प्रेरित कर क्यों दिलवाते हैं? प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएं क्यों लगवाते हैं? वस्तुतः वे साहित्य से सरोकार रखने वाले लोगों की फौज खड़ी करना चाहते थे। उनका उद्देश्य केवल साहित्यकार बनाने का नहीं था, असल में तो वे श्रीडूँगरगढ़ के आम जन की सांस्कृतिक अभिरुचि तैयार कर रहे थे। उनका मानना है कि पाठक या फोलोअर भी उतने ही जरूरी हैं, नहीं तो आपको सुनेगा-समझेगा कौन? कितने ऐसे लोग हैं जो तीन-तीन दशकों से उनके साथ जुड़े हुए हैं, उनके हर आयोजन का हिस्सा बनते हैं पर वे साहित्यकार नहीं है। बस, उन्हें श्यामजी के हर आयोजन में आनंद आता है। वे आस्वादक हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति ने प्रकाशनों पर भी पूरा ध्यान दिया। विभिन्न रुचि की पुस्तकें तैयार की। साहित्य के साथ शोध अनुसंधान को भी तरज़ीह दी। पाठक मंचों का आयोजन किसी जमाने में हर सप्ताह हुआ करता था, उससे अच्छी रचनाएं लिखने की स्पर्धा जगती थी। किसी भी साहित्यकार की खिंचाई (आलोचना) के समय श्यामजी का रवैया कल भी सख्त था और आज भी। वे अपने प्रिय से प्रिय मित्र को भी इस समय अकेला छोड़ देते हैं। मेरे पहले कविता संकलन 'सवाल' की पाठक मंच संगोष्ठी में हुई जोरदार 'फंफेड़' मुझे आज भी याद है। कैसा उत्साह था। भाई लोगों ने 'सवाल' की हर कविता के प्रत्युत्तर में 'जवाब' तैयार कर दिया था।

हमारी संगोष्ठियों की इस ख़ासियत को कौन भूल सकता है कि किशोर (जवान होते) वय के नौसिखिया साहित्यकारों को सुनने तथा उत्साहवर्द्धन करने के लिए साहित्य की गहरी समझ रखने वाले अनेक बुजुर्ग लोग भी मौजूद

रहते थे। देवीदत्तजी पालीवाल, जीवराजजी वर्मा, त्रिलोकजी शर्मा, हनुमानजी पुरोहित, शिवजी सिखवाल, इन्द्रजी भार्गव, एडवोकेट भरतसिंहजी राठौड़, रेंवतजी नैण, सूर्यकांत 'कांत', फरीद खान जैसे लोग हमारी छोटी संगोष्ठियों में भी अनिवार्यत: मौजूद रहते थे। फोटोग्राफर बृजाराम भी हमारी रुचियों के शिकार हुए, उनके चित्र सारिका जैसी पत्रिकाओं में छपे। जिस भी व्यक्ति में जिस किसी प्रकार का टेलेंट था, वह हमारा साथी बना। माणक पेंटर ने कभी हमसे बैनर बनाने के पैसे नहीं लिए। बृजाराम ने फोटो के पैसे नहीं लिए और इसी तरह चांदरतन डागा ने संस्था को दिए कमरों का कभी किराया नहीं लिया। ऐसे सहृदय लोगों को मैं नमन करता हूं।

हर वर्ष राष्ट्रभाषा के कई स्मरणीय आयोजन होते, जिन्हें याद कर हम गद्‌गद होते रहते। देश की वे हस्तियां जिन्हें देखने-सुनने का अवसर सामान्यतया कम ही लोगों को मिल पाता है, वे हमें राष्ट्रभाषा के माध्यम से सहज सुलभ हुए। नामवरसिंहजी, विश्वम्भरनाथजी उपाध्याय, नागार्जुनजी, विष्णु प्रभाकरजी, राजेन्द्र यादव जैसे हिन्दी तथा राजस्थानी के समकालीन सभी लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों को हमने राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के मंच से सुना, अनौपचारिक बातें कर उन्हें जाना। वेदव्यासजी जैसे कितने लोग तो इस संस्था के अंग ही बन गए। राष्ट्रभाषा के कार्यक्रमों में उपस्थित होने वाले सभी साहित्यकारों, अन्वेषकों, कलाकारों की अगर गिनती की जाए तो वह हजारों में होगी। साहित्यकार, कलाकार संवेदनशील प्राणी होते हैं, उन्हें कहीं भी जाने पर व्यवस्थागत कोई त्रुटि खल सकती है, पर यह श्यामजी और उनकी शिष्य मण्डली का सेवाभाव है कि आज तक के असंख्य आयोजनों से सभी लोग यहां से आह्लादित होकर ही गए। प्रशंसा को हमने कभी अहंकार के रूप में ग्रहण नहीं किया। आज भी रामजी उपाध्याय, श्रीकिशनजी पटवारी, गोपी पटवारी, बजरंग शर्मा, भंवर भोजक, सत्यदीप, नारायणप्रसाद शर्मा, महावीरजी सारस्वत का सेवाभाव किसी का भी मन मोह लेता है। ऐसे अनेक लोगों का साहित्य से ज्यादा नाता नहीं है, पर साहित्यकारों से है। उनकी सेवा कर उन्हें अपार सुख मिलता है। श्यामजी ने हर क्षेत्र के लोगों को अपने से जोड़ा है। राजनेता, जिन्हें राजनीति के सिवाय कुछ अच्छा नहीं लगता, वे भी राष्ट्रभाषा के आयोजनों में अपना राजनीतिक अहम् भूल कर सहयोग करते हैं। यहां यह उल्लेख करना भी अयुक्तिकर नहीं होगा कि इस संस्था की स्थापना में श्री नंदलालजी महर्षि का योगदान रहा, वहीं उनके पौत्र अर्थात् श्यामजी के सुपुत्र विजय महर्षि भी अपने पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए प्रत्येक आयोजन और समिति के हर कार्य में अथक परिश्रमपूर्वक अपना योगदान देते हैं। सौम्य व्यक्तित्व के धनी और पत्रकारिता में गहन रुचि रखने वाले विजय अपनी पूरी मित्रमण्डली के साथ समिति के प्रत्येक कार्य को आदरभाव के साथ करते हैं। उनमें जिम्मेवारी का भाव है।

इस वर्ष राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति ने अपनी संस्थापना और कार्यशीलता के पचास वर्ष पूरे कर लिए हैं। पचास वर्षों का यह वटवृक्ष अब अपनी जड़ें बहुत गहरी जमा चुका है और इसकी शाखाएं भी फैलने लगी हैं। सद्‌भाव इसकी पहचान है, यही कारण है कि इसका अपना निजी भवन, समृद्ध पुस्तकालय, सभा भवन, शोधकक्ष और दूसरे जितने भी आवश्यक 'सेटअप' हो सकते हैं, सभी हैं। स्वर्ण जयंती वर्ष सौभाग्यशाली संस्थाओं का होता है। इस घोर अराजक और अपसंस्कृति के पोषण वाले युग में नव सृजन को सन्नद्ध कोई संस्था अपना सफल स्वर्ण जयंती वर्ष मनाए, यह कहां संभव हो सकता है? यह इसलिए भी संभव है कि इस संस्था को जीवन पर्याय समझने वाले श्याम महर्षि ने इस (संस्था) को अपनी मिल्कीयत नहीं समझा। स्वयं को आगे रखने की बजाय अपनी साहित्यिक शिष्य मण्डली को सदैव आगे रखा। उन्होंने इस संस्था से जुड़े हर कार्यकर्ता और साहित्यकार को दरी बिछाने-समेटने से लेकर हर विषय की गंभीर से गंभीर–संगोष्ठियों-सम्मेलनों का संयोजन, सम्भाषण और अध्यक्ष पद ग्रहण करने तक का–दायित्व, खुले मन से सौंपा। मेरे लिए तो राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का प्रांगण किसी तीर्थ स्थल से कम नहीं है, क्योंकि इसी ने हमारे कोने, खुदरों, उभारों को घड़ा है–सुघड़ किया है।

◈◊◈

# राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ की पांच दशक की यात्रा

रामकिशन उपाध्याय

श्रीडूँगरगढ़ कस्बे के उत्साही कतिपय युवकों के मन में इस बात का अभाव खटकता था कि कस्बे में ऐसी संस्था की स्थापना की जाए, जो राष्ट्रभाषा के माध्यम से साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं हिन्दी विकासोन्मुखी कार्यों को सम्पादित करे।

**चिंतन बैठक**

सन् 1960 में इसी भावना की परिकल्पना को साकार स्वरूप देने हेतु भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस 14 नवम्बर को श्याम महर्षि, भंवरलाल पुरोहित (बिग्गा), रामस्वरूप चोटिया (प्रवासी) एवं मैंने स्व. मुखारामजी सिखवाल की अध्यक्षता एवं श्री इन्द्रचंद बिन्नाणी की संरक्षणता में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति हेतु संस्था गठन का निर्णय किया और 1 जनवरी 1961 को नव वर्ष की मंगलमय वेला में विधिवत् संस्था की स्थापना मुखाराम सिखवाल के सभापतित्व में शिवदयाला (बिग्गाबास) में की गई। संस्था का नाम राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति रखा गया।

संस्था के प्रथम अध्यक्ष डॉ. नंदलाल शर्मा, उपाध्यक्ष श्री गोविन्दराम पुरोहित, मंत्री श्री रामस्वरूप चोटिया, उप मंत्री श्री श्याम महर्षि, हिसाब परीक्षक श्री देवीदत्त पालीवाल एवं संरक्षक श्री इन्द्रचंद बिन्नाणी, कोषाध्यक्ष श्री भंवरलाल पुरोहित, प्रचार मंत्री श्री मणिकांत वर्मा एवं सदस्य सर्वश्री हनुमान प्रसाद उपाध्याय, मुखाराम शर्मा तथा तेजपाल वैद्य बनाये गए।

1961-62 में संस्था मंत्री श्री रामस्वरूप चोटिया ने बहुत ही लगन एवं परिश्रम से कार्य किया। जैसा कि संस्था की स्थापना के आरम्भिक दिन काफी संकटमय होते हैं और ये संस्था भी उससे अछूती नहीं रही, लेकिन परिश्रम से किसी भी प्रकार के संकटों को दूर करना मुश्किल नहीं है। संस्था के कार्यकर्ता संस्था को उत्तरोत्तर विकास की ओर ले जाने के लिए जुटे रहे।

वर्ष 1962-63 में मंत्री पद का कार्यभार श्री श्याम महर्षि ने सम्भाला। कुछ नये कार्यकर्ता संस्था से जुड़े। सभी के सतत सहयोग से संस्था ने हिन्दी के विकास के लिए नये आयामों की ओर कदम बढ़ाया।

इसी वर्ष साहित्य सेवा सदन की स्थापना श्री श्याम महर्षि की अध्यक्षता में की गई। इस संस्था का उद्देश्य संस्कृत एवं राजस्थानी परीक्षाओं के केन्द्र तथा शिक्षा हेतु समिति की शाखा के रूप में किया गया। इस संस्था के उपाध्यक्ष कन्हैयालाल शर्मा, मंत्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, प्रचार मंत्री इन्द्र भार्गव एवं केन्द्राध्यक्ष मुझे बनाया गया। यह संस्था 1965-66 तक सक्रिय रही।

संस्था के अन्तर्गत ही भाषा विभाग के सहयोग से रात्रि पाठशाला के रूप में केन्द्र संचालित किए गए, जो हिन्दी केन्द्रों पर अध्ययनरत परीक्षार्थियों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करते थे। परीक्षा केन्द्रों का संचालन हिन्दी परीक्षार्थियों के लिए पुस्तक संग्रहित करना भी इसका उद्देश्य था, ताकि परीक्षार्थी कम से कम शुल्क देकर पुस्तकें प्राप्त कर सके। इसी दौरान बम्बई हिन्दी विद्यापीठ के परीक्षा केन्द्रों का संचालन शुरू किया गया। सन् 1962-63 के अन्त तक संस्था की 15 शाखाएं थी, जो चूरू जिले के अलावा कूचबिहार में भी थी।

संस्था के अन्तर्गत राष्ट्रभाषा प्रसार समिति वर्धा, भारतीय विद्यापीठ बम्बई, बम्बई हिन्दी विद्यापीठ बम्बई, हिन्दी विद्यापीठ देवघर (बिहार), प्रयाग महिला विद्यापीठ इलाहाबाद, राजस्थानी भाषा प्रचार सभा जयपुर, अखिल भारतीय संस्कृत परीक्षा समिति पारड़ी (गुजरात), भारतीय साहित्य सम्मेलन दिल्ली और साहित्य सम्मेलन प्रयाग की विभिन्न परीक्षाओं के केन्द्र हेतु संस्था मान्यता प्राप्त थी। 1962 में ही संस्था को सम्पूर्ण चूरू जिले के लिए विभिन्न हिन्दी परीक्षाओं के निरीक्षण का अधिकार दिया गया। यह संस्था 1968-69 तक हिन्दी परीक्षाओं के माध्यम से आम आदमी को लाभान्वित करती रही और इसके साथ-साथ विभिन्न प्रकार के हिन्दी विषयक कार्यक्रम आयोजन भी करती रही।

14 सितम्बर हिन्दी दिवस संस्था की प्रमुख गतिविधि रही व अब भी है।

26-27 जून 1965 को श्रीडूँगरगढ़ में राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन एवं संभागीय हिन्दी सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

1969 से 1971 तक संस्था ने 2000 से अधिक लोगों को हिन्दी की विभिन्न परीक्षाएं देकर लाभान्वित किया। यह बीकानेर संभाग में एक कीर्त्तिमान था।

इस दशक में संस्था ने अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी से संबंधित कई सम्मेलनों में प्रतिनिधित्व भी किया।

संस्था द्वारा अपने 70 के दशक में आदर्श विद्यालय, कालूबास तथा बच्छराज पाठशाला आडसर बास का भी संचालन किया, लेकिन कार्य अधिकता के कारण उक्त संस्थाओं का स्वतंत्र संस्थान बना कर अलग ही इकाई बना दिया गया। बच्छराज पाठशाला आज भी कार्यरत है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का विधिवत् पंजीयन संस्था पंजीयन अधिनियम के तहत 1968 में हुआ।

संस्था द्वारा पेट्रोल पम्प के सामने एक छोटा सा भूखण्ड भी क्रय किया गया था।

इसी दशक में त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका के प्रकाशन का भी निर्णय लिया गया। 1965 से संस्था की चुनाव अवधि त्रैवार्षिक की गई और वर्ष 1982-83 में सभापति का नया पद संस्था में सृजित किया गया तथा प्रथम सभापति पंडित मालीराम शर्मा निर्वाचित हुए।

**प्रकाशन/शोध कार्य**

संस्था की त्रैमासिक पत्रिका 'राजस्थली' राजस्थानी भाषा में 1977 से नियमित प्रकाशित हो रही है। इसके प्रथम सम्पादक श्री श्याम महर्षि बने, जो अद्यतन इस पद का दायित्व निर्वहण कर रहे हैं। प्रबंध सम्पादक व सहायक सम्पादक के रूप में डॉ. चेतन स्वामी व डॉ. मदन सैनी दायित्व निर्वहण करते रहे। संस्था ने राजस्थली के 15 विशेषांक प्रकाशित किए हैं।

संस्था ने इसी मध्य 'हस्तक्षेप' नाम से हिन्दी भाषा फोल्डर (कार्ड) पत्रिका का भी कुछ समय तक प्रकाशन किया। पांच अंक के बाद प्रकाशन बन्द कर दिया गया।

संस्था द्वारा शोधकार्य भी संस्था के ही अंग मरुभूमि शोध संस्थान द्वारा किया जा रहा है। इस शोध संस्थान द्वारा अब तक 'ख्यात' नामक शोध पत्रिका के 1994 से अब तक 14 अंक प्रकाशित किए जा चुके हैं। ख्यात का सम्पादन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. भंवर भादानी कर रहे हैं तथा प्रबंध सम्पादक श्री श्याम महर्षि हैं।

इसी शृंखला में दुर्लभ पुरातत्त्व सामग्री संग्रहण भी मरुभूमि के मानद मंत्री श्री श्याम महर्षि के अथक प्रयास से किया जा रहा है, जिनमें कनिष्क एवं बौद्ध कालीन पुरातत्त्व सामग्री है। प्राचीन पाण्डुलिपियों का संग्रह भी किया जा रहा है। 18वीं व 19वीं शताब्दी की 70 हस्तलिखित ग्रंथों की पाण्डुलिपियां श्री चांदरतन डागा के सहयोग से प्राप्त हुई। यह पुरातन सामग्री संग्रहण का कार्य निरन्तर अद्यतन जारी है। 275 के लगभग रुक्के व परवाने श्री श्याम महर्षि के प्रयत्न से ग्रामीण क्षेत्रों से संग्रहित किए गए हैं।

**साहित्यश्री**

वर्ष 1974 से संस्था ने साहित्यश्री की मानद उपाधि परम्परा शुरू की, जिसमें स्वर्ण जयंती वर्ष तक 58 साहित्यकारों को सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा इतिहास के क्षेत्र में 'इतिहास श्री' जैसी मानद उपाधियां संस्था द्वारा समय-समय पर दी जा रही है। इस प्रकार की उपाधि प्रदान करने वाली यह एक पहली संस्था है।

**सांस्कृतिक क्षेत्र**

सांस्कृतिक क्षेत्र में संस्था ने राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर, जवाहर कला केन्द्र जयपुर तथा सामान्य प्रशासन एवं कला संस्कृति विभाग राजस्थान के सहयोग से लोकवाद्य, लोककला एवं लोकजीवन से जुड़े विषयों पर सार्वजनिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया है, जो नि:संदेह विलुप्त होती सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का सतत प्रयास है।

**संस्था कार्यालय/भवन**

जैसा कि पूर्व में अंकित किया जा चुका है, संस्था का कार्यालय स्थापना के बाद प्रथम श्री सुगनचंद चांडक के मुख्य बाजार स्थित एक कमरे में खोला गया एवं तत्पश्चात् बिग्गाबास स्थित चड़पड़नाथजी की बगीची में खोला गया।

संस्था की गतिविधियां बढ़ती रही। इसके मद्देनजर संस्था के अनुरोध पर संस्था के ही कार्यकर्ता चांदरतन बल्देवा के सहयोग से आशाराम टोडरमल बल्देवा का मोचीवाड़ा रोड पर इकटंगिया के नाम से विख्यात कमरे में स्थानान्तरित किया गया। यहां यह संस्था एक दशक तक रही। संस्था के विस्तार एवं अधिक स्थान की उपलब्धता के मद्देनजर संस्था पदाधिकारी श्री चांदरतन डागा ने अपने मकान में एक कमरा व हॉल संस्था को उपलब्ध करवाया। यह संस्था अपने भवन में प्रवेश तक यहीं रही। श्रद्धेय सुगनचंदजी चांडक, महन्त शम्भुनाथजी, श्री चांदरतन बल्देवा, श्री चांदरतन डागा के विशेष आभारी हैं, जिन्होंने अपने-अपने भवन निशुल्क उपलब्ध करवाए।

1996 में संस्था ने राज्य सरकार से 1500 वर्गगज भूमि रियायती दर पर प्राप्त की एवं चहार-दीवारी तथा एक कमरे का निर्माण पूर्ण करवाया गया।

1999 में श्री एल.सी. बिहानी, जोरमल धनराज पुगलिया, श्री सीताराम मोहता, मघराज माणकचंद पारख, शुभकरण सुमेरमल पुगलिया एवं श्री विजयराज सेठिया के संयुक्त सौजन्य से एक हॉल (शोधकक्ष) का निर्माण करवाया गया। इसी शृंखला में एक कमरे (मंत्री कक्ष) का निर्माण संस्था के संस्थापक अध्यक्ष स्व. मुखाराम सिखवाल की पुण्य स्मृति में उनके परिजन द्वारा करवाया गया। एक कमरा (लेखक कक्ष) श्री बजरंगलाल झेडू के सहयोग से एवं राष्ट्रभाषा पुस्तकालय हॉल का निर्माण अकाल राहत के तहत तथा विधायक श्री मंगलाराम गोदारा के विधायक कोष से 2003 में करवाया गया। मुख्य सभागार का निर्माण संस्कृति न्यास एवं भामाशाहों के सहयोग से निर्मित किया गया। सबसे बड़ी राशि 1 लाख 6 हजार रुपये सांस्कृतिक न्यास की थी।

संस्था परिवार सभी दानदाताओं का आभारी है।

संस्था राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर से सम्बद्ध है।

**राष्ट्रभाषा पुस्तकालय**

संस्था द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में पहले केवल पाठ्यपुस्तकें थी। 1981 के बाद विभिन्न साहित्यकारों से पुस्तकें प्राप्त हुई। पुस्तकों की संख्या अब लगभग 14 हजार है, जिनमें साहित्य, संस्कृति, शोध प्रबंध, काव्य एवं अन्य सभी विद्याओं की है। सभी पुस्तकें दानदाताओं से प्राप्त गोदरेजनुमा लोहे की आलमारियों में सुरक्षित रखी हुई हैं। पुस्तकालय के अंतर्गत एक वाचनालय भी है, जो प्रात: 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक खुला रहता है। इस वाचनालय में दैनिक अखबारों के अलावा 30 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं नियमित रूप से आती हैं। पुस्तकालय में एक कार्मिक की नियुक्ति भी की हुई है।

**विशेष**

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की स्थापना से लेकर अब तक 50 वर्ष के समय में विभिन्न जनों ने संस्था के अध्यक्षीय पद पर सेवाएं दी है, उनमें डॉ. नंदलाल महर्षि, श्री हनुमान पुरोहित, श्री श्याम महर्षि का नाम उल्लेखनीय है। मंत्री के रूप में श्री रामस्वरूप चोटिया, श्री श्याम महर्षि, श्री सत्यदीप भोजक एवं वर्तमान में श्री बजरंग शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। इस संस्था को जहां तक मेरा अनुमान है, कार्यकारिणी के 1961 से लेकर अब तक के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों का योगदान मिलता रहा है। किसी के योगदान को कम व ज्यादा नहीं आंका जा सकता। सभी में भ्रातृत्व एवं सहयोगात्मक सेवा की भावना रही है।

मैं संस्था के 50 वर्ष के उन पदाधिकारियों व सदस्यों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं, जो आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन संस्था के कण-कण में अब भी विराजमान हैं।

किसी भी संस्था के जीवन में 50 वर्ष का समय अति महत्त्वपूर्ण होता है।

साहित्यिक संस्था होने के नाते आम आदमी का जुड़ाव इससे कम है, लेकिन संस्था द्वारा आयोजित सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कला समारोह में आम आदमी की उपस्थिति ने इसकी पहचान कायम की है।

एक बार इस संस्था में आने वाला व्यक्ति बार-बार आने की मंशा करता ही है, क्योंकि संस्था की पावन भूमि, कार्यकारिणी सदस्यों की व्यवहार कुशलता इसका मुख्य कारण है।

14 नवम्बर, 1960 से लेकर स्वर्ण जयंती वर्ष तक मेरा जुड़ाव इस बात का साक्षी है कि संस्था अपने आप में विलक्षणता लिये हुए है और आने वाले समय में भी संस्था इसी प्रकार आगे बढ़ती रहेगी।

सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सहयोगियों के प्रति मेरा आभार।

उपाध्यक्ष
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
एवं सदस्य सम्पादक मण्डल
स्वर्ण जयन्ती स्मारिका

◈◊◈

# सरोकार, स्नेह और सम्बल की अजस्र त्रिपथगा का स्नान

सत्यदीप

**पुस्तकालय में पुस्तक पढ़ता बच्चा**

छात्र जीवन में न आगे की पंक्ति का, ना साब पिछली का, बस अत्यल्प साधनों के बूते कक्षा की सीढ़ी पर सम्हल कर पांव रखता बढ़ता चला। इसी सफर में जब पहली पुस्तक का आस्वाद अनायास ही लग गया। था कोई फटा हुआ रोमानी उपन्यास, कक्षा थी शायद छठी। स्वाद की पुनर्खोज ने कदम बढ़ाये कस्बे के पुस्तकालय की तरफ, एक रुपया वार्षिक शुल्क, पहली बार की सदस्यता शुल्क का जोड़ तोड़ कर बचाया रुपया। पुस्तकों से जुड़ा तो पढ़ता गया, पढ़ता गया। एक डार पांच निडर खलीफा तरबूजी के साथ दानू-भानू ओमप्रकाश शर्मा, वेद कम्बोज के साथ-साथ आचार्य चतुर सेन, प्रेमचन्द, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की रचनाओं को पढ़ने की उत्कंठा के साथ-साथ विभिन्न भाव भूमि की रचनाओं के साथ लालटेन की रोशनी में पाठ्य पुस्तकों के बीच छुपी ये पुस्तकें जैसे मेरे से कभी जुदा हो तो नहीं पायेगी। इन्हीं पुस्तकों के बीच मिले मदन सैनी, जिन्होंने कहा पढ़ते ही हो, लिखते नहीं। मन में झेंप लिए, वहां से चल पड़ा। भीतर की अकुलाहट ने मुड़े-तुड़े शब्द संजोने का प्रयास किया। हौसला बढ़ाया सैनी ने, कहा कि कहीं छपने भेजो। तब तक पांव कॉलेज की चौखट पहुंच चुके थे। पर बच्चा तब भी प्रथम प्राथमिकता में लोट-पोट पढ़ता। बाद में कुछ अन्य सफर में लगा रहा पुस्तक पढ़ता-बढ़ता।

**छप गई पहली कविता**

कड़ी झिझक और डर के साये में कांपते हाथों से बीकानेर के समाचार पत्र युगपक्ष में पहली बार चार मुक्तक भेजे, सत्यनारायण भोजक 'दीपक' ने। कोई आशा नहीं थी। पर मदन सैनी ने खुशखबरी दी, तेरी कविता छप गई है युगपक्ष में। तो जेब की अठन्नी ने मंगवा दिए मोटे भुजिये। अब छपे हुए लेखक के मन की खुशियां कौन समेटे। घर में संस्कार का वातावरण तो था पर शिक्षा-साहित्य के नाम पर शून्य। बस गूंगे के गुड़ की तरह मिठास मन में ही दबाए फूला-फूला घूमता रहा। बाद में लिखी रचनाएं छपती रहीं, छिपती रही पर भीतर का रचनाकार अपने सफर के रास्तों की खोज में लगा रहा, अपने छोटे से कस्बे की, सोनलिया बेळू रेत में हाथ में अपने सपनों को थामे।

**एक ताना जिसने तय कर दिया कविता का सफर**

मदन सैनी, मदन बूटण, भोजराज सोलंकी व मैं साहित्य वार्ता के साथ-साथ लिखी-छपी कविताओं की जानकारी एक दूजे को देना व समझना कि लिखना कैसे सही हो। तो सैनी ने कहा कि हमारे यहां शहर में साहित्य की एक संस्था है राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति। मैं तो उनके पदाधिकारियों से मिल चुका हूं, तुम भी मिल तो लो। हां, सबसे पहले तुम चेतन स्वामी से मिलना, वो बस स्टैण्ड पर किताबों को बेचते हैं। मैं अपनी कुछ प्रिय लिखी हुई कविताएं लेकर गया बस स्टैण्ड और पता किया चेतन का तो, मेरे भीतर के भय की भीत को परे करते हुए जिसने मुझे स्नेह की नजरों से देखा

और कहा, आ भाया कचोरी खा। तो मेरे मन की हिचक मिट गई। मैंने उनसे कहा मुझे मदन सैनी ने भेजा है। मैंने भी कुछ कविताएं लिखी है। देख लें । उन्होंने कहा ठीक-ठाक तो है, पर तुम अभी कच्चे हो।

**भीतर हाथ पसार दे ऊपर मारे चोट**

मेरी साहित्यिक यात्रा में आगे बढ़ते पांवों को मुकाम मिला। साथी मदन सैनी ने सूचना दी कि एक लेखक सम्मेलन राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, सारस्वत भवन में कर रही है। अपने कस्बे में बाहर के बड़े-बड़े नामचीन लेखक आ रहे हैं, उनसे हमें सीखने को मिलेगा, तो हम सभी साथी उस आयोजन में सम्मिलित हुए, वहां की गोष्ठियों में पर्चे पढ़े गए। कुछ समझे कुछ नहीं समझे पर जाना सार्थक रहा। खट्टे-मीठे अनुभवों को संजोये हमने दो दिवसीय कार्यक्रम को सहेजा तो मिले श्याम महर्षि, जिनके बारे में प्रचलित था साक्षात् दुर्वासा हैं। गलती पर फटकारते हैं तो बस बाकी कुछ नहीं छोड़ते। इनसे संभलकर और इनकी कही बात पर मनन करोगे तो यह संस्था तुम्हारे उत्थान का एक बहुत बड़ा सम्बल सिद्ध होगी।

भाईजी ने जो काम मुझे संस्था के लिए सौंपा चाहे किसी स्तर का हो, मैंने उसे माथे लगाकर स्वीकार किया तो उनका स्नेहभाव मुझे निरंतर अब तक प्राप्त होता रहा है। सच में कवि की उक्त उक्ति को साकार करते लगे मुझे श्याम महर्षि–

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, घड़ घड़ काढै खोट
भीतर हाथ पसार दे बाहिर मारै चोट

सच में मेरे साहित्यिक गुरु श्याम महर्षि जो व्यक्ति में संस्था, संस्था में व्यक्ति, फलती-फूलती मेरी अपनी प्रेरणा, अभिव्यक्ति में कठोर नारियल के भीतर की कोमल गिरी के मानिन्द है।

जब मैं आया था कस्बे की इस इकलौती साहित्य अलख की ज्योति-शिखा के सान्निध्य में। विचरण के लिए था खुला आंगन। जहां विचार एवं प्रतिबद्धता के सहारे आगे बढ़ने के अवसर अत्यधिक। पर अनुशासन के अंकुश से हाथी को साधे रखते थे हमारे बड़े अग्रज। शुरुआती दौर की गोष्ठियां अपने आप में बड़ी अभूतपूर्व रहती थी, जम कर लिखने एवं खुलकर बहस करने की आजादी। क्या पढ़ें, क्यों पढ़ें का मार्ग-दर्शन एवं राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर के नामचीनों से संपर्क का अवसर प्रदान कराती त्रिपथगा की अजस्रधारा में स्वयं को भिगो पाने का जो प्रथम आनन्द मुझे मिला। वह मुझे अविस्मरणीय लगता है। संस्था के सपनों को साकार करने में अपना सर्वस्व होम देने वाले श्याम महर्षि, राम उपाध्याय तो सहयोग में रत चेतन स्वामी, मालचन्द तिवाड़ी, मदन सैनी, बजरंग शर्मा एवं अन्यों के साथ मैं भी। सपने देखती संस्था का अपने कर्मठ कार्यकर्ताओं की कार्यक्षमता के बूते साकार होता गया, प्रत्येक देखा गया सपना।

**एन.एच. 11 पर संस्था परिसर**

कार्य विस्तृत होता गया। स्व. चांदरतन डागा द्वारा संस्था को दिया कार्यालय हेतु कमरा। अब लगता था, अब हमारे कार्यक्षेत्र के हिसाब से ज्यादा लिखो और फाड़कर फेंक दो, फिर और लिखो फाड़ कर फेंक दो तब जाकर कवि बन सकोगे भाई, सीधे कवि तुम नहीं बन सकते, तपना पड़ता है। मैंने तपना भीतर स्वीकार किया और नए सिरे से लिखना प्रारंभ किया और ताने ने तैयार कर दी प्रथम काव्य कृति एक बूंद आंसू रो तरपण। जिसकी पुस्तक पर स्वयं भाई चेतन स्वामी ने लिखा बांच बांचनै फैंरूं बांचण आळी रचना। आदरणीय गिरधारीसिंह पड़िहार व मनुज देपावत के समकक्ष रचना, उनके हाथ से लिखे वो राज आज भी मेरी थाती है।

◈◊◈

# व्यक्तित्व विकास का अनुष्ठान : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति

**श्रीभगवान सैनी**

कहा जाता है कि किसी देश को नेस्तनाबूद करना हो तो सर्वप्रथम उसका साहित्य नष्ट कर देना चाहिए। साहित्य के नष्ट होते ही उस देश की संस्कृति नष्ट हो जाएगी और वह अपनी जड़ों से कट जाएगा, पहचान खो देगा। संस्कृति विहीन समाज का पतन निश्चित है। इस उक्ति के आलोक में देखा जाए तो साहित्य हमारी विरासत की वह पूंजी है, जिसे अक्षुण्ण रखना एवं श्रीवृद्धि करना हर नागरिक का परम कर्तव्य है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे श्रीडूँगरगढ़ की पावन भूमि पर पैदा होने का गौरव हासिल है। सोनलिया बालू के ऊंचे टीलों से घिरे इस छोटे से कस्बे में कई हस्तियां ऐसी पैदा हुई, जिनकी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर है और उसमें भी बड़ी बात यह है कि यह पहचान उच्चकोटि के विचारक-चिंतक, कथाकार, कवि और साहित्यकार के रूप में है। जो यह साबित करने के लिए काफी है कि यह छोटा सा कस्बा यूं ही छोटी काशी नहीं कहा जाता। चाहे भूमिगत ही सही आज भी सरस्वती नदी का जल इस कस्बे के लोगों को ज्ञान का अमृत पिलाता रहता है।

जहां तक मेरा 'राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़' से जुड़ाव का प्रश्न है, तो मुझे यह कहते हुए तनिक भी संकोच नहीं होता कि बचपन के दिनों में जब बच्चा संस्थाओं का मतलब नहीं समझता, मैं राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के कार्यक्रमों से जुड़ चुका था। उस वक्त मैं लेखन नहीं करता था, किन्तु लेखकों के प्रति मन में बहुत आदरभाव था। मेरे बड़े भाई श्री मदन सैनी उन दिनों कस्बे के इकलौते हाई स्कूल में पढ़ते थे और स्वयं कहानियां, कविताएं भी लिखते थे, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थी। उन्हें देखकर मन में ललक होती कि काश मैं भी कुछ लिखूं....!

यह बात लगभग 1974-75 की है। तब राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की तरफ से बड़े-बड़े कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाता था और उसमें दूर-दूर से नामचीन कवि बुलाए जाते थे। जिनमें कृष्ण कल्पित, भागीरथसिंह भाग्य, गजानंद वर्मा, तेजसिंह जोधा जैसे कवियों का काव्यपाठ रात भर चलता था और हम लोग (मैं, रवि पुरोहित, केऊमल) जो उस समय तक काव्यपाठ करने अथवा कविताएं लिखने के क्षेत्र में तो नहीं कूदे थे, किन्तु समिति के कार्यकर्ता होने के नाते दरी-पट्टियां उठाने के लिए तत्पर रहते थे और इन्हीं दरी-पट्टियों को उठाते-उठाते, कवियों-साहित्यकारों को सुनते-पढ़ते जो मन में दबी हुई लिखने-बोलने की लालसा थी, उसके बीज अंकुरित होने लगे।

साहित्य के प्रति रुचि को पोषित करने के लिए इस कस्बे के मध्य स्थित दो पुस्तकालय श्रीडूँगरगढ़ पुस्तकालय एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा है, जो पाठकों को उनकी रुचि के अनुसार पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाने के बड़े संस्थान हैं, किन्तु यहां पर पाठक को सिर्फ पुस्तकें ही प्राप्त हो सकती है, चर्चा-परिचर्चा नहीं। साहित्यिक विषयों पर पाठक की जिज्ञासाओं का शमन तो साहित्यिक चर्चा-परिचर्चाएं ही कर सकती है और इनके लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति एक मंच का कार्य कर रही थी। इस संस्था के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं में वरिष्ठ हनुमान पुरोहित से लेकर श्याम

महर्षि और युवा मदन सैनी, चेतन स्वामी, बजरंग शर्मा, सत्यदीप, मालचंद तिवाड़ी, रवि पुरोहित और मुझ तक की वय के लोगों में कहीं भी किसी प्रकार के संकोच को स्थान नहीं था। श्याम महर्षि हमें 'बालक' के संबोधन से पुकारते थे, किन्तु साहित्य-चर्चा में वो हमारी बातों को बड़े ध्यानपूर्वक सुनते थे।

यह वो वक्त था जब संस्था के पास अपना कहने के नाम पर कुछ पुस्तकें थी और कार्यकर्ता थे। साहित्य प्रेमी चांद डागा के मकान में संस्था को एक कमरा कार्यालय के रूप में उपलब्ध करवाया गया था। जहां पर हम लोग कभी कभार पुस्तकों की धूल झाड़ने चले जाते थे, अन्यथा संस्था के जितने भी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनती थी, वो जहां भी श्याम महर्षि, चेतन स्वामी, मदन सैनी और बजरंग शर्मा आदि मिल जाते वहीं तैयार हो जाती थी और फिर सभी श्याम महर्षि के निर्देशन में अपने-अपने कार्य में लग जाते और पता नहीं चलता था कि कैसे राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आयोजित कर लेते थे। इन सेमिनारों में साहित्य एवं इतिहास विषयक तीन-तीन दिवसीय कार्यक्रम भी संस्था ने करवाए। जिनमें नागार्जुन, राजेन्द्र यादव और विष्णु प्रभाकर जैसे साहित्य के महारथी शिरकत करते थे। यह राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति श्रीडूँगरगढ़ के कार्यकर्ताओं की ही कुशलता थी कि बड़े-बड़े शहरों में जाने से मना करने वाले मनीषी भी इस छोटे से कस्बे में आने को लालायित रहते थे, और रहते हैं।

श्री श्याम महर्षि का विचार था कि हम सृजनशील लोगों को साप्ताहिक नहीं तो मासिक एक गोष्ठी अवश्य करनी चाहिए, जिसमें कथाकार-कवि अपनी नवीनतम रचना का पाठ करें एवं उस पर समीक्षात्मक टिप्पणी हो, जिससे हमें अपने विचारों को मांजने का अवसर मिले और उनके इस विचार को हम लोग मूर्तरूप में लाने के लिए मासिक गोष्ठियों में अपनी रचनाएं प्रस्तुत करते एवं उन पर विचार विमर्श भी करते। 1980 में मदन सैनी ने श्रीडूँगरगढ़ में टंकण प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की। इस टंकण संस्थान में भी हम साहित्यकारों की चौकड़ी जमी रहती थी। मदन सैनी के प्रोत्साहन से भी इस कस्बे के कई नए लड़के लेखन के क्षेत्र में अग्रसर हुए, जिसमें महेन्द्र चौरड़िया का नाम उल्लेखनीय है।

ऐसा नहीं है कि इस संस्था से जुड़ाव सिर्फ लेखकों का ही रहा। लेखकों के अलावा कस्बे का प्रबुद्ध वर्ग भी सदैव संस्था के साथ खड़ा नजर आया। संस्था के सहयोगियों में धर्मचंद पुगलिया, भीखमचंद पुगलिया, शिवप्रसाद सिखवाल, तुलसीराम चौरड़िया, रामकिशन उपाध्याय, श्रीकिशन शर्मा, भंवर भोजक जैसे लोग हमेशा जुड़े रहे। लोगों के जुड़ाव का ही प्रतिफल है कि इस संस्था की स्थापना करने वाले लोगों ने जो सपने देखे थे वे आज साकार रूप में हमारे सामने हैं। यह वर्ष संस्था के स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है और हम सब इस पर गर्व कर सकते हैं। आज संस्था के पास स्वयं की भूमि, भवन एवं पुस्तकालय है। जिसमें भिन्न-भिन्न विषयों की साहित्य सामग्री है जो शोधार्थियों के लिए बहु उपयोगी है। शोधार्थियों के लिए संस्था में लेखक कक्ष की भी स्थापना की गई है।

मुझे ऐसा देखने को नहीं मिला है कि कोई संस्था बिना पैसों-साधनों के जीवित रह सकती है, किन्तु जब राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का कोई भी व्यक्ति अवलोकन करेगा, उसे सुखद आश्चर्य होगा कि इसके पदाधिकारियों के पास पैसा नहीं, अपितु कुछ कर गुजरने का ज़ज्बा था और इसी ज़ज्बे के फलस्वरूप वह छोटा सा पौधा जो आज से पचास वर्ष पहले रोपा गया था, आज विशाल वृक्ष बन गया है, जिसकी छाया में कई राहगीर एक साथ सुकून पा सकते हैं।

मेरी कामना है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के बैनर तले जिस प्रकार लोकरंजन-साहित्य चिंतन के कार्यक्रमों में हमारी पीढ़ी तक के लोगों को मार्गदर्शन मिला है, आने वाली पीढ़ी भी इस संस्था को अपने साथ खड़ा पाएगी। संस्था के कार्यकर्ताओं को मेरा नमन।

◈◊◈

# श्रीडूँगरगढ़ राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति मेरे मन में रची है

**फरीद खान**

मैं अक्टूबर 1973 से जुलाई 1978 तक लगभग पांच वर्ष श्रीडूँगरगढ़ में राजकीय सेवा में रहा। मैं वहां की राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय में लिपिक के पद पर बीकानेर से अपनी पत्रकारिता (सा. बीकानेर समाचार) छोड़ कर आया था और एक पत्रकार होने के नाते पत्रकारिता के बीज अभी भी शरीर में थे। मैंने विभाग के सक्षम अधिकारी से बातचीत कर इस शर्त पर वहां ज्वाइन किया था कि तीन-चार माह बाद आपका ट्रांसफर वापस बीकानेर कर देंगे और वैसा ही हुआ। चार माह बाद बीकानेर से मेरे एक शुभचिंतक मित्र का संदेश आया कि आप ट्रांसफर के लिये आवेदन भेजो, जिससे आपकी पोस्टिंग बीकानेर में हो सके। संबंधित सक्षम अधिकारी ने इसके लिए सहमति दे दी है।

परन्तु मैंने उस मित्र को मना कर दिया कि मुझे तो श्रीडूँगरगढ़ में ही रहना है, अब बीकानेर नहीं चाहिये। मैं समझता हूं कि इसका कारण वहां की राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, उससे जुड़े लोग-बाग एवं विशेषकर श्री श्याम महर्षि रहे। यह एक बहुत बड़ा निर्णय था-एक बीकानेरवासी के लिये, क्योंकि बीकानेरी होने के नाते मुझे ज्ञान था कि वहां के रहने वाले की ट्रांसफर कहीं बाहर हो जाये, उसका मन बाहर कभी नहीं लगता। उसकी स्थिति 'जल बिन मछली' जैसी हो जाती है। इस संबंध में अपने मित्रों को कहता रहा हूं कि बीकानेर के रहने वाले को यदि एक दिन 'कोटगेट' दिखाई नहीं दे तो, उसे ऐसा लगता है कि जैसे उसके शरीर में 'आक्सीजन' की कमी होती जा रही है। प्रारम्भ के कुछ दिनों में मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ पर मुझे लगा कि मेरे शरीर की आक्सीजन राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की गतिविधियों से पूरी होती जा रही है। इसी कारण मैंने श्रीडूँगरगढ़ से वापस बीकानेर नहीं जाने का आश्चर्यजनक निर्णय लिया और कालान्तर में मुझे मेरे इस निर्णय का लाभ भी मिला।

यह समिति का प्रारम्भ काल था, श्याम महर्षि से निरन्तर सम्पर्क रहने से मेरे व उनके बीच एक वैचारिक मित्रता बन गई और उसका माध्यम रही हिन्दी प्रचार समिति एवं उसकी गतिविधियां। हम प्रतिदिन इसको आगे बढ़ाने के लिये घंटों विचार-विमर्श करते। विभिन्न संस्थाओं/साहित्यकारों को पत्र लिखते। उनके जवाब आते। हम उत्साहित होते। राज कार्य के बाद इन्हीं कार्यों में व्यस्त रहते व श्यामजी की संगत होने से धीरे-धीरे श्रीडूँगरगढ़ में मन रमता गया।

जनवरी 1974 में विवाह होने के कुछ समय बाद ही मैं अपनी पत्नी को ले आया और जैसे श्रीडूँगरगढ़ का ही हो गया। वर्ष जुलाई 1978 में मेरा राज्य के जनसम्पर्क विभाग में सहायक जनसम्पर्क अधिकारी के रूप में चयन होने तक मैं श्रीडूंगरगढ़ में ही रहा। मेरे इस चयन में भी मैं समिति को एक माध्यम मानता हूं कारण समिति की गतिविधियों के कारण मेरा लिखने-पढ़ने-सुनने का सिलसिला निरन्तर बना रहा।

मैं आज जब भी उन क्षणों को याद करता हूं कि जब वह एक छोटी सी संस्था, जिसने आज वटवृक्ष का स्वरूप ले लिया है, बड़ी प्रसन्नता होती है। यह सब भाई श्यामजी की एवं उनके साथियों की मेहनत का प्रतिफल है। संभव है थोड़ा-बहुत आंशिक योगदान इसमें फरीद खान का भी रहा हो।

उस समय श्रीडूँगरगढ़ चूरू जिले में था। इससे बीकानेर का जब कोई कार्य पड़ता था, उसकी जिम्मेवारी भाई श्यामजी मुझे सौंपते। चाहे कोई समिति का प्रकाशन संबंधी कार्य हो या किसी समारोह/गोष्ठी के लिये वहां के साहित्यकारों को आमंत्रित करना हो।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के माध्यम से मैं आदरणीय वेदव्यासजी के सम्पर्क में आया। उन्हीं की प्रेरणा से उस समय वहां प्रगतिशील लेखक संघ के अनेक आयोजन सम्पन्न हुए। इन सभी में, मेरी भी समिति के एक छोटे कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय भूमिका रहती और जब मैं, अपनी जनसम्पर्क की राजकीय सेवा में श्रीगंगानगर लम्बी अवधि तक रहा, तो मैंने उसी परम्परा को निभाते हुए श्रीगंगानगर में प्र.ले.सं. की स्थापना कर वहां अनेकों कार्यक्रम/आयोजन कराये और उसी प्रकार सम्पर्क/स्नेह भाई वेदव्यासजी से आज भी बना हुआ है।

श्रीडूँगरगढ़ में रहते हुए मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई। उसका जन्म 14 सितम्बर 1975 को हुआ। यानी 'हिन्दी दिवस' के दिन। चूंकि हम समिति के प्रारम्भिक काल में मुख्यतः 'हिन्दी दिवस' को उत्साह एवं उल्लासपूर्ण मनाया करते थे। इसी से मैंने अपनी 'धर्मनिरपेक्ष सोच' एवं हिन्दी प्रचार समिति से जुड़े होने के कारण परिवार वालों की नाराजगी के उपरान्त उसका हिन्दी नाम 'अमित' रखा।

संयोगवश मेरी श्रीडूँगरगढ़ में नियुक्ति के कुछ समय पश्चात् वहां के राजकीय उ.मा. विद्यालय में स्व. गिरधारीलालजी व्यास की पोस्टिंग प्रिंसिपल के पद पर हुई। स्कूली अध्ययन काल में, मैं उनका शिष्य होने एवं बाद में उनकी सोच एवं विचारों से प्रभावित होने के कारण मेरा उनसे पूर्व परिचय था। आदरणीय गुरुजी के वहां आने से समिति से जुड़े सभी लोगों का मनोबल बढ़ना स्वाभाविक था।

फिर क्या था! कुछ ही दिनों बाद गुरुजी ने हम सभी से कहा कि विचार के स्तर पर कुछ रचनात्मक कार्य किया जाना चाहिये। निर्णय हुआ कि समिति के बैनर के माध्यम से, जब भी समय मिले कस्बे की पिछड़ी-गरीब बस्तियों, मोहल्ले में जाकर उनके बच्चों को शिक्षा के प्रति जागृत किया जाये। मैं यहां यह विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा कि जो निर्णय अब सरकार ने लिया है कि सभी को शिक्षित किया जावे। वह कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति ने, उसके सदस्यों ने, गुरुजी के मार्गदर्शन में सन् 1975 में ही प्रारम्भ कर दिया था। अगर धरती पर सौ-दो सौ गुरुजी जैसे लोग पैदा हो जाते तो आप कल्पना कर सकते हैं कि आज हमारा समाज, देश किस स्थिति में होता?

मैं आज भी अपने मित्रों, साथियों से कहता रहता हूं कि श्रीडूँगरगढ़ में व्यतीत किये पांच वर्षों को अपने जीवन का स्वर्णकाल मानता हूं। वहां से जाने के बाद चाहे मैं किसी भी पद पर रहा, पर मैं श्रीडूँगरगढ़ को, वहां की राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति को और उससे जुड़े मित्रों को आज तक नहीं भुला पाया हूं।

इस संस्था के माध्यम से ही मुझे भाई श्यामजी, रामकिशन उपाध्याय, त्रिलोक शर्मा, स्व. चांद डागा, चेतन स्वामी, हनुमानमल शर्मा, मदन सैनी, रतनचंद जैन, मालचंद तिवाड़ी मिले। वहीं साहित्य से अलग सोच रखने वाले अलमस्त भाई जमालदीनजी, मामराज फगेड़िया, करणीसिंह बाना एवं रुकमानंद गट्टाणी जैसे अनेक मित्रों का सान्निध्य/सहयोग एवं स्नेह प्राप्त हुआ।

आज राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के स्वर्ण जयंती समारोह पर मैं समिति से जुड़े सभी पदाधिकारियों/सदस्यों को और विशेषकर भाई श्यामजी को अपने अन्तर्मन से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं अर्पित करता हूं और आशा करता हूं कि भविष्य में भी यह संस्था इसी प्रकार निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

# मेरी अपनी संस्था

◇◇◇ **सुमेरमल पुगलिया** ◇◇◇

आज मुझे बहुत खुशी व गर्व महसूस हो रहा है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाने जा रही है।

यह एक ही व्यक्ति की कल्पना का साकार रूप है। मोचीवाड़ा में एक छोटी सी जगह में मैं स्व. हनुमानजी पुरोहित व अन्य साथियों के साथ बहुत वर्षों पहले एक सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने गया था। मैं गांव में कम ही रहता था। शादी के बाद मित्रों के साथ इस संस्था द्वारा आयोजित सांस्कृतिक आयोजनों में कई बार जाने का अवसर मिला। पनवाड़ी की दुकानों पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों की बैठकें हुआ करती थी। वहीं से आयोजनों की खबर लगती थी। विशेषकर स्व. हनुमानजी पुरोहित (मास्टरजी) हर आयोजन में शामिल होकर मित्रों को प्रेरित कर उनका उत्साह बढ़ाते थे।

इन्हीं आयोजनों में मेरा परिचय श्री श्याम महर्षि से हुआ। फिर धीरे-धीरे उनसे मेरा सम्पर्क बढ़ता ही रहा। मैं संस्था के कार्यों में जुड़ता चला गया। उस वक्त चन्द पुस्तकों के संग्रह के अलावा संस्था की अपनी कोई सम्पत्ति नहीं थी।

अकेले व्यक्ति श्री श्याम महर्षि ने प्रत्येक वर्ष कुछ न कुछ साहित्यिक व सांस्कृतिक आयोजन कर-कर के संस्था को जनमानस तक पहुंचाया और संस्था की शाख को बढ़ाया। आश्चर्य की बात यह होती थी कि वे इन आयोजनों को बहुत ही कम खर्च में बहुत आकर्षक व रोचक आयोजित करते थे। बस कुछ मित्रों का मामूली आर्थिक सहयोग लेते थे। उनकी निष्ठा, मृदु व अल्पभाषी स्वभाव ने संस्था का स्वरूप ही बदल डाला। आज का स्वरूप इसका जीता जागता उदाहरण है।

मैं तो मानता भी हूं और यहां कहता भी हूं कि श्याम महर्षि के मायने ही राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति श्रीडूँगरगढ़ है। ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि वे श्याम महर्षि को स्वस्थ रखें और लम्बी आयु बख्सें, ताकि इस संस्था की प्रतिष्ठा दिनो दिन बढ़ती रहे।

◈◊◈

# साहित्य-संस्कृति
# के
# सोपान

इस सादगी पे कौन न मर जाये ऐ खुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।

# साहित्य, समाज और हमारा समय

वेद व्यास

साहित्य ही समाज और समय की चेतना का मूल स्वर है। हजारों साल से मनुष्य ही शब्द की दशा, दिशा और संभावना तय कर रहा है। आज भी लेखक और पाठक के बीच शब्द ही विचार और व्यवहार को तय करता है। संत तुकाराम ने इसी शब्द और साहित्य के लिए कहा था कि- शब्द ही/एकमात्र रत्न है/जो मेरे पास है/जो मेरे पास है/शब्द ही/एकमात्र वस्त्र है/जिन्हें मैं पहनता हूं/शब्द ही/एकमात्र आहार है/जो मुझे जीवित रखता है/शब्द ही/एकमात्र धन है/जिसे मैं लोगों में बांटता हूं।

शब्द और समय की यह अंतर्यात्रा हमें बताती है कि संसार के सभी मनुष्य चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, राष्ट्र अथवा भाषा के हों उनके अधिकार समान हैं और उन सबका एक ही लोक मंगल का उद्देश्य है। क्रांतिकारी भगतसिंह इसीलिए कहते थे कि–हमें यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि हम सब मनुष्य ही यत्र-तत्र सर्वत्र सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समानता के लिए ही संघर्ष कर रहे हैं। क्योंकि समानता और विकास ही न्याय के दो पहलू हैं। हजारों साल की मानव संस्कृति को नई परिभाषा देते हुए ही कथाकार प्रेमचंद ने 9 अप्रैल 1936 को भारत के पहले लेखक संगठन (प्रगतिशील लेखक संघ) के उद्घाटन उद्बोधन में कहा था कि साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है, उसका दरजा इतना न गिराइए। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सचाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सचाई है। अत: अगर तुझे जीवन के रहस्य की खोज है तो वह तुझे संघर्ष के अलावा और कहीं नहीं मिलने का। सागर में जाकर विश्राम करना नदी के लिए लज्जा की बात है। आनंद के लिए मैं (लेखक) घोंसले में कभी बैठता नहीं। कभी फूलों की टहनियों पर तो कभी नदी तट पर होता हूं। सदियों से चली आ रही शब्द और साहित्य की यह कहानी जब हम आज अपनी 21वीं सदी में पढ़ते हैं तो हमें पता चलता है कि भले ही युग बदल गए हों, लेकिन मनुष्य और साहित्य की यह परम्परा नहीं बदली है। आज भी जहां कहीं मनुष्य है, वह साहित्य में ही बोल रहा है और कविता कहानी बन कर परिवर्तन और विकास की नई अवधारणाएं लिख रहा है। भाषा इसकी भिन्नता है, लेकिन भाव इसकी एकता है। आदिम कबीलाई समाज, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, समाजवाद और अब लोकतंत्र इस मनुष्य के संघर्ष की ही अनुकृतियां है। विज्ञान, औद्योगिकीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी तथा बाजारवाद भी, सभी इस समाज की प्रतिध्वनियां हैं। सत्य केवल यही है कि साहित्य में अनवरत समझ और समय की हलचल ही बोल रही है। लेकिन ज्ञान-विज्ञान के विस्तार ने आज मनुष्य की चुनौतियां और सपने बदल दिए हैं और ऐसे में साहित्य की धाराएं, विचार और विवेक के नए क्षितिज तलाश कर रही है। समाज और समय के इस बदलते हुए चेहरे को पढ़ कर अब हमें जरूरी लगता है कि अमूल्य साहित्य में ही जीवित हैं। मेरा ऐसा अनुभव भी है कि जिस तरह देश और समाज के बुनियादी आधार संविधान से हटाए नहीं जा सकते, उसी प्रकार साहित्य के मूल उद्देश्यों को भी मनुष्य की आकांक्षाओं से अलग नहीं किया जा सकता। वाद और विचारधाराएं भी सभी बदलती रही हैं, लेकिन

मनुष्य की मोक्ष और शांति केवल प्रकृति में ही निहित है। समाज और व्यवस्थाएं सभी इसके आवरण हैं तथा गरीबी, अमीरी, जाति, धर्म, लोकतंत्र और तानाशाही भी सब मनुष्य की चेतना के ही रंग हैं। इसलिए साहित्य में कालजयी शब्दों का वर्चस्व आज भी हमें मार्गदर्शन देता है। हम सब शब्द के उपासक लगातार इस विकल्प पर विचार करते रहते हैं कि शब्द की चेतना का अंतिम लक्ष्य क्या है और समय से मुठभेड़ करने में साहित्यकार की क्या भूमिका हो सकती है। मुझे ऐसा लगता है कि साहित्य में यदि कोई अनहदनाद है तो वह मनुष्य के लिए जगत् कल्याण का ही है और युद्ध और शांति से लेकर समता और न्याय की खोज के सभी संघर्ष पक्ष आखिरकार कलम के प्रत्येक सिपाही को एक प्रगतिशील चेतना से ही जोड़ते हैं और साहित्य को आत्मरंजन की अंधेरी सुरंग से बाहर निकाल कर समाज के व्यापक बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के सरोकार तक ले जाते हैं। आपको याद होगा कि भारत के पहले मुक्ति संग्राम (सन् 1857) की सम्पूर्ण आधारभूत चेतना का निर्माण साहित्य के विचार और सामूहिक उद्घोष ने ही किया था। फिर 1947 की स्वतंत्रता का अभ्युदय भी साहित्य से ही अभिप्रेरित था तो फिर 1961 के विदेशी आक्रमणों का प्रतिरोध भी साहित्य से ही निकला था। वंदे मातरम् और जन-गण-मन जैसे गान साहित्य की ही देन हैं। क्योंकि समय का इतिहास साहित्य में भी मनुष्य को ही दोहराता है। लेकिन हमारे नए भारत में लोकतंत्र की आकांक्षाओं का जो विप्लव अब आया है और ज्ञान-विज्ञान की खोज ने जिस बिखराव और भटकाव का तूफान मचाया है, उससे यह भी तय होता जा रहा है कि साहित्य में समाज और समय के सभी भ्रम और यथार्थ टूट रहे हैं और विचारधाराएं और उपभोक्ता बाजार की नई राजनीति हमारे समय के संघर्ष को बदल रही है। अब न कोई कबीर, न कोई कार्लमार्क्स, न कोई एडम स्मिथ और न कोई महात्मा गांधी हमारे बीच में है। हमारे पास केवल इतिहास में इनके शब्द हैं। मेरा मानना है कि मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति का सच यदि आज भी कहीं सुरक्षित है तो वह अपने समय और समाज की साहित्य चेतना में ही किलकारियां मार रहा है। आज चेतना का यही प्रगतिशील स्वर समाज की अंत:धारा है और हम इसे अपने-अपने दायरों में अपने-अपने आग्रह और सीमाओं में लड़ रहे हैं। कोई सगुण-निर्गुण होकर तो कोई कलावादी-यथार्थवादी बन कर तो कोई नास्तिक-आस्तिक रह कर तो कोई संकीर्णतावादी, उदारवादी दर्शन परम्पराओं में बंट कर समय, राष्ट्र और पूंजीवाद, समाजवाद के झंडे उठा कर चल रहा है। लेकिन साहित्यकार अपनी नियति को जानते हुए भी शब्द और समय की दिशा को बदलने की महाभारत जारी रखता है।

लेकिन आज के समय में साहित्य की सबसे बड़ी चुनौती बाजार से और विज्ञान के प्रयोग से आ रही है। पूरी शताब्दी सिद्धांतविहीन राजनीति, श्रम विहीन सम्पत्ति, विवेकहीन भोग-विलास, चरित्र विहीन शिक्षा, नैतिकता विहीन व्यापार, मानवीयता विहीन विज्ञान और त्याग विहीन पूजा के सात पापों में बदल गई है। अधकचरे लोग विचारधारा के अंत की और कविता की मृत्यु की घोषणाएं कर रहे हैं। किन्तु एक सच्चा साहित्यकार सदैव इस ध्येयवाक्य को याद रखता है कि शब्द कभी मरते नहीं है और विचार कभी डरते नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी का अंतर्नाद शाश्वत रहता है। मनुष्य पिट जाता है किन्तु साहित्य में मनुष्य और समय की परम्परा निर्बाध चलती रहती है। वाचिक परम्परा से ही लिखित परम्परा का विकास होता है और हम सब रचनाकार अपनी-अपनी व्याख्या के साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दुनिया को बदलना सिखाते रहते हैं। अत: हमारा मानना है कि साहित्य में बोलता हुआ यह समाज भी समय की अंतर्ध्वनि ही है और शब्द तथा विचार इसका रूपान्तरण है। कोई राष्ट्र और राज्य साहित्य से अपने को खोजता है तथा आज भी सत्य के प्रयोग एकमात्र साधारण से साधारण लेखक ही करता है। शब्द ही व्यष्टि से समष्टि बन जाता है और एक से अनेक और वर्तमान से भविष्य का पथ प्रदर्शक हो जाता है। भारत में भी समस्त भाषाओं की यह प्रगतिशील साहित्य परम्परा आज भी हमें यही कहती है कि आत्महीनता और आत्ममुग्धता साहित्य में चेतना की पहली शत्रु है, क्योंकि शब्द (लेखक) को एक संत और सूरमा की तरह जीना पड़ता है और सुकरात से लेकर मीराबाई तक विष का प्याला ही पीना पड़ता है।

◈◊◈

# हिन्दी भाषा की साहित्यिक उपलब्धियाँ

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇ **डॉ. मित्रेश कुमार गुप्त** ◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

विश्व साहित्य में चिंतन, मनन, ज्ञान, दर्शन तथा सत्यम्, शिवम् एवं सुन्दरम् की दृष्टि से जीवन के बहुआयामी संदर्भों को स्पर्श करता हुआ हिन्दी भाषा का साहित्य बेजोड़ है। विश्व की अन्य किसी भी भाषा के साहित्य में कला पक्ष तथा भाव पक्ष का कल्पन, बिम्ब, शैली, विविध वाद तथा ओज एवं माधुर्य से भरपूर ऐसा सौष्ठव विद्यमान नहीं है, जैसा हिन्दी में है। विश्व की अन्य भाषाओं में हिन्दी की स्थिति वटवृक्ष की भांति है, जिसकी शाखाएं-प्रशाखाएं उसकी विभिन्न बोलियों एवं ध्वनियों में सन्निहित है। ब्रज, अवधी तथा खड़ी बोली के अतिरिक्त उसकी पूर्वी तथा पश्चिमी बोलियों का नाद सौन्दर्य साहित्य सृजन के क्षेत्र में अपने सौष्ठव के कारण अद्‌भुत गुणों से युक्त है। हिन्दी में विपुल एवं वृहद् साहित्य तो है ही साथ ही उसमें विश्व की अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक मात्रा में संवेदनशीलता एवं मर्मस्पर्शता है। गद्य एवं पद्य दोनों ही क्षेत्रों में चिंतन, मनन एवं अनुशीलन के भंडार के अतिरिक्त उसमें भावनाओं का अथाह समुद्र लहराता है, जो सृष्टि के इन्द्रधनुषी आयामों को अभिव्यक्त करता हुआ माधुर्य एवं सौन्दर्य की निरंतर वर्षा करता है। प्रकृति, समाज, राजनीति तथा जनजीवन से जुड़ी विभिन्न विसंगतियों एवं विद्रूप स्थितियों का वस्तुपरक चित्रण जैसा हिन्दी साहित्य में है वैसा विश्व की अन्य किसी भाषा में नहीं है। गद्य के क्षेत्र में रामचन्द्र शुक्ल की चिंतामणि तथा प्रेमचंद की रचनाएं एवं पद्य के क्षेत्र में निराला, पंत, महादेवी वर्मा, दिनकर की रचनाएं तथा जयशंकर प्रसाद की कामायनी विश्व साहित्य की श्रेष्ठतम कृतियां हैं।

हिन्दी साहित्य के चारों कालों-वीरगाथा काल, भक्ति काल, रीति काल तथा आधुनिक काल का साहित्य अपनी विविधता तथा उत्कृष्टता के उदात्त गुणों के कारण विश्व साहित्य की बहुमूल्य धरोहर है। वीरगाथा काल के चन्दबरदायी, भक्तिकाल के सूर, तुलसी, रीतिकाल के केशव, देव, मतिराम, भूषण तथा आधुनिक काल के भारतेन्दु हरिशचन्द्र, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, प्रसाद, पंत तथा दिनकर हिन्दी जगत् के जगमगाते सितारे हैं। तुलसी के संबंध में तो यहां तक कहा गया है कि–

कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसी पा तुलसी की कला।

सूर तथा तुलसी जैसा उत्कृष्ट साहित्य विश्व की किसी भी काव्य धारा में नहीं है। कविता, कहानी, उपन्यास तथा निबंध लेखन के क्षेत्र में हिन्दी का साहित्य अत्यंत श्लाघनीय एवं कमनीय है। मात्रा की दृष्टि से जितने महाकाव्य, खंड काव्य तथा निबंध, आलोचना, कहानी एवं उपन्यास ग्रंथ हिन्दी भाषा में उपलब्ध हैं, उतने अन्य किसी भी भाषा में नहीं हैं। हिन्दी भाषा का अपना साहित्य अत्यंत सुचारु एवं व्यवस्थित है, जो अपनी सम्पूर्णता की कसौटी पर खरा उतर कर जन-जन हेतु कल्याणकारी है। कला की दृष्टि से अलंकारों की जैसी मनोहर छटा हिन्दी भाषा के साहित्य में है, वैसी

अन्य कहीं दर्शनीय नहीं है। छंद, रस, अलंकार, कल्पना तथा बिम्बों की विविधता के इन्द्रधनुषी रंगों की मनोहर छटा से उद्‌भाषित हिन्दी साहित्य स्वयं में अत्यंत समृद्ध एवं विशाल है। लगभग एक हजार वर्षों से भी अधिक की लम्बी यात्रा करता हुआ हिन्दी का विस्तृत साहित्य विशाल समुद्र का रूप धारण कर चुका है जो विस्तृत होने के साथ ही अथाह गहराई से युक्त है।

हिन्दी साहित्य मानव जीवन के लिए प्रेरणा, स्फूर्ति एवं परिष्कार का स्रोत है। साहित्य के उद्देश्य के संबंध में कहा गया है–

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।

विश्व की अन्य भाषाओं के साहित्य में मात्र मनोरंजन का गुण विद्यमान है, किन्तु भारतीय साहित्य में जीवन के विकास के प्रेरणाप्रद स्रोत विद्यमान है। साहित्य का गुण उसमें प्रवाहित रस की अनन्त धारा है, जो उसे प्राणवान तथा कालजयी बनाए रखती है। हिन्दी भाषा का साहित्य चिरस्थायी, शाश्वत एवं प्रवहमान है। उसकी गतिशीलता सरिता के प्रवाह की भांति तरंगित एवं उल्लसित है। विश्व के अन्य साहित्यों की अपेक्षा हिन्दी भाषा के साहित्य में विशिष्टता के साथ नैतिकता का गुण विद्यमान है, जो उसकी मौलिक विशेषता है। उसी के आधार पर साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। जैसा जिस देश का समाज होगा, वैसा ही उसका साहित्य होगा। भारतीय समाज धर्म, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों से युक्त है, फलस्वरूप उसका साहित्य भी इन्हीं गुणों से ओत-प्रोत है। साहित्य के यही गुण मानव जीवन को आदर्श जीवन की प्रेरणा देकर उसे सुख, शांति से भरपूर बनाए रखते हैं।

हिन्दी साहित्य मौलिक रूप से ओज एवं प्रेरणा का प्रमुख स्रोत है। विविध पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं मानव जीवन के विभिन्न प्रसंगों से प्राप्त कथानकों के आधार पर व्यापक साहित्य की जो रचना हिन्दी में हुई है वह सम्पूर्ण रूप से ओज एवं प्रेरणा के गुणों से भरपूर है। विश्व की अन्य भाषाओं के किसी भी साहित्य में यह गुण विद्यमान नहीं है। उनमें मानवीय गुणों की अपेक्षा मनोरंजन का गुण प्रधान होता है। मानव जीवन से संपोषित सत्य, शिव एवं सौन्दर्य की वास्तविक अभिव्यक्ति केवल हिन्दी भाषा के साहित्य में ही विद्यमान है, जो उसे लोकप्रिय बनाने के साथ ही मर्मस्पर्शी भी बनाए रखती है। मर्मस्पर्शी होना हिन्दी भाषा के साहित्य का अपना ही सार्वभौमिक एवं सार्वजनीन गुण है।

◈◊◈

# पर्यटन क्षेत्र में अग्रणीय राजस्थान

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇ **रामस्वरूप चोटिया** ◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

वीरों के शौर्य, संतों की भाव भूमि, संस्कृति-धरोहर की विशाल पूंजी समेटे, स्वतंत्रता संग्राम के प्रत्येक क्षण का साक्षी रहा। स्वतंत्रता अलख के प्रवक्ता रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द की प्रेरणा का स्रोत बना। अपने आंचल में पुरातत्त्व की थाती समेटे मन्दिरों, सूफियाना भाव भूमि की कर्म स्थली रहा, तब का राजपूताना वर्तमान राजस्थान। अगर विश्व में भारत, भारत में राजस्थान को संपूर्ण विश्व का प्रतिनिधि कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अरावली पर्वत श्रृंखला के रूप में पर्वतों का प्रतिनिधित्व करती गुरु शिखर चोटी। नदियों की कल कल में योगदान देती चम्बल-बनास, झीलों में उदयपुर-आबू की झीलें, रेत के समंदर के रूप में थार मरुस्थल का हिस्सा तो कहीं मैदानों की उपजाऊ भाव भूमि का विराट् क्षेत्र।

देलवाड़ा के जैन मन्दिरों की श्रृंखला, झालरापाटन के मन्दिरों की विशाल श्रृंखला विभिन्न कलाकारों की महीन कारीगरी के इतिहास को समेटे सीमांत जैसलमेर की पटवों की हवेलियां और भाटी वंश का गढ़ जैसलमेर।

बीकानेर का सुप्रसिद्ध भांडाशाह का प्राचीन जैन मन्दिर तो देशनोक का विश्व विख्यात करणी मन्दिर, सामाजिक समरसता का प्रतीक रामदेवरा, गोगामेड़ी व पुरातत्त्व की थाती कालीबंगा-रेगिस्तान में मानो नखलिस्तान उभर गया हो।

भारत के पेरिस जयपुर की स्थापत्य सम्पदा सवाई जयसिंह के कला एवं संस्कृति प्रेम को सूर्य किरण की भांति उजागर करता है। यहां का जंतर मंतर, हवामहल, म्यूजियम मन को मोह लेता है।

सीकर में शाकम्भरी, जीण हर्ष मन्दिर, खजुराहो की स्थापत्य कला का प्रतिनिधि बने पर्यटकों का मन मोहे बिना नहीं रहते हैं।

इस्लाम की सूफी विचारधारा के चिश्ती सम्प्रदाय के महामना का स्थल दरगाह जहां आकर साम्प्रदायिक सौहार्द फलीभूत हो रहा है तो तीर्थ गुरु पुष्कर की अतिपावन भूमि जहां किंवदंती मुताबिक सभी पापों का क्षरण होता है, आकर्षक पर्यटन क्षेत्र के रूप में अग्रणी है तो श्रीकोलायत की कपिल मुनि की तपस्थली जो सांख्य दर्शन का प्रमुख केन्द्र है।

यहां का चित्तौड़ एक तरफ वीर प्रसूता स्थल रहा है तो दूसरी ओर स्थापत्य का बेजोड़ घर रहा है। प्रथम देव गणेश का प्रसिद्ध मन्दिर रणथंभोर (रणत भंवर) अपना एक अलग महत्त्व रखता है।

संस्था ने भूमि क्रय करने का विनिश्चय किया, सभी परिस्थितियों की धूप-छांव में एन.एच. 11 पर भूमि प्राप्त हुई। संस्था की गतिविधियां निरंतर अपने उच्च स्तर पर प्रगति पथ पर अग्रसर होती रही। संस्था साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा में अपनी मंजिलें राष्ट्रीय स्तर पर एक अहम भाव भूमि का सृजन करते हुए करती रही।

राष्ट्रीय स्तर के सेमिनारों में सहभागिता निभाती हुई यह संस्था अपने परचम को फहराती हुई अपनी अमिट छाप छोड़ती रही। अनेक बुद्धिजीवी, सांस्कृतिक सोच के स्वनामधन्य व्यक्तित्व के आगमन की साक्षी बनती रही, जिनमें बाबा

नागार्जुन, विष्णु प्रभाकर, राजेन्द्र यादव, नामवर सिंह आदि का नाम प्रमुखता से है, जिनके सान्निध्य लाभ से ओत-प्रोत होती रही हमारी मन यात्रा। सच में एक सुख स्मृति से सराबोर हम और संसाधनों से सराबोर होती कस्बे की अग्रणी संस्था हमारी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति। भरापूरा स्वच्छ हरित प्रांगण, विशाल सभाकक्ष, शोधकक्ष, मंत्रीकक्ष और अपने भीतर पुस्तकों का विशाल समंदर समेटे राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, हर आगंतुक का मन मोहे बिना नहीं रहता। हर अतिथि अपने मन में संस्था के प्रति सकारात्मक एवं संस्था के कार्यकर्ताओं के प्रति आदर भाव लेकर ही जाता है।

संस्था को इस विकास यात्रा के प्रगति शिखर पर पहुंचाने में साहित्य सृजकों की रचनात्मकता के साथ-साथ नगर के प्रबुद्ध भामाशाहों एवं स्थानीय विधायक श्री मंगलाराम गोदारा की सहयोग भावना ने विस्तार देने में अपनी अहम भूमिका का निर्वहण किया, जिसे सहेजा संस्था में व्यक्ति, व्यक्ति में संस्था को जीते व्यक्तित्व श्री श्याम महर्षि ने।

सच में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति जिसकी स्थापना आज से पचास वर्ष पूर्व हुई थी, से विगत तैंतीस वर्षों से मैंने जुड़ कर जो पाया है, वह निश्चित रूप से मेरे लिए अनिवार्य है। मैं सदैव इसका एक साधारण सा कार्यकर्ता बना रहूं। तीसरी पीढ़ी के साथ मिलकर हीरक जयन्ती का साक्षी बनूं, यही कामना है मेरी। मेरे लिए स्नेह की अविरल अजस्र त्रिपथगा की धारा के निरंतर प्रवाह की मनोकामना।

औद्योगिक नगरी व शिक्षा क्रांति की भाव भूमि कोटा का अपना अस्तित्व एक ऐसी माटी के रूप में प्रसिद्ध जिसमें राजस्थान के भावी विकास का सपना फलीभूत हो रहा है।

खाटू के श्यामजी, सालासर, मेहन्दीपुर बालाजी, शक्ति स्थलों की नगरी झुंझुनूं की गौरव गरिमा निश्चित रूप से राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र की ध्वजा को सबसे ऊंचा रखने में समर्थ हैं। शेखावाटी के भित्तिचित्रों की शृंखला विश्व के पर्यटन मानचित्र में अपना अहम स्थान रखती है, जैसलमेर के लोकगायकों की धुनों पर थिरकती स्वर लहरियां तो बीकानेर की अल्लाह जिलाई बाई की माड गायकी, भरतपुर की ख्याल परंपरा, शेखावाटी की गींदड़, बीकानेर की रम्मतें अपनी अहम भूमिका का निर्वहण करती है। सच ही कहा है–

सियालो सीकर भलो, उन्हालो अजमेर,
मारवाड़ नित रो भलो, सावण बीकानेर।

मीरा-दादू की भक्तिकाव्य धरा, कन्हैयालाल सेठिया की देव रमण करने वाली पर्यटक क्षेत्र की अग्रणी धरती राजस्थान और अग्रणी पर्यटन की शत शत वंदना, अभिवंदना।

◈◊◈

# पांच सौ वर्ष पूर्व धोरों की धरती पर लिखी गई राजस्थानी रामायण

श्याम महर्षि

हमारे देश में रामकाव्य लेखन की परम्परा बहुत प्राचीन रही है। वाल्मीकि रामायण की रचना के पश्चात् देश-काल के अनुसार इस महाकाव्य में स्थानीयता का प्रभाव घटता-बढ़ता रहा है। संस्कृत भाषा में सृजन होने के पश्चात् यह काव्य क्रमशः प्राकृत, पाली और अपभ्रंश भाषाओं में भी लिखा गया है। इन भाषाओं में जैन साहित्य, वैष्णव परम्परा तथा वैष्णव लोक धर्म परम्परा के माध्यम से रचित ग्रंथों में विभिन्न प्रकारान्तर रचनाओं का ज्ञान होता है। पूरे देश में इस प्रकार की विभिन्न रामायण देखने को मिलती है।

मेहा गोदारा कृत रामायण राजस्थानी भाषा का प्रथम आख्यान काव्य है। जिस समय इस ग्रंथ की रचना हुई थी, उस समय तक तुलसीकृत रामचरितमानस रामायण का सृजन नहीं हुआ था।

धोरों की धरती पर स्थित ग्राम भोजास[1] तहसील श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) में संवत् 1540 में जन्मे मेहा गोदारा ने वि.सं. 1575 में रामायण की रचना की। रचनाकाल में यह इलाका बीकानेर नरेश राव बीका के छोटे पुत्र राव लूणकरण के आधीन था। यद्यपि इस क्षेत्र में गोदारा जाट जनपद भी बने हुए थे, जिन्होंने बीकानेर नरेश की अधीनता स्वीकार कर ली थी। मेहा की इस रचना का स्थान अपने जन्म स्थल भोजास के उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित ग्राम रूणियां[2] रहा, जहां वे कई वर्ष तक रहे।

मध्यकाल की इस आख्यान काव्य कृति पर दृष्टि डालने से पूर्व धोरों की इस धरती (जांगल प्रदेश) की साहित्यिक स्थिति पर प्रकाश डालना उचित होगा। पूरा राजस्थान विशेषकर उत्तर-पश्चिमी इलाका संकटों से घिरा हुआ था। इस काल में साहित्य की दो धाराएं प्रचलित थी। ऐसा वीर काव्य जिसमें यहां के कवियों की रचनाओं में वीरता और भावना भर रहे थे। दूसरी तरह जन जीवन में एक नई लहर हिलोरें ले रही थी और इस भावना को बढ़ावा दे रहे थे, यहां के संत और भक्त कवि। निरन्तर इस इलाके में संतों ने निर्गुण भक्ति की वाणियां रची, परन्तु लोगों में सगुण उपासना का प्रचार प्रसार भी हुआ। लोग मंदिर और देवली पर दर्शन और पूजा करने में विश्वास रखते थे। कवि मेहा के समकालीन भक्त कवि जिनमें श्रीधर व्यास, बारहठ आसा, बारहठ इसरदास, कवि अलू, सिद्ध जसनाथ, जांभोजी तथा मीरा बाई विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इससे स्पष्ट है कि मेहा से पूर्व भी अनेक भक्त कवि हुए हैं, जिससे भक्ति आंदोलन को बल मिला। मेहाकृत रामायण[3] राजस्थान की इस धरती पर पहला आख्यान काव्य है, इस परम्परा में आगे जाकर डेल्हजी की 'कथाअहमनी' तथा पदम भगत की 'हरजी रो ब्यावलो' प्रसिद्ध आख्यान काव्य लिखे गये।

प्राचीन पाण्डुलिपि के रूप में इस ग्रंथ की मूल प्रति तो उपलब्ध नहीं है, परन्तु लिपिबद्ध हस्तलिखित प्रतियां 17वीं व 18वीं शताब्दी की अवश्य पाई जाती है।

आज भी इस रामायण के छंदों को बीकानेर मण्डल की तहसील श्रीडूँगरगढ़ के ग्रामों में रात्रिकालीन गायन तथा रात्रि जागरण में सुना जा सकता है। ग्राम के लोग यह दोहा कुएं से पानी निकालते वक्त बोलते रहे हैं–

**राम खुदायो रामसरो, लिछमण बांधी पाळ।**
**राम सींचे रामसरौ, सीताजी पिणहार।।**

इसी भांति दैनिक जन जीवन में यह दोहा भी प्रचलित है–

**राम कहै रै लिछमणा, तकार बाही तीर।**
**उतर्‌या पाणी ना चढ़े, गढ़ गिरवरां नीर।।**

इससे इस रामकाव्य की आख्यान काव्य के रूप में पुष्टि होती है। मेहाकृत रामायण में अनेक घटनाएं परम्परागत रामायण से हटकर है। मेहा अपनी रचना को अपनी जमीन की संस्कृति और वातावरण से अलग नहीं रख सके।

मध्यकालीन भारत में जब पूरा भारतीय समाज मुसलमान शासकों से आक्रांत था तथा देशी रजवाड़े अपने खुद के स्वार्थ के लिए अपनी आन-बान त्याग चुके थे। सामाजिक अराजकता का दौर चल रहा था, उस समय आम आदमी केवल प्रकृति की माया समझ कर ही सब कुछ सह रहा था। पूरे देश में जन जागरण के नाम साधु-संतों का प्रादुर्भाव हुआ। इस काल में देश के विभिन्न भागों में विभिन्न भाषाओं में राम काव्य 'रामायण' की रचना हुई। ग्वालियर के पं. विष्णुदास रचित रामायण (सं. 1499), ब्रह्म जिनदास जैन ने सं. 1508 में रामरास, कर्मण मंत्री ने (सं. 1526 में) रामकथा, ईश्वरदास ने सं. 1558 में भरत मिलाप, माधोदास दधवाड़िया ने रामरासो तथा नरहरिदास ने सं. 1648 में अवतार चरित तथा गोस्वामी तुलसीदास ने सुप्रसिद्ध रामचरितमानस की रचना की। इसी काल में मेहा गोदारा की 261 छन्दों में लिखी यह कृति भाव, भाषा शिल्प तथा कल्पना की दृष्टि से बेजोड़ है। मेहा गोदारा कृत रामायण की कुछ विशेषताओं का उल्लेख द्रष्टव्य है।

इस कृति में रामायण के मुख्य पात्र राम से कवि तालाब खुदवाता है। जल इस भू-भाग में कम होने के कारण इस प्रकार की कल्पना की हो–

**रामखंणावै रामसर, लछमण बंधे पाल्य।**
**सीरि सोने रो बेहड़ो, सीता पण्यहारि।।**
**हांथि कटोरो सिरि घड़ौ, सीता पाणी जाय।**
**चंपो मरवौ केवड़ौ, सींचै छै वंणराय।।**

अर्थात् राम तालाब खुदवा रहे हैं। लक्ष्मण उसकी पाल (सीमा) बंधवा रहे हैं। सीता सिर पर स्वर्णकलश रखे हुए पानी ला रही है। इसी प्रकार हाथ में कटोरा लिए तथा सिर पर घड़ा लिए सीता पानी लाने जाती है। चम्पा, मरवा तथा केवड़े आदि पौधों को सींचती हैं।

मेहा गोदारा ने अपनी कृति में भोज का नाम अनेक बार प्रयोग किया है, जो रामायण परम्परा से हट कर है।

**रावण लंका जाय करि भोज मुझ सुणाय।**
**(वे) कुण छा सीता परणग्या खवरि लियाओ जाय।।**

रावण ने लंका जाकर भोज से कहा कि सीता को विवाह कर ले गये, वे कौन थे। जाकर पता लगाओ।

**राम रोवै लक्ष्मण धीरवै, गणवंत मेल्है चीस।**
**सीत गई तो जांण दे, अवरअणाऊ बीस।।**

सीता गई तो जाने दे, वैसी बीस और ला दूंगा। यह उल्लेख भी परम्परागत रामायण के तथ्य से हट कर है।

रावण जब सीता को हर कर लंका ले आता है तो वहां रावण की पटराणी मंदोदरी रावण को समझाती है तो रावण कुपित होकर कहता है–

**खाय पीय विलसै धन मेरो, राम-राम पुकारे,**
**है कोई इणि लंक नगर मां तया गलो दे मारे।**

मेरे धन से खाती-पीती है, विलास करती है और गुणगान तू राम का करती है और इस लंका में है कोई जो इसे गला घोंट कर मार दे। कवि रामायण को ध्यानपूर्वक सुनने पढ़ने वालों को मिलने वाले पुण्य की ओर ध्यान इंगित करते हुए कहते हैं–

**अड़सठ तीरथ जो पुन न्यायां, सुणो रामायण कांने**
**पढिया ने मेहो समझावे, धापौ धरम धियां ने**

मेहा कहते हैं-रामायण को ध्यान से पढ़ने-सुनने से ही वास्तविक तुष्टि होती है। रामायण को सुनने से अड़सठ तीर्थ नहाने समान पुण्य लाभ होता है।

मेहाकृत रामायण भारत की किसी भी भाषा में लिखे राम काव्य से पिछड़ा हुआ नहीं है। यद्यपि यह रामायण जैन धर्म के आचार्यों द्वारा रचित राम काव्यों से प्रभावित हुई लगती है। संभवत जैन आचार्यों से कवि की भेंट होती रही हो।

इस इलाके के चारों ओर जैन आचार्यों और मुनियों का प्रभाव था। भटनेर (हनुमानगढ़) नागौर, रीणी (तारानगर), कोयलापट्टण फोगां (तहसील सरदारशहर), बापेऊ, शेरूणा व इन्दपालसर तहसील श्रीडूँगरगढ़ जैन धर्म के प्रमुख स्थल थे। इसके बावजूद भी मेहाकृत रामायण वैष्णव लोक धर्म परम्परा की एक उत्तम कृति है।

◈◈◈

---

1. भोजास ग्राम बीकानेर (राज.) से 60 किमी. पश्चिम में दिल्ली बीकानेर रेलवे लाइन से सटकर है, जहां आज कल राजपुरोहितों की आबादी है, कालान्तर में गोदारा जाट यहां से अन्यत्र चले गये।
2. यह ग्राम बीकानेर-पूनरासर के कच्चे मार्ग पर बीकानेर मण्डल में स्थित है।
3. सीता को रावण द्वारा हर कर ले जाने के पश्चात् जब रामचन्द्रजी विलाप करते हैं, तो रामभक्त हनुमान कहते हैं।

   इस कृति का सम्पादन राजस्थानी में श्याम महर्षि द्वारा तथा हिन्दी में डॉ. हीरालाल माहेश्वरी द्वारा किया जा चुका है।

# डायरी के पन्नों में पसरा है गौरवशाली अतीत

*राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा अब तक केन्द्रीय साहित्य अकादमी, दिल्ली, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर, संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, आई.सी.एच. आर, दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार और संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार जैसी अनेकानेक संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, शोध एवं जन-जागरण व सामाजिक सरोकारों से जुड़े न जाने कितने यादगार सम्मेलनों, समारोहों और संगोष्ठियों का आयोजन किया जा चुका है। संस्था की आयोजन-दृष्टि और स्वरूप को देश-प्रदेश के सम्भागीजन मुक्त-कण्ठ से सराहते और प्रशंसित करते रहे हैं। वैचारिक प्रतिबद्धता और साहित्य की इस तपोभूमि के रूप में क्या सोचते और कहते हैं विद्वान अतिथि? यही जानने का प्रयास है डायरी के पन्नों में दर्ज उनके ये उद्‌गार।*

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ का नया परिसर और उसकी गतिविधियां इस बात के प्रति आश्वस्त करती है कि साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में काम करने वाले रचनाकर्मियों का विश्वास और मनोबल आज भी जीवंत और जिजीविषा से युक्त है।

श्रीडूँगरगढ़ में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति ने बरसों से सक्रिय रहते हुए अपनी एक अलग पहचान बनाई है, और इस परिक्षेत्र के लेखकों और संस्कृतिकर्मियों को लेखन और रचनात्मक गतिविधियों से जोड़े रखने का अधिक श्रम किया है। इस संस्था से जुड़े साथियों का उत्साह और उनके प्रयास वाकई संस्कृति के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए अनुकरणीय मिसाल है। इस संस्था के प्रति मैं अपने लगाव को इस नये परिसर में आकर और भी जीवंत और मुखर होता हुआ पाता हूं। यह संस्था इसी तरह विकसित और पल्लवित होती रहे–

इसी शुभकामना के साथ !

**नंद भारद्वाज**

निदेशक, दूरदर्शन, जयपुर

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के 'संस्कृति परिसर' में आकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं तथा श्री श्याम महर्षिजी के सद्‌प्रयासों व सृजनात्मक जुनून को प्रेरणामयी महसूस कर रहा हूं।

धोरों की धरती के बीच संस्कृति संरक्षण का जो महत्त्वाकांक्षी कार्य लम्बे समय से श्यामजी कर रहे हैं, वो प्रशंसनीय तो है ही साथ ही एक युगीन कार्य भी है।

मैं श्यामजी व उनके साथियों का आभार व्यक्त करता हूं कि वे सर्जना को समर्पित हैं। श्रीडूँगरगढ़ का यह संस्थान व परिसर राष्ट्र की आगीवाण रचना भूमि बने,

इसी कामना के साथ,

सादर ।

**रमेश बोराणा**

अध्यक्ष, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर

शोधार्थियों के लिए राष्ट्रभाषा समिति ने अध्ययन की जो व्यवस्था कर रखी है, वह सराहनीय है। लेखक के ठहरने की व्यवस्था भी की हुई है। मैं इनके प्रयास को स्तुत्य मानता हूं व इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

**जेठमल व्यास, आर.ए.एस.**
जयपुर

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति श्रीडूँगरगढ़ परिसर में आने व यहां का भवन एवं पुस्तकालय देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इसकी गतिविधियों से मैं पहले से परिचित हूं। इसके कार्य व प्रगति को देखकर उत्साहित हूं। इस संस्था का विकास जिस प्रकार से हो रहा है और सामाजिक क्षेत्र से जो सहयोग मिल रहा है, उसे एवं श्री श्याम महर्षि की लगन, तत्परता, चिंतन व प्रयास को देखते हुए उत्तरोत्तर यह संस्था शोध और साहित्य के क्षेत्र में भविष्य में कारगर कार्य कर पाएगी और श्रीडूँगरगढ़ को साहित्यिक क्षेत्र में भारत भर में प्रसिद्धि दिलाएगी, ऐसा लगता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वो संस्था को साधन सम्पन्न बनाने और शोध व सांस्कृतिक क्षेत्र में ठोस कर्म करने की शक्ति दे। बीकानेर संभाग में जो सांस्कृतिक विरासत फैली हुई, विद्यमान है, उसके लिए अथक प्रयास, लगन, साधनों व कर्तव्यनिष्ठा की जरूरत है। इस दिशा में इसके प्रयास प्रशंसनीय है।

**मूलचंद पारीक**
स्वतंत्रता सैनानी
मंत्री, ऊर्जा, खादी ग्रामोद्योग संस्थान
एवं भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का परिसर, आस-पास फैले रेत के टीबों से आत्मीय संवाद बना सका, श्री श्याम महर्षि व समिति के अन्य सदस्यों के लम्बे रचनात्मक प्रयास का ही यह सुफल है। साहित्य, भाषा, संस्कृति, इतिहास, नृ-विज्ञान आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में यहां निरंतर गतिविधियां होती रहेगी और अभिव्यक्ति का यह सार्थक मंच बन सकेगा–मैं ऐसी शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं।

यहां आकर और यहां से ढलुवां टीबों पर फैली धूप को देखना एक सांस्कृतिक अनुभव है। श्री महर्षि को धन्यवाद।

**रामानंद राठी**
रा. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

यहां आकर श्री श्याम महर्षि और इनके साथियों के श्रम व तप के साक्षात् दर्शन हुए। आनंद की अनुभूति हुई। शोध, सृजन और संस्कृति का यह केन्द्र मायड़ भाषा का आशीर्वाद प्राप्त कर चुका है, इसलिए यह अवश्य ही पनपेगा और सभी का प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

**मंगल सक्सेना**
कवि, रंग निर्देशक
उदयपुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ का अवलोकन किया, बहुत ही अच्छा लगा। हमारी सांस्कृतिक धरोहर का जिस प्रकार से यह संस्था शोध कर रही है, यह अपने आपमें बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है। मैं इस संस्थान के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

**रामसिंह कस्वां**
सांसद, चूरू

श्रीडूँगरगढ़ की राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति जिस निःस्पृह भाव से हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए कार्य कर रही है, इसे देख कर मैं अभिभूत हूं। आज जब सरकारी कार्यालय हिन्दी के नाम पर करोड़ों रुपये सरकार से लेकर हिन्दी दिवस पर जिस तरह के पुरस्कारों के रूप में उस धन की बंदरबांट कर रहे हैं, पचास हजार रुपये से ऊपर खर्च कर हर कार्यालय में पत्रिकाएं निकाल अपनी लेखकीय कुंठाओं की भड़ास निकाल रहे हैं, उसको देखते हुए श्रीडूँगरगढ़ की राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के कार्य एक आदर्श हैं। संगमन-10 में उनका सहयोग अतुलनीय है।

**अमरीक सिंह दीप**
कानपुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ के साथियों से मिलकर जो उल्लासकारी अनुभव हुआ, वह मेरी स्मृति का स्थायी हिस्सा बन गया है। हिंदी भाषा और साहित्य में इसकी निष्ठा, लगाव व कार्यशीलता अनुकरणीय है। सबसे अधिक सुखद अनुभूति कराई उन युवा साथियों ने जो संगमन के कार्यक्रमों में संलग्नता से जुटे रहे और साथ ही गोष्ठियों के सजग श्रोता भी बने रहे। काश ऐसा अन्य स्थानों पर भी देखने को मिले।

श्रीडूँगरगढ़ की यह साहित्यिक पहचान युग-युग तक बनी रहे।

**विभांशु दिव्याल**
नई दिल्ली

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ के बालुकामय परिसर में पुस्तकें, पांडुलिपियां, वाचनालय, शोधकक्ष, लेखक-आवास को देख कर लगा मरुस्थल में ज्ञान-गंगा की स्रोतस्विनी के उत्स पर खड़ा हूं। यहां के नौनिहालों को यह निरंतर अनुप्राणित करती रहे–इस कामना के साथ श्याम महर्षि, बजरंग शर्मा, सत्यनारायणजी जैसे भगीरथों को सादर नमन।

**संजीव**
सहायक सम्पादक, हंस, नई दिल्ली

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ इस क्षेत्र में साहित्यिक-सांस्कृतिक संदर्भों को जिस ढंग से सहेज रही है, वह स्तुत्य व अनुकरणीय है।

**महेश कटारे**
ग्वालियर

इस छोटे कस्बे में इस पुस्तकालय का होना हमारे लिए सीखने की बात है।

**देवेन्द्र**
लखीमपुर

यह एक अद्‌भुत अनुभव है कि इस कस्बे में पुस्तक संस्कृति इतने स्नेह से पोषित की जा रही है। शुभकामनाएं।

**ओमा शर्मा**
गौरेगांव, मुम्बई

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ मेरा अपना अन्तरंग प्रवास क्षेत्र है, जहां मैं थोड़े-थोड़े अन्तराल से आता ही रहा हूं और आता रहूंगा। संगमन के आज से इस बार समिति से जुड़े स्नेहिल मित्रों ने जिस तरह का स्नेह सम्मान दिया और सत्कार की श्रेष्ठतम परम्परा का निर्वाह किया। उसकी तुलना किसी अन्य विधि से नहीं की जा सकती। निरन्तर सजग और जागरूक रह कर श्रेष्ठों और ज्येष्ठों के निर्देशन में उगती पीढ़ी ने भी कई तरह के कष्ट उठा कर उज्ज्वल परम्परा का निर्वाह किया, उसके लिए मैं संगमन से जुड़े सभी मित्रों की ओर से हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। याद रहेगा श्रीडूँगरगढ़ जियेंगे हम इसे मीठी स्मृतियों में अनुदिन।

**से.रा. यात्री**
गाजियाबाद

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ के परिसर का अवलोकन किया। मुझे श्रीडूँगरगढ़ में लगभग सवा साल का समय हो गया, इतनी अवधि तक यहां नहीं आ पाने का पछतावा हुआ। मैं पहले यहां आ पाता तो निश्चित रूप से मैं इसका अधिक लाभ ले पाता। अभिलेख, पुस्तकें, पाण्डुलिपियां बहुत ही सुव्यवस्थित रूप से सहेजी हुई है। यह सरस्वती का खजाना है।

**गोपाल बिरड़ा**
उपखण्ड अधिकारी, श्रीडूँगरगढ़

आज दिनांक 17 दिसम्बर 2006 को राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का पुस्तकालय एवं वाचनालय देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्रीडूँगरगढ़ जैसे स्थान पर साहित्यकार माननीय श्री श्याम महर्षिजी का प्रयास बहुत ही जन उपयोगी है। श्रीडूँगरगढ़ की जनता को महर्षिजी की यह अनुपम भेंट भी पीढ़ी के लिये प्रेरणा स्रोत रहेगी। मैं स्थान की प्रगति एवं उन्नति की कामना करता हूं।

**नंदकिशोर सोलंकी**
जिलाध्यक्ष, भाजपा (शहर), जिला बीकानेर

मैं आज अच्छे संयोग से ऐसा विचित्र अनुभव कर रहा हूं कि एक व्यक्ति की इच्छाशक्ति क्या कुछ नहीं कर सकती। मैं इस संस्था को देखकर दंग रह गया हूं कि हिन्दी की जो मूक सेवा इस संस्थान द्वारा की गई है और की जा रही है, वह सराहनीय है।

**निरंजनलाल सराफ**
बैंगलोर

पुरातत्त्व को समेट कर, वर्तमान को साथ लेकर, नई पीढ़ी को धरोहर के रूप में प्रदान करना-राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ का ऐतिहासिक कदम है। सभी सदस्यों को शुभकामनाएं, बधाई।

**डॉ. श्रीमती अजित गुप्ता**
अध्यक्ष
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की जानकारी यहां से प्रकाशित पत्रिकाओं व पुस्तकों के माध्यम से थी। इच्छा प्रबल थी कि इस संस्था को देखूं भी। आज संस्था को देख कर मैं गहरे तक प्रभावित हूं। इस व्यवसाय व व्यापार के युग में साहित्य, भाषा व संस्कृति के लिये किये जा रहे संस्था के कार्य प्रशंसनीय है। स्तुत्य है, मेरी शुभकामनाएं।

**रतनशाह**
अध्यक्ष
रा.प्र. सभा, कोलकाता

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ द्वारा संचालित इस सतत यज्ञ में आकर जिस आत्मिक सुख की अनुभूति हुई है, वह वर्णनातीत है। भाई श्याम महर्षि और उनके सभी साथी, सहयोगी बधाई के पात्र हैं। वास्तव में इस अभियान का प्रचार-प्रसार वांछनीय है, क्योंकि तभी यह एक आंदोलन का रूप लेगा, जिसकी समाज को आज जरूरत है। एक बार फिर से आने की प्रबल इच्छा के साथ जा रहा हूं।

**सुधांशु मिश्र**
जयपुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ के इस संस्थान के अवलोकन से सुखद अनुभूति हुई। श्रीडूँगरगढ़ जैसी छोटी जगह में इस प्रकार का शोध संस्थान होने से यह विश्वास किया जा सकता है कि हमारी भाषाएं और समृद्ध होगी। संस्थान के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

**सुरेन्द्रसिंह सान्दू**
आर.जे.एस.
श्रीडूँगरगढ़

केवल भव्य भवन ही नहीं है, सुन्दर है पुस्तक भंडार, पाठक लाभान्वित होते हैं, शोधकर्ता भी है सुसंस्कार। महर्षिजी का परिश्रम इसमें, अन्य साथियों का सहयोग, संस्था नित्य करे प्रगति, पाए नित नए संयोग।

**प्रो. सुमेरचंद जैन**
बीकानेर

मैंने आज राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ के भव्य भवन का अवलोकन किया। इसके संस्थापक श्री श्याम महर्षि मेरे बहुत पुराने मित्र या यूं कहूं कि मेरे साहित्यिक गुरु रहे हैं। राष्ट्र भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार में

इनकी तपस्या देख कर मैं अभिभूत हूं। मुझे विश्वास है कि राष्ट्रभाषा के लिए किये गये इनके कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर अवश्य मान्यता मिलेगी। विशेष रूप से राष्ट्रपति भवन के सेन्ट्रल हॉल में।

यही मेरी शुभकामना है।

सादर ।

**बाबूलाल खांडा**

पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार

मैंने आज राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ के भव्य भवन का अवलोकन किया। यह संस्था हिन्दी भाषा एवं पुस्तकालय के समग्र विकास के लिए समर्पित है। मुझे विश्वास है कि संस्था के कार्यों से व्यक्ति, समाज, प्रदेश और देश लाभान्वित होगा। मैं व्यक्तिगत रूप से श्री श्याम महर्षि का आभारी हूं, जिन्होंने विभाग के सहयोग से आज की संगोष्ठी को सफल बनाया।

मैं संस्था के समस्त कर्मियों को धन्यवाद देता हूं।

**आर.के. सिंह**

विशेषाधिकारी

भाषा एवं पुस्तकालय विभाग

शिक्षा संकुल, जयपुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। संस्था के पदाधिकारियों व श्री श्याम महर्षिजी ने जिस प्रकार से लगन, परिश्रम व लगातार प्रयासों से इसे मूर्तरूप प्रदान किया है, वह बीकानेर जिले, श्रीडूँगरगढ़ व आस-पास के क्षेत्रों की जनता, साहित्यकारों, लेखकों, शोधार्थियों के लिये किसी सौगात से कम नहीं है।

संस्थान के समस्त पूर्व व वर्तमान पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं को बधाई व शुभकामनाएं।

**डॉ. महेन्द्र खड़गावत**

निदेशक

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

इतना बेहतर प्रयास शायद ही कहीं होगा। हिन्दी और राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस तरह के प्रयासों की जरूरत है। अच्छे प्रयास के लिए श्री श्याम महर्षि को बहुत-बहुत बधाई।

**जिनेश जैन**

सम्पादक, राजस्थान पत्रिका

बीकानेर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ द्वारा भाषा एवं पुस्तकालय विभाग, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'पुस्तक, पाठक एवं पुस्तकालय' गोष्ठी के अवसर पर समिति का भवन, पुस्तकालय एवं उसके द्वारा कार्यक्रम

आयोजन की रीति-नीति, संस्कृति को नजदीक से देखने का सौभाग्य मिला। बहुत सुन्दर, मनभावन और अन्तस् तक प्रभाव डालने वाला वातावरण मन को छू गया। यहां संग्रहित पुस्तकों में संदर्भ पुस्तकों का अद्भुत खजाना है। समय-समय पर प्रकाशित/अब प्रकाशित की जा रही कृतियों की उपादेयता असंदिग्ध-प्रशंसनीय है। मैं श्रद्धेय श्यामजी को धन्यवाद देता हूं, जिनकी मेहनत, निष्ठा एवं समर्पण से रेगिस्तान में यह नखलिस्तान पल्लवित, पुष्पित हो रहा है।

**ओमप्रकाश सारस्वत**

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

बीकानेर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ राजस्थान की अनुकरणीय साहित्यिक संस्था है तथा दूसरों के लिये सीखने-समझने का विचार केन्द्र है। भाषा, साहित्य और संस्कृति की इस त्रिवेणी के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

**वेदव्यास**

अध्यक्ष

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ को मैं 'राजस्थली' और इसके सम्पादक श्री श्याम महर्षि के कारण जानता था। यहां आने का जब अवसर मिला तो देखकर चकित हूं कि तथाकथित मुख्यधारा से सुदूर एक छोटे से कस्बे में एक संस्था पचास वर्षों से गतिशील है। यहां का पुस्तकालय और वाचनालय सुरुचिपूर्ण है तथा श्रेष्ठ पुस्तकों का संयोजन साहित्य में दिलचस्पी जगाने वाला है। भाषा और साहित्य के लिए यह प्रयास प्रेरणादायी है। मुझे विश्वास है कि अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में समिति गतिविधियां में श्रीवृद्धि करेगी और नये पाठक वर्ग को जोड़ सकेगी।

शुभकामनाएं।

**प्रो. पल्लव**

हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

# स्मृति शेष

गुल से लिपटी हुई तितली को गिरा कर देखो,
आंधियों तुमने दरख़्तों को गिराया होगा।

**—कैफ भोपाली**

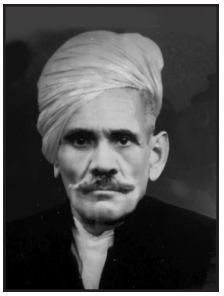

संस्थापक अध्यक्ष

## मुखाराम सिखवाल

प्रगतिशील विचारों के धनी और हमारे पुरोधा मुखाराम का जन्म मेहनाराम सिखवाल के यहां पुत्र रूप में हुआ। इनका मूल स्थान सांवराद (नागौर) फिर ग्राम बिग्गा और उसके बाद श्रीडूँगरगढ़ कार्य क्षेत्र बना।

अपना प्रथम कार्य क्षेत्र पश्चिम बंगाल के रंगपुर में श्री गिरधारीलाल वैद (लाडनूं) की जमींदारी व्यवस्था संभालने से प्रारंभ किया, लेकिन मातृ भूमि के मोह में थली प्रदेश के इस कस्बे श्रीडूँगरगढ़ में पुनः आये। यहां, अपने सामाजिक सरोकार से जुड़े रह कर श्रीगोपाल गोशाला तथा नगरपालिका के मनोनीत सदस्य एवं अखिल भारतीय सिखवाल महासभा पुष्कर के पदाधिकारी तथा स्थानीय वणिक एवं ब्राह्मण समाज में अपनी एक अलग पहचान कायम की।

आप जुझारू प्रवृत्ति के तथा कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे। सन् 1960 में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की परिकल्पना के संदर्भ में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस 14 नवम्बर को एक बैठक बाबा चिड़पड़नाथ की बगीची में हुई। उसकी अध्यक्षता हेतु अनुरोध किया तो उन्होंने अनमनेपन से कहा कि यह संस्था शायद ही चले। तत्कालीन युवकों ने स्वर्गीय सिखवाल की इस वैचारिकता को चुनौती के रूप में स्वीकार किया और आपके जीवनकाल में दिनांक 1.1.1961 को राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की स्थापना कर उनकी चुनौती को सकारात्मक रूप दिया और स्व. सिखवालजी को कहना पड़ा कि अब इस संस्था की उन्नति व विकास को कोई नहीं रोक सकता। उन्हीं के शब्दों में-

**हजारों आंधियां आए, बिजलियां चमके या कि तूफान हो।**
**यह शमा जलेगी, हरगिज बुझने न पावेगी।**

अपने गंभीर विचारों से संस्था को सदैव ही मार्गदर्शन दिया और संस्था के उत्तरोत्तर विकास की कामना करते थे।

आपके पुत्र श्री हुलासमल, स्व. कन्हैयालाल एवं शिवप्रसाद भी अपने-अपने क्षेत्र में पंडितजी के पदचिह्नों पर चलते रहे हैं और अच्छी पैठ कायम की। आपके द्वितीय पुत्र स्व. कन्हैयालाल सिखवाल समाज व राजस्थान ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष भी रहे। मध्य कोलकाता में राजस्थान गेस्ट हाउस उनकी स्मृति को कायम किए हुए है।

श्री हुलासमल एक चिन्तन शील व्यक्ति हैं एवं श्री शिवप्रसाद सिखवाल सामाजिक सरोकार से जुड़े हुए हैं। पं. मुखाराम सिखवाल का इस संस्था पर सदैव वरदहस्त रहा। जब तक जिन्दा रहे इस संस्था की गतिविधियों से रू-बरू होते रहे।

73 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हो गया।

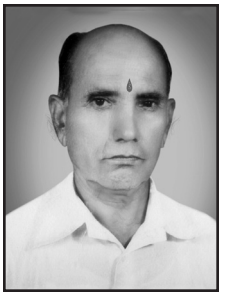

## डॉ. नन्दलाल महर्षि

जब कभी सामाजिक-साहित्यिक संदर्भ की चर्चा होती है तो होमियोपैथिक चिकित्सक के रूप में आमजन की सेवा में संलग्न डॉ. नंदलाल महर्षि अग्रणी पंक्ति में आते हैं। आपका जन्म 17 जुलाई 1917 को रतनगढ़ (चूरू) में हुआ। ऋषिकुल ब्रह्मचार्याश्रम रतनगढ़ में अध्ययन के पश्चात् आपने आयुर्वेद शास्त्री तथा होमियोपैथिक बी.एच.एम. तक की उपाधि प्राप्त की।

आपने अपना कर्म क्षेत्र रतनगढ़ के सेठ सूरजमल नागरमल जालान द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थाओं में अध्यापक के रूप में प्रारंभ किया। कुछ वर्षों तक कोलकाता में भी स्वयं का व्यवसाय किया। महाराष्ट्र के थाणे जिले के ग्राम भायन्दर में आपने हिन्दी स्कूल की स्थापना की। भायन्दर छोड़ने के पश्चात् आप 1959 में श्रीडूँगरगढ़ आकर बस गये और यहां चिकित्सक के रूप में अपनी सेवा देने लगे। आप आयुर्वेद तथा होमियोपैथ, दोनों पद्धतियों के रजिस्टर्ड चिकित्सक थे, परन्तु आपने चिकित्सा सदैव होमियोपैथिक से ही की।

सादा जीवन उच्च विचार के धनी डॉ. नन्दलाल महर्षि ने सस्ती चिकित्सा पद्धति को अपनाया और होमियोपैथिक के जन्मदाता हेनीमेन की विचारधारा से प्रभावित होकर यही कार्य क्षेत्र अपनाया।

जब युवा लोगों ने स्व. मुखाराम सिखवाल की अध्यक्षता में इस संस्था की नींव रखी तो डॉ. महर्षि भी इससे जुड़े और 1961 में प्रथम निर्वाचित अध्यक्ष बने एवं इस पद पर 1964 तक रह कर इस साहित्यिक संस्था के परचम को उच्च स्तर तक फहराया।

अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में जब संस्था चिड़पड़नाथ की बगीची में थी, आपने खूब सेवा की और इसके विकास को गति प्रदान कर, युवाओं के मनोबल को बढ़ाया।

आपकी पहचान अच्छे पाठक के रूप में रही। आपने अंतिम समय तक चिकित्सकीय सेवा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति की सेवा भी की तथा इसकी गतिविधियों में भाग लेते रहे। वर्तमान में आपके ज्येष्ठ पुत्र श्याम महर्षि इस संस्था को ऊंचाइयों की ओर ले जाने हेतु प्रयत्नशील हैं।

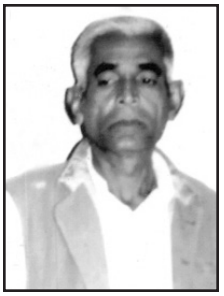

## हनुमानमल पुरोहित

**श्रीडूँगरगढ़ को गर्व हुआ है, तुम को पाकर पुरोहित हनुमान,**
**संस्थाएं लाभान्वित होकर, मुक्त कंठ से गाती गुणगान**

आपके जीवन में पूर्वाग्रह या वर्जना नहीं रही, अपने कार्यों से ही अपनी पहचान बनाई। श्रद्धेय हनुमानमल पुरोहित का जन्म इस तहसील के ग्राम बापेऊ में श्री भीखारामजी पुरोहित के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में हुआ। आप प्रारम्भिक जीवन में एक शिक्षक रूप में रह कर गुरु परम्परा का निर्वाह करते हुए कई संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

आप स्वतंत्र एवं प्रगतिशील विचारों के धनी थे। वस्तुतः व्यक्ति और समाज के बहाव को देख सकने वाली अचूक दृष्टि राजपुरोहितजी को ईश्वर प्रदत्त थी। श्री हनुमानमल पुरोहित अपने सर्किल में 'भाईजी' के नाम से जाने जाते थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के अध्यक्ष पद पर वर्षों 1965-66 से 1997-98 तक (अपने जीवन पर्यन्त) रह कर इस गरिमामय पद का दायित्व ग्रहण किया।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, चिंतक और विचारक के रूप में आपकी खासी पहचान रही। श्रीडूँगरगढ़ में किसी भी प्रकार का जन आन्दोलन आपके सबल नेतृत्व के बिना अधूरा था। इस संस्था के प्रादुर्भाव के साथ ही इसके उत्तरोत्तर विकास के सहभागी हनुमान भाई पुरोहित ने अपने अंतिम समय तक हमारा सबका मार्गदर्शन किया।

किसी ने सच ही कहा है–

**विनत रहे, विनय रहे, मृद भाषी मुसकान,**
**अहंकार, पाखण्ड से दूर, रहे भाईजी हनुमान।**

अपने से छोटे अथवा बड़े के साथ सामंजस्य बैठा लेना इनका विशिष्ट गुण था। स्थानीय राजनीति में चाहे किसी दल का व्यक्ति हो, इनका पूर्ण सम्मान करता था। समाज के हर वर्ग के साथ इनका मेलजोल था।

पैनी दृष्टि, मानवीय संवेदना, मिलनसारिता के धनी और मृदुता इनके चेहरे पर सदैव झलकती थी। इस संस्था का भूमि आवंटन कार्य एवं इस भवन के वर्तमान स्वरूप की नींव भाईजी ने अपने जीवनकाल में ही रख दी थी। संस्था पदाधिकारीगण उन्हीं की परिकल्पना को साकार रूप देने का निरन्तर प्रयास करते रहे हैं। आज राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के भवन के वर्तमान स्वरूप में भाईजी का चेहरा झलकता है। हनुमानमल पुरोहित अपने अंतिम समय तक सार्वजनिक व शैक्षणिक हितार्थ कार्य करते रहे। हालांकि आज उनकी अधिक आवश्यकता थी, लेकिन–

**जो भी होता उदय, होना पड़ता अस्त,**
**कितना ही बलवान हो, पल में हो पस्त।**

ऐसे ही विकासोन्मुख सहयोगी एवं साहित्य सेवी को नमन।

## हनुमान प्रसाद उपाध्याय

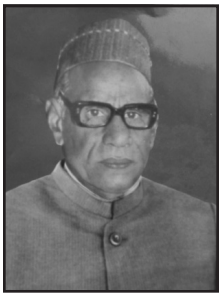

जब कभी इस कस्बे में समाज एवं समाजसेवी का नाम आता है तो श्री देवीदत्त पालीवाल, श्री त्रिलोक शर्मा, श्री नंदलाल महर्षि सरीखे व्यक्तियों का चरित्र चेहरे हमारे सामने उभर आते हैं। ऐसी ही शख्सीयत के रूप में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के पटल पर हनुमान प्रसाद उपाध्याय का चेहरा आता है।

हनुमान प्रसाद उपाध्याय का जन्म पुष्करणा ब्राह्मण हरकारामजी उपाध्याय के पुत्र के रूप में हुआ। कहने को तो ये घड़ी की मरम्मत का कार्य करते थे, लेकिन एक अच्छे पाठक एवं संस्था हितैषी के रूप में इनकी पहचान थी।

आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर यूनिवर्सिटी से मैट्रिक एवं हिन्दी विशारद (साहित्य सम्मेलन, प्रयाग) से उत्तीर्ण की। बोलचाल के अच्छे थे, गणेश भजन मण्डली एवं सर्वोदय नाटक मण्डली एवं अन्य संस्थाओं से आपका जुड़ाव रहा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति में संस्थापक सदस्य के अलावा 1962-63 से 1965-66 तक प्रचार मंत्री के पदों पर रह कर इसके विकास में अपना योगदान दिया। इस संस्था की जब-जब विकास की बात आई हनुमान प्रसाद उपाध्याय ने मार्गदर्शन देकर इसको निरन्तर गतिमान रहने का आशीर्वाद दिया।

वे सदैव ही कहा करते थे श्यामा (श्याम महर्षि) तू निश्चित रूप से इस संस्था का एक आदर्श पात्र होगा।

## इन्द्रचंद बिन्नाणी

आपका जन्म सेठ हजारीमल बिन्नाणी के पुत्र रूप में हुआ। आपने अपना कार्य क्षेत्र कोलकाता को बनाया एवं वर्षों तक वहीं रहे। अपनी आयु के पांचवें दशक में पुनः श्रीडूँगरगढ़ लौट आए। यहां सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर सेवाएं दी। श्री गोपाल गोशाला, श्रीडूँगरगढ़ पुस्तकालय में अच्छी सेवाएं दी। लॉयन्स क्लब श्रीडूँगरगढ़ के संस्थापक रहे एवं वर्षों इसमें उच्च पद पर रह कर अकाल के समय गो सेवार्थ सराहनीय कार्य किया। आप राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के प्रथम संरक्षक बने तथा संस्था के प्रारम्भिक काल में आपका निरन्तर सहयोग रहा। कस्बे में लगभग एक दशक तक विभिन्न खेलों के टूर्नामेन्टों में आपकी उत्साहजनक भागीदारी रही।

आप राजनीति से जुड़ कर विपक्षी नेता के रूप में वर्षों सक्रिय रहे।

## गुलशन बोथरा

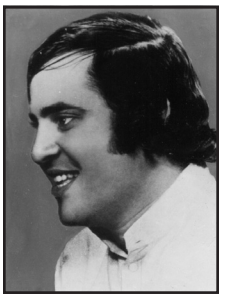

थानसिंह बोथरा साहित्यिक नाम गुलशन बोथरा का जन्म धुबड़ी के सुप्रसिद्ध व्यवसायी जीयालालजी बोथरा के यहां पुत्र रूप में श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) में 2 फरवरी 1949 को हुआ। प्रारंभिक शिक्षा श्रीडूँगरगढ़ में सम्पन्न हुई। हिन्दी साहित्य में अधिक रुचि होने के फलस्वरूप उन्होंने साहित्यरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की। अपने पैतृक व्यवसाय के साथ-साथ वे युवावस्था में आते-आते कविता लिखने लगे थे। कुछ समय श्रीडूँगरगढ़ में रह कर राजस्थान पत्रिका के संवाददाता का कार्य भी किया। 1971 में गुलशन राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में आये। अकसर गोष्ठियों में आते तथा अपनी नवरचित कविताएं सुनाते। सन् 1974 से 1977 की अवधि में वे संयुक्त मंत्री के रूप में संस्था में सक्रिय रहे। इसी दौरान उन्होंने कविताएं और उपन्यास लिखे जो कालान्तर में बिखरे फूल तथा पैगाम नाम से दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए तथा 'पापी पुजारी' उपन्यास उस समय काफी चर्चित रहा। वे श्रीडूँगरगढ़ व धुबड़ी में विभिन्न संस्थाओं के आयोजनों में भाग लेते थे। 'काजलियो' नाम की ओडियो कैसेट भी प्रसारित हुई थी। वे अकसर बी.एस.एफ. के जवानों के बीच जाकर तरन्नुम में गीत गाया करते थे। 1979 में समिति के मंत्री श्याम महर्षि व संयुक्त मंत्री रामकिशन उपाध्याय ने धुबड़ी का दौरा किया। उस दौरान गुलशन बोथरा ने अपने दोनों मित्रों को 2000/- रु. भेंट स्वरूप दिए, उक्त राशि का उपयोग निजी रूप में न करके श्याम महर्षि एवं रामकिशन उपाध्याय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के लिए घूमचक्कर पर स्थित भूमि क्रय की। स्व. बोथरा का यह योगदान भुलाया नहीं जा सकता। 20 जुलाई 1987 को उनके निधन पर आसाम बंद रहा। उनको बीएसएफ ने 21 तोपों की सलामी दी। उनके पीछे उनकी पत्नी, एक पुत्र तथा तीन पुत्रियों का भरापूरा परिवार है।

## भंवरलाल पुरोहित, बिग्गा

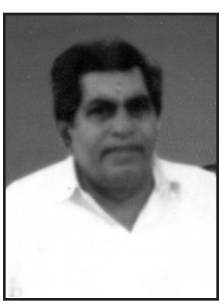

संसार ने उन्हीं लोगों को याद रखा है, जिन्होंने अपने सपने को साकार करने हेतु पूर्ण लगन और समर्पण भाव से संघर्ष किया।

भंवरलाल पुरोहित इस संस्था की स्थापना से ही जुड़े रहे, इस संस्था के 1961-62 एवं 1962-63 में कोषाध्यक्ष व 1963-64 में उपमंत्री के रूप में अपनी सराहनीय सेवाएं देकर इस संस्था के उत्तरोत्तर विकास में अपना सहयोग दिया। आपका जन्म पुरातन गांव बिग्गा में पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में श्री मोहनलालजी पुरोहित के पुत्र रूप में हुआ। आपका प्रारम्भिक जीवन कठिनाइयों में गुजरा, लेकिन इनकी आगे बढ़ने की ललक कोलकाता महानगरी ले गई। वहां पर आपके मामा व इस संस्था के संस्थापक सदस्य श्री हनुमान प्रसाद उपाध्याय का वरद हस्त प्राप्त हुआ। लम्बे समय तक कोलकाता में व्यवसाय करने के बाद आपको सामाजिक सेवा की भावना पैतृक गांव बिग्गा में ले आयी। आपने ग्राम बिग्गा में सार्वजनिक भवन हेतु भूमि प्राप्त कर एक भव्य पुष्करणा भवन की आधारशिला रखी जो आज भी जनोपयोगी है। आप अखिल भारतीय पुष्टिकर सेवा परिषद् बिग्गा के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए और उसके अधीन कई अखिल भारतीय सम्मेलनों में सम्मिलित भी हुए। आप आध्यात्मिक रुझान रखते थे। गायत्री परिवार से आपका जुड़ाव रहा। आपकी कोलकाता विरासत को आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री विजय सम्भाल रहे हैं। दो और पुत्र दिलीप व श्याम भी अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। आपका परिवार अब भी राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति से जुड़ा हुआ है।

## चान्दरतन डागा

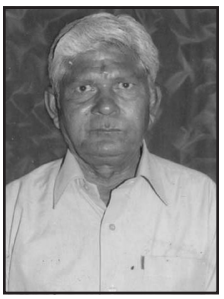

आपका जन्म श्रीडूँगरगढ़ के बिग्गाबास में डागा परिवार में स्व. रामचन्द्रजी डागा के पुत्र रूप में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा श्रीडूँगरगढ़ में प्राप्त की तथा पंजाब विश्वविद्यालय से साहित्य भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपका साहित्य से सदैव लगाव रहा। आपकी गणना अच्छे पाठकों में की जाती है। आपने सार्वजनिक पुस्तकालय श्रीडूँगरगढ़ में लम्बे अरसे तक सक्रिय सेवा देते हुए पुस्तकालय की पुस्तकों की संख्या में आशातीत वृद्धि की।

आप ज्योतिष के ज्ञाता थे। आपकी ज्योतिषीय कालगणना सटीक थी। हस्त रेखा के जानकार भी थे। अपनी जन्म कुण्डली के फलादेश निकलवाने हेतु दूर-दूर के व्यक्ति आपके सम्पर्क में आए।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के शुभचिंतक रहे। आपने अपना मकान समिति को बिना किराए के करीब 20 वर्ष तक उपयोग हेतु दिया। संस्था के सन् 1977-78 से 1981-82 की अवधि में उपाध्यक्ष एवं 1982-83, 1985-86 तक प्रचार मंत्री भी रहे। आपका संस्था से सदस्य के रूप में निरन्तर जुड़ाव रहा।

गत वर्षों में आपका परिवार रायपुर (छत्तीसगढ़) में व्यवसायरत होने के कारण आप भी वहीं रहने लगे, लेकिन वर्ष में एक बार आकर संस्था को सेवा प्रदान करना इनका नियम बन गया था। संस्था के भवन निर्माण में आपका योगदान रहा।

आपके दो पुत्र महेश व आनन्द हैं।

संस्था आपके सहयोग को सदैव याद रखेगी।

## जीवराज वर्मा

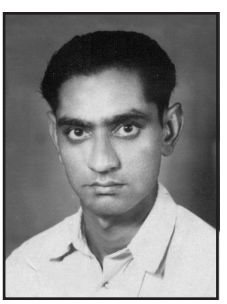

77 वर्ष पूर्व जीवराज वर्मा का जन्म श्रीडूँगरगढ़ कस्बे के आडसर बास में श्री भंवरलाल दर्जी के पुत्र रूप में हुआ।

साधनहीन परिवार के सदस्य होते हुए भी जीवराज वर्मा ने मैट्रिक परीक्षा पास की तथा अल्पकाल के लिए कोलकाता में एक व्यवसायी के यहां नौकरी की, लेकिन स्वाभिमान के धनी वर्मा को नौकरी पसन्द नहीं आई तथा सदैव के लिए नौकरी त्याग कर अपना पुश्तैनी दर्जी का काम कस्बे में करना शुरू कर दिया।

वर्मा वामपंथी विचारधारा के पोषक तथा उनकी पहचान कस्बे में एक अच्छे पाठक की रही। वे घंटों राजनैतिक बहस किया करते थे।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति से वर्षों जुड़े रहे। गोष्ठियों में निरन्तर भागीदारी इनका रुचि का विषय था। शहर की अन्य संस्थाओं से भी इनका कमोबेश जुड़ाव था।

उनके अनुज श्री हुलास वर्मा भी कस्बे की साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हैं।

# संस्था विवरण

## राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
### श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

**प्रथम कार्यकारिणी समिति-1961**

अध्यक्ष
**डॉ. नंदलाल महर्षि**

उपाध्यक्ष
**श्री गोविन्दराम पुरोहित**

मंत्री
**श्री रामस्वरूप चोटिया**

उप मंत्री
**श्री श्याम सुन्दर महर्षि**

हिसाब परीक्षक
**श्री देवीदत्त पालीवाल**

संरक्षक
**श्री इन्द्रचंद बिन्नाणी**

कोषाध्यक्ष
**श्री भंवरलाल पुरोहित**

प्रचार मंत्री
**श्री मणिकांत वर्मा**

सदस्य
**श्री हनुमान प्रसाद उपाध्याय**

सदस्य
**श्री मुखाराम शर्मा**

सदस्य
**श्री तेजपाल वैद्य**

# समिति के विधान की धारा 4 के अंतर्गत अब तक मनोनीत मानद सदस्य

**वर्ष 1970-1975**

1. श्री युगल किशोर चतुर्वेदी, पूर्व मंत्री राजस्थान
2. श्री गौरीशंकर आचार्य, शिक्षाविद्, श्रीगंगानगर
3. श्री मूलचंद प्राणेश, सम्पादक जलम भोम, बीकानेर
4. श्री नेमीचंद जैन, 'भावुक' संचालक-अन्तर प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद्, जोधपुर

**वर्ष 1975-1980**

1. श्री गोपाल प्रसाद व्यास, दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन-दिल्ली
2. श्री मनोहर शर्मा, सम्पादक-वरदा, बिसाऊ (राज.)
3. श्री डॉ. ताराप्रकाश जोशी, आईएएस, जयपुर
4. श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', कथाकार, बीकानेर
5. श्री हरीश भादानी, जनकवि, बीकानेर

**वर्ष 1980-1988**

1. 'पद्मश्री' कोमल कोठारी, रूपायन संस्थान, जोधपुर
2. प्रो. देवी प्रसाद गुप्त, समालोचक, बीकानेर
3. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, अध्यक्ष-राजस्थानी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

**वर्ष 1989-1993 व 1994-1999**

1. श्री सुधाकर पाण्डेय प्रधानमंत्री नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी (उ.प्र.)
2. श्री आई.सी. श्रीवास्तव, आईएएस, जयपुर
3. डॉ. नारायणदत्त पालीवाल, सचिव, हिन्दी अकादमी, नई दिल्ली
4. श्री विष्णुप्रभाकर, सुप्रसिद्ध कथाकार, नई दिल्ली
5. श्री राजेन्द्र यादव, सम्पादक-हंस, नई दिल्ली
6. डॉ. श्री भंवर भादानी, रीडर इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)
7. प्रो. रघुवीरसिंह, निर्देशक श्रीनटनागर शोध संस्थान, सीतामउ (म.प्र.)
8. 'पद्मश्री' विजयदान देथा 'बिज्जी' कथाकार, बोरूंदा (जोधपुर)

**वर्ष 1999-2004**

1. श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' कथाकार बीकानेर
2. श्री डी.आर. जोधावत, आईएएस, विशेषाधिकारी, राज. शिक्षा निदेशालय बीकानेर
3. श्री भवानी शंकर गर्ग, कुलपति, राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड विश्वविद्यालय) उदयपुर
4. श्री डी.डी. गोस्वामी, संयोजक-राजस्थान परिवार, दिल्ली
5. श्री वेद व्यास, महामंत्री, राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ, जयपुर

**वर्ष 2004-2009**

1. डॉ. पद्माकर पाण्डेय, प्रधानमंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (उ.प्र.)
2. डॉ. गिरीराज किशोर, सम्पादक/कथाकार, कानपुर
3. श्री हरीश भादानी, जनकवि, बीकानेर
4. श्री नंद भारद्वाज, निदेशक-दूरदर्शन, जयपुर
5. श्री वेद व्यास, महामंत्री, राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ, जयपुर

**वर्ष 2009-2014**

1. श्री पद्मभूषण विजय शंकर व्यास, उपाध्यक्ष, राज्य योजना आयोग, जयपुर
2. श्री एल.सी. सिंघी, आईएएस, गुवाहाटी
3. श्री श्यामसुन्दर बिस्सा, आईएएस, नागौर
4. श्री भवानी शंकर शर्मा, महापौर, नगरनिगम, बीकानेर
5. श्री बंशीलाल बाहेती, उद्योगपति, कोलकाता

# राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राज.

## रजिस्ट्रेशन क्रमांक 148/67-68

## दिनांक 27.6.09 को नव निर्वाचित कार्यकारिणी समिति (2009-2014)

| क्रमांक | पद | नाम मय पिता | पता |
|---|---|---|---|
| 1. | सभापति | श्री एल.सी. बिहानी, एडवोकेट<br>आत्मज स्व. दुलीचंद बिहानी | 11, ओल्ड पोस्ट ऑफिस स्ट्रीट,<br>कोलकाता-1 |
| 2. | अध्यक्ष | श्री श्याम महर्षि<br>आत्मज स्व. नंदलाल महर्षि | वार्ड नं. 14, श्रीडूँगरगढ़ |
| 3. | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | श्री सीताराम मोहता, सी.ए.<br>आत्मज स्व. भैरूंदान मोहता | 11, क्लाइव रो, दूसरा माला<br>कोलकाता-1 |
| 4. | उपाध्यक्ष | श्री शिवप्रसाद सिखवाल<br>आत्मज स्व. मुखाराम सिखवाल | बिग्गाबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 5. | उपाध्यक्ष | श्री रामकिशन उपाध्याय<br>आत्मज स्व. हनुमानप्रसाद उपाध्याय | बिग्गाबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 6. | उपाध्यक्ष (साहित्य) | श्री सत्यदीप<br>आत्मज श्री गणेशमल भोजक | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 7. | मंत्री | श्री बजरंग शर्मा<br>आत्मज स्व. पूनमचंद शर्मा | वार्ड नं. 14, श्रीडूँगरगढ़ |
| 8. | संयुक्त मंत्री | श्री रवि पुरोहित<br>आत्मज स्व. मोहनलाल पुरोहित | कालूबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 9. | संयुक्त मंत्री | श्री विजय महर्षि<br>आत्मज श्री श्याम महर्षि | पत्रकार, श्रीडूँगरगढ़ |
| 10. | कोषाध्यक्ष | श्री नारायण प्रसाद शर्मा<br>आत्मज स्व. पन्नालाल शर्मा | सनसाइन पब्लिक स्कूल कालूबास,<br>श्रीडूँगरगढ़ |

| क्रमांक | पद | नाम मय पिता | पता |
|---|---|---|---|
| 11. | प्रचार मंत्री | श्री महावीर प्रसाद सारस्वत<br>आत्मज स्व. नथमल सारस्वत | पत्रकार, श्रीडूँगरगढ़ |
| 12. | सदस्य | श्री भरत सिंह राठौड़, एडवोकेट<br>आत्मज स्व. हनुमानसिंह राठौड़ | मुख्य बाजार, श्रीडूँगरगढ़ |
| 13. | सदस्य | श्री रामचन्द्र राठी<br>आत्मज स्व. बालचन्द राठी | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 14. | सदस्य | श्री महावीर प्रसाद माली<br>आत्मज श्री भीखाराम माली | सिद्धी विनायक कृषि स्टोर, स्टेशन रोड, श्रीडूँगरगढ़ |
| 15. | सदस्य | श्री विजय राज सेठिया<br>आत्मज स्व. मेघराज सेठिया | कमला मेडिकल स्टोर, मुख्य बाजार, श्रीडूँगरगढ़ |
| 16. | सदस्य | श्री भंवर भोजक<br>आत्मज स्व. रूघलाल भोजक | कालूबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 17. | सदस्य | श्री भीकमचंद पुगलिया<br>आत्मज स्व. जोरमल पुगलिया | कालूबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 18. | सदस्य | श्री मनीष शर्मा<br>आत्मज श्री रामलाल शर्मा | मॉडर्न राजस्थान सी.सै. स्कूल श्रीडूँगरगढ़ |
| 19. | सदस्य | श्री श्रीकृष्ण खण्डेलवाल<br>आत्मज स्व. मोहनलाल खण्डेलवाल | वार्ड नं. 15, श्रीडूँगरगढ़ |
| 20. | सदस्य | श्री महेश जोशी<br>आत्मज श्री शंकरलाल जोशी | महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूँगरगढ़ |
| 21 | सदस्य | राजकीय प्रतिनिधि | प्रधानाध्यापक<br>रा.रूपादेवी सै. स्कूल, श्रीडूँगरगढ़ |

# 'साहित्यश्री' से सम्मानित विद्वान्

| क्रमांक | नाम | स्थान | विधा |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री से.रा. यात्री | दिल्ली | कथाकार/सम्पादक |
| 2. | श्री धर्मेन्द्र गुप्त | दिल्ली | कथाकार/सम्पादक |
| 3. | श्री मालचंद तिवाड़ी | बीकानेर | कवि/कथाकार |
| 4. | श्री गणपतिचन्द्र गुप्त | बीकानेर | आलोचक |
| 5. | श्री विश्वम्भरनाथ उपाध्याय | जयपुर | कथाकार/आलोचक |
| 6. | श्री विष्णु प्रभाकर | दिल्ली | कथाकार |
| 7. | श्री लारी आजाद | खुर्जा | आलोचक |
| 8. | श्री रामप्रसाद दाधीच | जोधपुर | कवि/सम्पादक |
| 9. | श्री हरीश भादानी | बीकानेर | कवि |
| 10. | श्री लक्ष्मीकांत जोशी | जोधपुर | सम्पादक |
| 11. | श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' | बीकानेर | कथाकार |
| 12. | श्री बशीर अहमद मयूख | कोटा | कवि |
| 13. | श्री कन्हैयालाल सेठिया | कोलकाता | कवि |
| 14. | श्री बैजनाथ पंवार | चूरू | कथाकार |
| 15. | श्री कलानाथ शास्त्री | जयपुर | भाषाविद् |
| 16. | श्री रणवीरसिंह | जयपुर | रंगकर्मी-इतिहासकार |
| 17. | पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन | दिल्ली | सम्पादक |
| 18. | श्री राजानंद भटनागर | बीकानेर | रंगकर्मी/नाटककार |
| 19. | श्री हरदर्शन सहगल | बीकानेर | कहानीकार |
| 20. | श्री प्रदीप शर्मा | चूरू | सम्पादक/कवि |
| 21. | श्री प्रभुनारायण नाट्याचार्य | जयपुर | नाटककार |
| 22. | श्री श्याम सुन्दर सुमन | मथुरा | साहित्य सेवा |
| 23. | श्री धन्नंजय वर्मा | बीकानेर | गीतकार |
| 24. | डॉ. तेजसिंह जोधा | रणधीसर (नागौर) | कवि |
| 25. | श्री वेद व्यास | जयपुर | साहित्य सेवा |
| 26. | श्री किशोर कल्पनाकांत | रतनगढ़ | सम्पादक/कवि |
| 27. | श्री गौरीशंकर आचार्य | श्रीगंगानगर | साहित्य सेवा/शिक्षाविद् |
| 28. | श्री सीताराम महर्षि | रतनगढ़ | कवि/कथाकार/सम्पादक |

| क्रमांक | नाम | स्थान | विधा |
|---|---|---|---|
| 29. | श्री ए.ए. मंशूर | चूरू | शायर |
| 30. | श्री नानूराम संस्कर्ता | कालू | कवि/कथाकार/सम्पादक |
| 31. | श्री वीरेन्द्र कुमार दुबे | जबलपुर | साहित्य सेवा |
| 32. | श्री गजानन वर्मा | रतनगढ़ | गीतकार |
| 33. | श्री हीरालाल जायसवाल | गोंदिया (महाराष्ट्र) | साहित्य सेवा |
| 34. | श्री शिब्बन कृष्ण रैना | अलवर | अनुवादक/साहित्य सेवा |
| 35. | श्री नात्थूलाल जैन एडवोकेट जनरल | जयपुर | विधिवेत्ता/भाषा प्रचार |
| 36. | डॉ. मनोहर शर्मा | बिसाऊ | साहित्य सेवा |
| 37. | श्री मित्रेश कुमार गुप्त | मेरठ | साहित्य सेवा |
| 38. | डॉ. भूपतिराम साकरिया | वल्लभविद्यानगर (गुजरात) | साहित्य सेवा |
| 39. | डॉ. मदन सैनी | बीकानेर | कवि/कथाकार/सम्पादक |
| 40. | प्रो. सत्यनारायण | जोधपुर | कथाकार |
| 41. | डॉ. चेतन स्वामी | श्रीडूँगरगढ़ | कथाकार/सम्पादक |
| 42. | श्री अन्नाराम सुदामा | गंगाशहर | कथाकार |
| 43. | श्री रतनशाह | कोलकाता | साहित्य सेवा |
| 44. | डॉ. रामकुमार बेहार | रायपुर (छत्तीसगढ़) | साहित्य सेवा/शिक्षाविद् |
| 45. | श्री हरिराम मीणा | जयपुर | कथाकार |
| 46. | श्री तेजनारायण कुशवाह | भागलपुर | साहित्य सेवा |
| 47. | श्रीमधुकर गौड़ | मुम्बई | साहित्य सेवा/सम्पादक/गीतकार |
| 48. | श्री सूर्यशंकर पारीक | बीकानेर | कवि/सम्पादक |
| 49. | श्री परमेश्वर द्विरेफ | चिड़ावा | कवि |
| 50. | श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद' | बीकानेर | कवि/सम्पादक |
| 51. | डॉ. सावित्री डागा | जोधपुर | कवि/साहित्य सेवा |
| 52. | श्री वृंदावन त्रिपाठी रत्नेश | परियावां (उत्तरप्रदेश) | साहित्य सेवा |
| 53. | श्री कमर मेवाड़ी | कांकरोली | कथाकार/सम्पादक |
| 54. | डॉ. देवीप्रसाद गुप्त | बीकानेर | आलोचक |
| 55. | श्री मालीराम शर्मा | बीकानेर | व्यंग्यकार |
| 56. | श्री श्रीहर्ष | बीकानेर | कवि |
| 57. | श्री बी.सी. मालू | कोलकाता | कवि |

# संरक्षक सदस्य

| क्र.सं. | नाम | पता | व्यवसाय |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री पुष्पराज पुत्र आसकरण पुगलिया | श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 2 | श्री भीकमचंद पुत्र धर्मचंद पुगलिया | कोलकाता | व्यापार |
| 3 | डॉ. वीरेन्द्र पुत्र बृजलाल दुबे | जबलपुर | अध्यापन |
| 4 | श्री बच्छराज पुत्र गंगाराम पारख | सीलीगुड़ी | व्यापार |
| 5 | श्री जतनलाल पुत्र जीवराज पुगलिया | कोलकाता | व्यापार |
| 6 | श्री शिवप्रसाद पुत्र मुखाराम सिखवाल | कोलकाता | व्यापार |
| 7 | श्री सम्पतलाल पुत्र हरखचंद भादाणी | कोलकाता | व्यापार |
| 8 | श्री अमरचंद पुत्र कुशलचंद बोथरा | श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 9 | श्री श्रीनिवास पुत्र रामगोपाल गट्टाणी | जयपुर | व्यापार |
| 10 | श्री चिरंजीव कुमार पुत्र भंवरलाल डागा | श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 11 | श्री श्याम महर्षि पुत्र नंदलाल महर्षि | श्रीडूँगरगढ़ | लेखक |
| 12 | श्री भुवनेश्वर पुत्र हुलासचंद कर्वा | श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 13 | श्री विनोद कुमार पुत्र शिवप्रसाद सिखवाल | कोलकाता | व्यापार |
| 14 | श्री महेश्वरदयाल पुत्र रघुवरदयाल किरोड़ी | बीकानेर | सेवानिवृत्त |

# आजीवन सदस्य

| क्र.सं. | नाम | पता | व्यवसाय |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री मालचंद पुत्र रामचंद तिवाड़ी | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत्त |
| 2 | श्री रामकिशन पुत्र हनुमानप्रसाद उपाध्याय | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत्त |
| 3 | डॉ. चेतन स्वामी पुत्र रेंवतदास | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | प्रोफेसर |
| 4 | श्री सत्यदीप पुत्र गणेशमल भोजक | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | नौकरी |
| 5 | श्री एल.सी. बिहानी पुत्र दुलीचंद | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | वकालत |
| 6 | डॉ. भंवर भादाणी पुत्र रामचंद्र | रांगड़ी चौक, बीकानेर | प्रोफेसर |
| 7 | श्री फरीद खान पुत्र मिश्री खां | पी.आर.ओ. श्रीगंगानगर | नौकरी |
| 8 | श्री कैलाशचंद्र पुत्र खेताराम मोहता | कोलकाता | व्यापार |
| 9 | श्री नारायण प्रसाद पुत्र पन्नालाल शर्मा | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | अध्यापन |
| 10 | श्री हुलासमल पुत्र भंवरलाल वर्मा | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत्त |
| 11 | श्री सुबोध कुमार पुत्र एल.सी. बिहानी | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत्त |
| 12 | श्री संजयकुमार पुत्र विनयसिंह | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 13 | श्री उतमचंद पुत्र माणकचंद पुगलिया | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 14 | श्री मदनलाल पुत्र माणकचंद नाहटा | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | नौकरी |
| 15 | श्री हनुमानमल पुत्र सूरजमल पारीक | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 16 | श्री रेंवतमल नैण पुत्र केसराराम | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | कृषि |
| 17 | श्री श्रवणकुमार पुत्र चंदनमल गुरनाणी | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 18 | श्री रूघनाथ पुत्र रावतमल सैनी | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 19 | श्री बजरंगलाल पुत्र पूनमचंद शर्मा | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | नौकरी |
| 20 | श्री सुमेरमल सिंघी | श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 21 | श्री ताराचंद पुत्र नारायणप्रसाद इन्दौरिया | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत |
| 22 | श्री दयाशंकर पुत्र सत्यनारायण शर्मा | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | नौकरी |
| 23 | श्री विजयराज पुत्र मेघराज सेठिया | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 24 | श्री नंदकिशोर पुत्र मदनलाल कोठारी | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 25 | श्री जयचंदलाल पुत्र सदासुख दुगड़ | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 26 | श्री मित्रेश कुमार पुत्र चंद्रभान गुप्त | 25, वैद्यवाड़ा, मेरठ, यू.पी. | सेवानिवृत्त |
| 27 | श्री करणीसिंह पुत्र संग्रामसिंह बाना | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत्त |
| 28 | श्री सीताराम पुत्र भैरूंदान मोहता | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | सी.ए. |
| 29 | श्री जयचंदलाल पुत्र पूर्णचंद सोनी | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |

| क्र.सं. | नाम | पता | व्यवसाय |
|---|---|---|---|
| 30 | श्री विजयसिंह पुत्र मघराज पारख | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 31 | श्री रेंवतमल पुत्र रामनारायण बिहानी | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 32 | श्री हंसराज पुत्र गणेशमल कुंडलिया | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 33 | श्री धनराज पुत्र बालूराम स्वर्णकार | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 34 | श्री रामकिशन पुत्र नेमीचंद बिहानी | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 35 | श्री बाबूलाल पुत्र इन्द्रचंद छाजेड़ | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 36 | श्री तुरजमल पुत्र पोहूमल बोधीजा | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत |
| 37 | श्री मोहनलाल पुत्र छोगाराम देरासरी | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत |
| 38 | श्री महावीर पंवार पुत्र बैजनाथ | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | सेवानिवृत |
| 39 | श्री छत्रसिंह पुत्र आसकरण पारख | 3031, कलाकार स्ट्रीट, कोलकाता | व्यापार |
| 40 | श्री रमेशचंद्र पुत्र बाबूलाल शर्मा | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 41 | श्री विजय महर्षि पुत्र श्याम महर्षि | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 42 | श्री विश्वनाथ पुत्र शिवनाथ पांडे | राबाउमावि, भरतपुर | नौकरी |
| 43 | श्री कमलसिंह पुत्र मघराज पारख | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 44 | श्री जगदीश प्रसाद पुत्र सूरजमल वर्मा | सुजानगढ़ | नौकरी |
| 45 | श्री देवकिशन पुत्र बद्रीनारायण सोमानी | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 46 | श्री धनराज पुत्र जोरमल पुगलिया | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 47 | श्री मदनलाल पुत्र इन्द्रचंद पारख | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 48 | श्री सत्यनारायण पुत्र भंवरलाल पड़िहार | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | प्राइवेट नौकरी |
| 49 | श्री हरिप्रसाद पुत्र पूनमचंद मोहता | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 50 | श्रीमती कांता पत्नी पवनकुमार शर्मा | रतनगढ़ | अध्यापन |
| 51 | श्री संजीव कुमार पुत्र नारायणप्रसाद शर्मा | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | अध्यापन |
| 52 | श्री सुमेरमल पुत्र शुभकरण पुगलिया | 2, राजा वुडमंड स्ट्रीट, कोलकाता | व्यापार |
| 53 | श्री मोहनलाल पुत्र नरसाराम मोट | चैन्नई | व्यापार |
| 54 | श्री भंवरलाल पुत्र मालाराम सिखवाल | कोलकाता | व्यापार |
| 55 | श्री उम्मेदसिंह पुत्र आसकरण पारख | 3031, कलाकार स्ट्रीट, कोलकाता | व्यापार |
| 56 | श्री रामेश्वर पुत्र बालदास जामदाग्नेय | इगतपुरी, महाराष्ट्र | सेवानिवृत्त |
| 57 | श्री इन्द्रचंद पुत्र चेतनराम भार्गव | घास मण्डी | नौकरी |
| 58 | श्री रेंवतमल पुत्र पूर्णचंद बिहानी | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 59 | श्री दौलतकुमार पुत्र तेजकरण डागा | 14, मालवीयनगर, जयपुर | व्यापार |

| क्र.सं. | नाम | पता | व्यवसाय |
|---|---|---|---|
| 60 | श्री पन्नालाल पुत्र हुलासचंद पुगलिया | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 61 | श्री नंदलाल पुत्र रामनारायण झंवर | बरेली | व्यापार |
| 62 | श्री ओमप्रकाश पुत्र मालचंद सिखवाल | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | नौकरी |
| 63 | श्री बृजलाल जोराराम व्यास | एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 64 | श्री इन्द्रकुमार पुत्र मेघराज डागा | कोलकाता | व्यापार |
| 65 | श्री नंदकिशोर पुत्र मोहनलाल सोनी | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 66 | श्री मेघराज पुत्र अर्जुनदास डागा | मुख्य बाजार, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 67 | श्री सत्यनारायण पुत्र भीकमचंद झंवर | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 68 | श्री जीवराज पुत्र जैसराज भंसाली | मोमासर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 69 | श्री गोरधनलाल पुत्र उदयचंद गट्टाणी | आंगुल (उड़ीसा) | व्यापार |
| 70 | श्री रतनलाल पुत्र हड़मानमल शर्मा | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 71 | श्री रामस्वरूप पुत्र बिहारीलाल चोटिया | रामगढ़ शेखावाटी | व्यापार |
| 72 | श्रीमती पुष्पांजली पत्नी गुलशन बोथरा | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 73 | श्रीमती बीणा पत्नी हीरालाल पारीक | बीकानेर | गृहिणी |
| 74 | श्री सुशीलकुमार पुत्र जुगलकिशोर डागा | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 75 | श्री नथमल पुत्र अखाराम शर्मा | अहमदाबाद | व्यापार |
| 76 | श्री सूर्यकांत शर्मा पुत्र वैद्य गुलाबचंद | जयपुर | सेवानिवृत्त |
| 77 | श्री इन्द्रचंद पुत्र रूघलाल बाहेती | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | नौकरी |
| 78 | श्री सुरेन्द्र कुमार पुत्र शुभकरण पुगलिया | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 79 | श्री मोतीलाल पुत्र आसकरण भंसाली | कोलकाता | व्यापार |
| 80 | श्री हरिप्रसाद पुत्र केसरीचंद मूंधड़ा | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 81 | श्री सुदीप पुत्र सुमेरमल पुगलिया | कोलकाता | व्यापार |
| 82 | श्री गौरीशंकर पुत्र भैरूंदान मोहता | कोलकाता | व्यापार |
| 83 | डॉ. डी.जी. भटनागर पुत्र डॉ. नन्दगोपाल | बीकानेर | सेवानिवृत्त |
| 84 | श्री राजेश पुत्र बिरजाराम शर्मा | कालू बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 85 | श्री सुकान्त पुत्र मालचंद तिवाड़ी | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | अध्ययन |
| 86 | श्री भवानीशंकर पुत्र रामकिशन तिवाड़ी | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |
| 87 | श्री रामदेव पुत्र पी.सी. खत्री | बीकानेर | सेवानिवृत्त |
| 88 | श्री लाल खां पुत्र नथू खां ठेकेदार | बिग्गा बास, श्रीडूँगरगढ़ | व्यापार |

# राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राज.

## कार्यकारिणी अद्यतन

| वर्ष | सभापति | अध्यक्ष | व. उपाध्यक्ष | उपाध्यक्ष | मंत्री | उपमंत्री/संयुक्त मंत्री | कोषाध्यक्ष | प्रचार मंत्री |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1961-62 | – | डॉ. नंदलाल शर्मा | – | गोविन्दराम पुरोहित | रामस्वरूप चोटिया | श्याम महर्षि | भंवरलाल पुरोहित | मणिकांत वर्मा |
| 1962-63 | – | डॉ. नंदलाल शर्मा | – | गोविन्दराम पुरोहित | श्याम महर्षि<br>शिवप्रसाद त्रिपाटी | बृजलाल व्यास | भंवरलाल पुरोहित | हनुमानप्रसाद उपाध्याय |
| 1963-64 | – | डॉ. नंदलाल शर्मा | – | देवीदत्त पालीवल | श्याम महर्षि | भंवरलाल पुरोहित<br>रतन शर्मा | बृजलाल व्यास | हनुमानप्रसाद उपाध्याय |
| 1964-65 | – | डॉ. नंदलाल शर्मा | – | देवीदत्त पालीवल | श्याम महर्षि | बृजलाल व्यास<br>रामकिशन उपाध्याय | भंवरलाल पुरोहित | हनुमानप्रसाद उपाध्याय |
| 1965-66<br>1966-67 | – | हनुमानमल पुरोहित | – | देवीदत्त पालीवल | श्याम महर्षि | रामकिशन उपाध्याय | बृजलाल व्यास | हनुमानप्रसाद उपाध्याय |
| 1970-71 | – | हनुमानमल पुरोहित | – | देवीदत्त पालीवाल | श्याम महर्षि | रामकिशन उपाध्याय | बृजलाल व्यास | – |
| 1971-72 से<br>1973-74 | – | हनुमानमल पुरोहित | – | देवीदत्त पालीवाल | श्याम महर्षि | रामकिशन उपाध्याय<br>चांदरतन डागा | बृजलाल व्यास | – |
| 1974-75 से<br>1976-77 | – | हनुमानमल पुरोहित | – | देवीदत्त पालीवाल | श्याम महर्षि | रामकिशन उपाध्याय<br>गुलशन बोथरा | – | – |
| 1977-76 से<br>1981-82 | – | हनुमानमल पुरोहित | – | चांदरतन डागा | श्याम महर्षि | रामकिशन उपाध्याय<br>भीखमचंद पुगलिया | विजयसिंह पारीक | – |
| 1982-83 से<br>1985-86 | मालीराम शर्मा | हनुमानमल पुरोहित | – | भंवरसिंह सामौर | श्याम महर्षि | भीखमचंद पुगलिया<br>चेतन स्वामी | सुशीलकुमार डागा | चांदरतन डागा |
| 1986-87 से<br>1988-89 | मालीराम शर्मा | हनुमानमल पुरोहित | – | शिवप्रसाद सिखवाल | श्याम महर्षि | बजरंग शर्मा<br>रामकिशन उपाध्याय | भीखमचंद पुगलिया | कमलसिंह पारख |
| 1993-94 से<br>1997-98 | एल.सी. बिहानी | हनुमानमल पुरोहित | – | शिवप्रसाद सिखवाल | श्याम महर्षि | बजरंग शर्मा<br>रामकिशन उपाध्याय | हुलास वर्मा | भीखमचंद पुगलिया |
| 1998-99 से<br>2002-03 | एल.सी. बिहानी<br>एडवोकेट | श्याम महर्षि | – | धनराज पुगलिया | बजरंग शर्मा | रामकिशन उपाध्याय<br>रवि पुरोहित | हुलास वर्मा | सत्यदीप |
| 2004-09 | एल.सी. बिहानी<br>एडवोकेट | श्याम महर्षि | धनराज पुगलिया | सीताराम मोहता<br>बजरंग शर्मा | सत्यदीप | रामकिशन उपाध्याय | बजरंग शर्मा | भंवर भोजक |
| 2009-2014 | एल.सी. बिहानी<br>एडवोकेट | श्याम महर्षि | सीताराम मोहता | शिवप्रसाद सिखवाल<br>रामकिशन उपाध्याय<br>सत्यदीप | बजरंग शर्मा | रवि पुरोहित<br>विजय महर्षि | नारायणप्रसाद शर्मा | महावीरप्रसाद सारस्वत |

# राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राज.

## समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | राजस्थली | राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति की पत्रिका | 1977 से अनवरत प्रकाशित | राजस्थानी साहित्य त्रैमासिक पत्रिका | सम्पादक<br>श्री श्याम महर्षि<br>प्रबंध सम्पादक<br>श्री रवि पुरोहित |
| 2. | ख्यात | इतिहास एवं संस्कृति की शोध पत्रिका | अप्रैल, 1994 से 2010 तक प्रकाशन | इतिहास की वार्षिकी शोध पत्रिका | सम्पादक<br>प्रो. भंवर भादानी<br>प्रबंध सम्पादक<br>श्री श्याम महर्षि |
| 3. | हस्तक्षेप | साहित्यिक कार्ड पत्रिका | 3 अंकों का प्रकाशन (अब बन्द है) | हिन्दी की साहित्यिक अनियतकालीन पत्रिका | सम्पादक<br>श्री रवि पुरोहित<br>श्री सत्यदीप |
| 4. | जूनी ख्यात | इतिहास एवं संस्कृति की शोध पत्रिका | इस वर्ष (2011) से प्रकाशन | इतिहास व संस्कृति की अर्द्धवार्षिकी शोध पत्रिका | सम्पादक<br>प्रो. भंवर भादानी<br>प्रबंध सम्पादक<br>श्री श्याम महर्षि |

# राज्य स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विवरण

| क्र.सं. | कार्यक्रम दिनांक | समारोह विवरण | सौजन्य | कार्यक्रम का प्रकार | वि.वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 15.2.88 | हिमाचल लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | हिमाचल प्रदेश के लोक कलाकारों एवं संस्कृतिकर्मियों द्वारा सांस्कृतिक समारोह | |
| 2. | 6.2.90 | सिक्किम लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | सिक्किम प्रदेश के सांस्कृतिक दल के कलाकारों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत | |
| 3. | 19.1.92 | राजस्थान लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | राजस्थान के 25 वरिष्ठ लोक संगीत के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत | |
| 4. | 21.2.93 | लोक वाद्य सुर संध्या | जवाहर कला केन्द्र जयपुर | राजस्थान के लोकवाद्यों पर संगोष्ठी एवं गायन व वाद्यों का प्रदर्शन | |
| 5. | 28.2.93 | सांस्कृतिक शिविर | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | संगोष्ठी अध्यक्षता- श्याम महर्षि<br>मुख्य अतिथि-डॉ. आर. इमरोज<br>चूरू अंचल के लोक कलाकारों<br>द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत | |
| 6. | 23.3.96 व 24.3.96 | बातपोश समारोह | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | उद्घाटन-श्री शंकरलाल हर्ष (बीकानेर)<br>अध्यक्ष-श्री ए.डी. बोहरा, जोधपुर<br>मुख्य अतिथि-<br>डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, लक्ष्मणगढ़<br>विशिष्ट अतिथि-<br>नानूराम संस्कर्ता, कालू | |
| 7. | 8.2.97 | युवा समारोह | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | अध्यक्षता-श्री धनराज पुगलिया<br>मुख्य अतिथि-डॉ. चेतन स्वामी | |

| क्र.सं. | कार्यक्रम दिनांक | समारोह विवरण | सौजन्य | कार्यक्रम का प्रकार | वि.वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| 8. | 30.3.97 | संगोष्ठी | – | साक्षरता और लोक चेतना | डॉ. नंदकिशोर आचार्य, बीकानेर<br>श्री अरविंद ओझा, बीकानेर<br>डॉ. श्रीलाल मोहता, बीकानेर<br>श्री भंवरसिंह राव, एडीएम, चूरू |
| 9. | 18.12.97 | सांस्कृतिक समारोह | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | बंगाल के लोक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति | – |
| 10 | 4.8.98 व 5.8.98 | साहित्य समारोह | समवेत, जयपुर का आंशिक सौजन्य | लेखक व सामाजिक सरोकार संगोष्ठी | उद्घाटन-डॉ. हेतु भारद्वाज, नीम का थाना<br>मुख्य अतिथि-श्री माधव शर्मा, चूरू |
| 11. | 19.8.2000 | लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | राजस्थान के लोक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-श्री भुवनेश्वर कर्वा<br>अध्यक्षता-श्री डूंगरमल मोहता |
| 12. | 28.3.2000 | लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-<br>श्री शंकरलाल तहसीलदार<br>अध्यक्षता- श्री धनराज पुगलिया |
| 13. | 30.8.2002 | सांस्कृतिक संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | लोक संगीत की प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-<br>श्री सुन्दरलाल सिंघी समाजसेवी<br>अध्यक्षता-श्री धनराज पुगलिया |
| 14. | 8.3.03 व 9.3.03 | ख्याल समारोह | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | ख्याल पर संगोष्ठी | उद्घाटन-श्री रमेश बोराणा<br>अध्यक्ष, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर<br>अध्यक्षता-श्री हरीश भादानी |

| क्र.सं. | कार्यक्रम दिनांक | समारोह विवरण | सौजन्य | कार्यक्रम का प्रकार | वि.वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| 15. | 24.4.2003 | कत्थक नृत्य समारोह | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | कत्थक नृत्य की प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-<br>श्री शोभाचंद आसोपा एडवोकेट<br>अध्यक्षता- श्री अली, मुम्बई |
| 16. | 4.3.2004 | सांस्कृतिक संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | तमिलनाडु की नाट्यशाला, चैन्नई के कलाकारों द्वारा प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-<br>श्री सुन्दरलाल सिंघी समाजसेवी<br>अध्यक्ष-श्री विजयसिंह पारख |
| 17. | 7.1.2006 | लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति | मुख्य अतिथि- ला. महावीर माली<br>अध्यक्षता-एस. कुमार गुरनाणी |
| 18. | 2.3.2008 | रम्मत समारोह | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | रम्मत पर सेमिनार | मुख्य अतिथि-<br>श्री लक्ष्मीनारायण रंगा, बीकानेर<br>अध्यक्षता- श्री मालचंद तिवाड़ी |
| 19. | 9.3.2008 | लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-<br>श्री धर्मचंद्र पुगलिया<br>अध्यक्षता-श्री धनराज पुगलिया |
| 20. | 28.12.2008<br>व<br>29.12.2008 | लोक संगीत संगोष्ठी | संस्कृति विभाग, राजस्थान जयपुर | सेमिनार | मुख्य अतिथि- श्री रणवीरसिंह<br>अध्यक्ष, इप्टा, राजस्थान, जयपुर<br>अध्यक्षता-श्री नंद भारद्वाज<br>पूर्व निदेशक, दूरदर्शन, जयपुर<br>पत्रवाचक-<br>डॉ. किरण नाहटा, बीकानेर<br>डॉ. कृष्णलाल विश्नोई, बीकानेर<br>पं. नटवरलाल जोशी, लक्ष्मगणगढ़ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 21. | 6.12.2009 | लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-<br>श्री बीरबलराम चौधरी<br>एसडीएम, श्रीडूँगरगढ़<br>अध्यक्षता-श्री विजयसिंह पारख<br>विशिष्ट अतिथि-<br>श्री सत्यनारायण सोनी<br>लॉयन महावीर माली<br>श्री सुमेरमल पुगलिया<br>श्री सत्यनारायण बासनीवाल |
| 22. | 6.1.2011 | लोक संगीत संध्या | राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर | लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति | मुख्य अतिथि-श्री भंवरलाल नागा<br>एसडीएम, श्रीडूँगरगढ़<br>अध्यक्षता-लॉयन महावीर माली<br>विशिष्ट अतिथि-<br>श्री दीनदयाल बाकोलिया, तहसीलदार<br>श्री विनोदगिरी गुसांईं<br>श्री महेश राजोतिया<br>श्री विमल भाटी<br>श्री महावीर राठी<br>श्री ओमप्रकाश करनाणी |

# मरुभूमि शोध संस्थान, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राज.

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति ने 1980 से साहित्य-भाषा व इतिहास के क्षेत्र में शोध-सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ कर दिया। 1984 में राजस्थान प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर ने समिति को शोध संस्थान के रूप में अस्थाई मान्यता प्रदान की एवं 1988 में स्थाई रूप में मान्यता प्रदान कर दी गई। समिति की साधारण सभा की बैठक दिनांक 21.5.1989 को आयोजित की गई, जिसमें समिति के विधान की धारा 3 उपधारा (ज) के अंतर्गत शोध विभाग को एक प्रथम इकाई के रूप में गठन करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। शोध विभाग का नाम 'मरुभूमि शोध संस्थान, श्रीडूँगरगढ़' रखा। समिति द्वारा इसका प्रथम संचालन दिनांक 17.8.1989 से प्रारम्भ किया गया।

संस्थान में पृथक् से शोधकक्ष का निर्माण किया गया, जिसका उद्घाटन दिनांक 11.9.1999 को एशिया विश्वविद्यालय, टोकियो (जापान) के इतिहास के विभागाध्यक्ष प्रो. मासानोरी सातो ने किया।

1990 व 1998 में क्रमशः भादरा (हनुमानगढ़) की श्मशान भूमि व सोनारी (खेतड़ी) के थेड़ से कनिष्क कालीन व पहली शती के टेराकोटा व ईंटें संस्था के अध्यक्ष श्याम महर्षि को प्राप्त हुईं, जो वर्तमान में संस्था के संग्रहालय में विद्यमान हैं। संस्था में 18वीं से 19वीं शती के मध्य की प्राचीन पाण्डुलिपियां तथा रुक्के-परवाने संग्रहित हैं।

संस्था ने विभिन्न विषयों पर 1994, 2000, 2004, 2006 व 2011 में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् दिल्ली (आई.सी.एच.आर.) व संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किए।

1994 से 2010 तक शोध पत्रिका 'ख्यात' का प्रकाशन किया गया। वर्तमान में 'जूनी ख्यात' नाम से पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। विभिन्न विषयों पर ग्रंथों का प्रकाशन भी किया गया है।

शोध संस्थान द्वारा अब तक निम्नांकित ग्रंथ प्रकाशित किए जा चुके हैं–

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष 1999 | मालणी का इतिहास | लेखक डॉ. बी.एल. भादानी |
| वर्ष 2000 | सामाजिक स्वर | लेखक डॉ. बी.एल. भादानी |
| वर्ष 2002 | श्रीडूँगरगढ़ जनपद का इतिहास | लेखक श्याम महर्षि |
| वर्ष 2003 | समाज एवं संस्कृति | लेखक श्याम महर्षि |
| वर्ष 2005 | संस्कृति वैभव | लेखक श्याम महर्षि |

## शोध पत्रिका ख्यात

संस्था के निर्णय अनुसार 1994 में ख्यात नामक शोध पत्रिका (वार्षिक) का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। संस्थान के मानद निदेशक सुप्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. भंवर भादानी को पत्रिका का सम्पादक तथा सचिव श्याम महर्षि को प्रबंध सम्पादक मनोनीत किया गया।

ख्यात के अब तक 14 अंक प्रकाशित हुए हैं, जिनमें :-

1. मारवाड़ विशेषांक
2. शेखावाटी विशेषांक
3. राजस्थान में फारसी स्रोत विशेषांक
4. छत्तीसगढ़ विशेषांक

प्रमुख हैं। संस्था दिनांक 12.12.2010 की बैठक के निर्णय अनुसार 'जूनी ख्यात' के नाम से अर्द्धवार्षिकी के रूप में प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। पत्रिका रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर, भारत सरकार के द्वारा रजिस्टर्ड हो गई है, जिसे भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् (आई.सी.एच.आर.) नई दिल्ली से आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा है।

# मरुभूमि शोध संस्थान के परामर्श मण्डल के सदस्य

## वर्ष 1989-1992

1. पद्मश्री क्षेमचन्द्र 'सुमन', सुप्रसिद्ध साहित्यकार, शाहदरा, दिल्ली-32
2. प्रो. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, एम.ए. पीएच.डी., मानद निदेशक-प्रेमचन्द एवं सुब्रमण्यम भारती पीठ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
3. प्रो. भूपति राम साकरिया, एम.ए. पीएच.डी., सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात
4. डॉ. पुष्करदत्त शर्मा, एम.ए. पीएच.डी., ग्रन्थागाराध्यक्ष-अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर
5. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', प्रख्यात कथाकार, बीकानेर
6. मूलचंद 'प्राणेश', पो. झझू (बीकानेर)
7. डॉ. किरण नाहटा, एम.ए. पीएच.डी., डूंगर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीकानेर

## वर्ष 1993-1998

1. विष्णु प्रभाकर, 818 कुण्डेवालान चौक, अजमेरी गेट, दिल्ली-6
2. डॉ. नारायण दत्त पालीवाल, सचिव, हिन्दी अकादमी, आसफअली रोड, नई दिल्ली 110002
3. वेद व्यास, अध्यक्ष, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर
4. डॉ. भंवर भादानी, रीडर, इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, (उ.प्र.)
5. रणवीरसिंह, अध्यक्ष, इप्टा, राजस्थान, डूंडलोद हाउस, हवा सड़क, जयपुर
6. आई.सी. श्रीवास्तव, आई.ए.एस. जयपुर
7. डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', पूर्व हिन्दी विभागाचार्य, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

## वर्ष 1999-2004

1. श्री वेद व्यास, महामंत्री, राज. प्रगतिशील लेखक संघ, जयपुर
2. श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', साहित्यकार, बीकानेर
3. श्री जहूर खां मेहर, भू.पू. रीडर (इतिहास विभाग), जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
4. श्री दामोदर मिश्र, पूर्व अध्यक्ष, जिला उपभोक्ता संरक्षण मंच, चूरू
5. डॉ. बच्छराज दुगड़, प्रोफेसर (दर्शन विभाग), जैन विश्व भारती, लाडनूं
6. डॉ. बी.एल. भादानी, प्रोफेसर (इतिहास विभाग), अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
7. डॉ. डी.आर. जोधावत, आई.ए.एस., जयपुर
8. डॉ. डी.बी. क्षीरसागर, पूर्व उपनिदेशक, राजस्थान राज्य प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
9. प्रो. सत्यप्रकाश गुप्ता, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
10. डॉ. मक्खनलाल, प्रोफेसर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

# मरुभूमि शोध संस्थान के परामर्श मण्डल के सदस्य

## वर्ष 2004-2009

1. प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल, नई दिल्ली
2. प्रो. कपिल कुमार, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3. प्रो. एस.एम. अजीजूदीन हुसैन, जामियां मीलिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली
4. श्री रणवीरसिंह, अध्यक्ष, राजस्थान इप्टा, जयपुर
5. श्री मिलाप दुगड़, कुलपति, गांधी विद्या मन्दिर (डीम्ड विश्वविद्यालय), सरदारशहर
6. श्री विजय वर्मा, से.नि. आई.ए.एस., जयपुर
7. श्री रतनशाह, अध्यक्ष, राजस्थानी प्रचारिणी सभा, कोलकाता
8. डॉ. रजनीकान्त पंत, पूर्व प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-17
9. डॉ. तेजनारायण कुशवाहा, कुलपति, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार)
10. प्रो. एम.डी.एन. शाही, पुरातत्त्ववेत्ता, अलीगढ़

## वर्ष 2009-2014

1. डॉ. महेन्द्र खड़गावत, निदेशक, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
2. श्री ओमप्रकाश सारस्वत, सहायक निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर
3. डॉ. अशोक आचार्य, विधिवेत्ता, बीकानेर
4. डॉ. सुरेन्द्रसिंह पोखरना, पूर्व वैज्ञानिक (इसरो) मुम्बई, मु. अहमदाबाद
5. डॉ. मित्रेश कुमार गुप्त, महासचिव, राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्, मेरठ
6. श्रीमती (प्रो.) आभा पाल, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर
7. प्रो. अब्दुल मतीन, निदेशक, सी.एस.ई.आई.पी., मौलाना आजाद, राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद
8. श्री राज केसरवानी, महासचिव, राष्ट्रीय हिन्दी सेवी महासंघ, इन्दौर
9. श्री वेद व्यास, अध्यक्ष, राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ, जयपुर
10. श्री रणवीरसिंह, अध्यक्ष, राजस्थान इप्टा, जयपुर

# राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति (मरुभूमि शोध संस्थान)
# की पुरातत्त्व सामग्री का विवरण

| क्रमांक | विवरण | सामग्री का प्रकार | सामग्री का काल |
|---|---|---|---|
| 1. | प्राचीन पांडुलिपियों का संग्रह | (अ) 216 हस्तलिखित कृतियों का संग्रह | 18वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य लिखित संग्रह |
| | | (ब) 275 बहियां, रुक्के व परवानों का संग्रह | गत 100 से 150 वर्ष के मध्य लिखित |
| 2. | प्राचीन टेराकोटा (पुरातत्त्व सामग्री) | (अ) भादरा (हनुमानगढ़) स्थित थेहड़ से उत्खनन में प्राप्त कनिष्क एवं बुद्धकालीन पुरातत्त्व सामग्री का संग्रह | ईस्वी सन् प्रथम शती से पूर्वकालीन |
| | | (ब) सोनारी (खेतड़ी-झुंझुनूं) से उत्खनन में प्राप्त पुरातत्त्व सामग्री | ईस्वी सन् की दूसरी शती कालीन |

# राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति द्वारा संचालित शोध विभाग (मरुभूमि शोध संस्थान) का अनुसंधान कार्य विवरण

| क्रमांक | अनुसंधान कार्य का नाम | कार्य का विवरण | अवधि (वर्ष) कार्य पूर्ण हुआ | मानद शोध परियोजना शोधकर्ता (लेखन/सम्पादन) | कार्य पूर्ण | ग्रंथ का प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | मेहा रामायण | प्रथम राजस्थानी भाषा की रामायण | 2 वर्ष (1982 से 1984) | श्याम महर्षि | पूर्ण | 1984 ई. |
| 2. | राजस्थान की साहित्यिक संस्थाएं और उनकी देन | राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं का 100 वर्ष का कार्य | 4 वर्ष (1980 से 1984) | श्याम महर्षि | पूर्ण | 1984 ई. |
| 3. | प्राचीन शिलालेखों में राजस्थानी भाषा | शिलालेखों पर मध्यकाल से 19वीं शताब्दी तक का कार्य | 4 वर्ष (1986 से 1989) | डॉ. परमेश्वर सोलंकी | पूर्ण | 1989 ई. |
| 4. | राजस्थानी शब्द सम्पदा | प्राचीन शब्दों पर समीक्षा/अर्थ | 3 वर्ष (1985 से 1987) | मूलचन्द प्राणेश | पूर्ण | 1990 ई. |
| 5. | मालानी का इतिहास | मालानी क्षेत्र का इतिहास (वृत्तान्त) | 3 वर्ष (1997 से 1999) | डॉ. बी.एल. भादानी | पूर्ण | 1999 ई. |
| 6. | सामाजिक स्वर | शोध निबन्ध (सम्पादन) | 1 वर्ष (1999 से 2000) | डॉ. बी.एल. भादानी | पूर्ण | 2000 ई. |
| 7. | राजस्थानी भाषा आन्दोलन अर मानता | शोध-सर्वेक्षण | 1 वर्ष (2000 से 2001) | श्याम महर्षि | पूर्ण | 2002 ई. |
| 8. | श्रीडूँगरगढ़ जनपद का इतिहास | (1526 ई. तक का इतिहास) | 2 वर्ष (1987 से 1989) | श्याम महर्षि | पूर्ण | 2002 ई. |
| 9. | समाज और संस्कृति | शोध निबंध सम्पादन | 3 वर्ष (1999 से 2001) | श्याम महर्षि | पूर्ण | 2003 ई. |
| 10. | संस्कृति वैभव | शोध निबंध | 2 वर्ष (2001 से 2002) (2002 से 2003) | श्याम महर्षि | पूर्ण | 2004 ई. |

# राष्ट्रीय सेमिनारों का विवरण

| क्र.सं. | सेमिनार का नाम | सेमिनार पर केन्द्रित विषय | दिनांक | सौजन्य | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | साहित्य और समाज | साहित्य और समाज के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर | 7 व 8 अगस्त, 1994 | भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली | विषय प्रवर्तन- प्रो. एस.पी. गुप्ता, अलीगढ़<br>उद्घाटन-प्रो. के.एस. गुप्ता<br>22 शोध पत्रों का वाचन |
| 2. | समाज और संस्कृति | समाज और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य पर | 12 व 13 अगस्त, 2000 | मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली | उद्घाटन- श्री राजेन्द्र यादव, सम्पादक- हंस, नई दिल्ली<br>मुख्य अतिथि- श्री विजय वर्मा, पूर्व आई.ए.एस.<br>विशिष्ट अतिथि- आई.सी. श्रीवास्तव, आई.ए.एस., अध्यक्ष, राजस्व मंडल, अजमेर |
| 3. | तीन दिवस राष्ट्रीय संगोष्ठी | शेखावाटी अंचल इतिहास एवं संस्कृति के युगीन संदर्भ<br>विशेषता-<br>संस्कृति वैभव का लोकार्पण, भित्ति चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन | 28, 29 व 30 मार्च 2004 | भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली | अध्यक्ष- श्री रणवीरसिंह, अध्यक्ष, इप्टा राजस्थान, जयपुर<br>मुख्य अतिथि- पदम्श्री कृपालसिंह, जयपुर<br>विषय प्रवर्तन- डॉ. आर.सी. अग्रवाल, जयपुर<br>राज. पुरातत्त्व विभाग के पूर्व निदेशक<br>स्वागताध्यक्ष-श्री सम्पतराम भादानी |

| क्र.सं. | सेमिनार का नाम | सेमिनार पर केन्द्रित विषय | दिनांक | सौजन्य | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| 4. | राजस्थान का फारसी साहित्य | फारसी साहित्य में राजस्थान का स्वरूप | 30 नवम्बर 1 व 2 दिसम्बर, 2006 | 1. ईरान इस्लामिक गणतंत्र राजदूतावास, नई दिल्ली<br>2. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली<br>3. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर | विषय प्रवर्तन- प्रो. एस.एम. अजीजूदीन जामिया मिलिया इस्लामिया वि.वि.<br>मुख्य अतिथि- प्रो. सी.बी. गैना कुलपति-बीकानेर विश्वविद्यालय, बीकानेर<br>अध्यक्ष- डॉ. महेन्द्र खड़गावत निदेशक-राज. राज्य अभिलेखागार, बीकानेर<br>विशेष-फारसी दस्तावेजों की प्रदर्शनी का उद्घाटन |
| 5. | मध्यकालीन राजस्थान | मध्यकालीन राजस्थान के शिलालेख साहित्य, संस्कृति आर्थिक इतिहास | 24, 25 व 26 जुलाई 2011 | भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली | अध्यक्ष- डॉ. इशरत आलम सदस्य सचिव-भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, दिल्ली<br>मुख्य अतिथि- प्रो. गंगाराम जाखड़ कुलपति, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय<br>अध्यक्ष, श्री रणवीरसिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, इप्टा, जयपुर |

# राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राज.

लेखकों के पुस्तक दान से बना एक पुस्तकालय-राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, श्रीडूँगरगढ़। आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व स्थानीय राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के कार्यालय में संस्था के कुछ प्रतिनिधि अनौपचारिक रूप से चर्चा कर रहे थे कि इस साहित्यिक संस्था की क्या प्रवृत्ति हो, जिससे यह नियमित खुले और इससे आम लोगों का जुड़ाव निरन्तर बना रहे। संस्था के तत्कालीन मंत्री, वर्तमान में अध्यक्ष श्याम महर्षि ने सुझाव रखा कि समिति के अंतर्गत एक पुस्तकालय का संचालन किया जाए। कुछ समय पश्चात् इस विषय पर पुनः विस्तृत चर्चा हुई। संस्था कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि संस्था के अनुशासन में एक पुस्तकालय की स्थापना की जावे। इसी निर्णय की पालना में दिनांक 31.7.1995 में इस पुस्तकालय की स्थापना की गई। सर्वप्रथम श्याम महर्षि ने अपनी संग्रहित पुस्तकों में से 100 पुस्तकें प्रदान कर उद्घाटन की रस्म अदा की। 1998 में संस्था का कार्यालय अपने निजी भवन में स्थानान्तरित हो गया। इसके बाद पुस्तकालय के विकास पर पुनः चिंतन किया गया और एक योजना बनाई गई कि साहित्यिक क्षेत्रों के निजी पुस्तक संग्रहों एवं जिन लेखकों की स्वयं की पुस्तकें छपी हैं, उनसे पुस्तकालय हेतु पुस्तकें दान देने के लिए अपील की जावे। उक्त योजना से पुस्तकालय को आशातीत सफलता मिली। संस्था को राजस्थान से और राजस्थान के बाहर से पर्याप्त पुस्तकें मिलने लगीं। 100 पुस्तकों से प्रारम्भ किए गए पुस्तकालय में 2002 से अब तक 8,000 पुस्तकें हो गईं। पुस्तकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए पुस्तकालय का अलग कक्ष बनाने की आवश्यकता महसूस हुई। समिति के अध्यक्ष श्याम महर्षि ने स्थानीय विधायक श्री मंगलाराम गोदारा से अनुरोध किया कि वे समिति परिसर में एक पुस्तकालय कक्ष बनवा दें। श्री गोदारा ने अपने विधायक कोटे की राशि से एक हॉल बनवा दिया, जिसका उद्घाटन उनके द्वारा दिनांक 28.09.03 को सम्पन्न हुआ। कस्बाई क्षेत्र का राज्य में यह पहला पुस्तकालय है, जिसमें पुस्तकें बिना किसी राजकीय सहयोग व दानदाताओं के वित्तीय पोषण के सिर्फ लेखकों एवं साहित्य के हितचिंतकों के सहयोग से इतनी बड़ी संख्या में पुस्तकें प्राप्त हुईं। सर्वाधिक दान देने वाले साहित्यिक मित्रों में सर्वश्री यादवेन्द्र शर्मा (बीकानेर), वेद व्यास (जयपुर), मालचंद तिवाड़ी (बीकानेर), डॉ. भागीरथ भार्गव (अलवर), गिरीराज किशोर (कानपुर), डॉ. रामबख्श (दिल्ली), प्रियंवद (कानपुर), डॉ. देवीप्रसाद गुप्त (बीकानेर), डॉ. भंवर भादानी (अलीगढ़), सुभाष चन्द्र (नई दिल्ली), श्याम महर्षि (श्रीडूँगरगढ़), रवि पुरोहित (श्रीडूँगरगढ़) तथा डॉ. भूपतिराम साकरिया (वल्लभ विद्यानगर) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। 2007 तक पुस्तकालय में 12 हजार पुस्तकें संग्रहित हो गईं। 2008 में पहली बार राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेशन कोलकाता से करीब 60,000 रुपये की पुस्तकें अनुदान में प्राप्त हुईं। दिसम्बर 2009 तक पुस्तकालय कस्बे के अनेक शिक्षा अनुरागियों के सहयोग से $6\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ साइज की शीशे के दरवाजे युक्त लोहे की 28 अलमारियों से सुसज्जित हो गया। इस वक्त पुस्तकालय में 12 हजार से अधिक ग्रंथ, 350 प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियां उपलब्ध हैं। इस वर्ष 2010 में पुस्तकालय को 57,500/- रुपये पुस्तक क्रय करने हेतु राजा राममोहन राय पुस्तकालय फाउण्डेशन कोलकाता से अनुदान भी मिला। इस पुस्तकालय में बाल एवं किशोर साहित्य भी लगभग 1,500 की संख्या में उपलब्ध है। प्रबंध समिति की योजना है कि शीघ्र स्कूली बच्चों के लिए संस्था में एक चिल्ड्रन कॉर्नर का संचालन किया जाए। वर्तमान में पुस्तकालय परिसर में संचालित वाचनालय में पाठकों हेतु 50 पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं। 150 से अधिक पुस्तकालय के सदस्य हैं, जिसमें अधिक संख्या विद्यालयी छात्रों की है। पुस्तकालय गैर अनुदानित शर्त पर राज्य के भाषा एवं पुस्तकालय विभाग से मान्यता प्राप्त है।

# राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

## कार्यकारिणी समिति वर्ष 2009-2014

| क्र.सं. | पद | नाम | पता |
|---|---|---|---|
| 1. | अध्यक्ष | श्री श्याम महर्षि | वार्ड नं. 14, श्रीडूँगरगढ़ |
| 2. | उपाध्यक्ष | श्री रामकिशन उपाध्याय | बिग्गाबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 3. | मंत्री | श्री बजरंग शर्मा | बिग्गाबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 4. | उपमंत्री | श्री भंवर भोजक | कालूबास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 5. | कोषाध्यक्ष | श्री नारायणप्रसाद शर्मा | प्रबंधक, सन साइन पब्लिक स्कूल, श्रीडूँगरगढ़ |
| 6. | सदस्य | श्री भरतसिंह राठौड़ | मुख्य बाजार, श्रीडूँगरगढ़ |
| 7. | सदस्य | श्री सत्यदीप | आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ |
| 8. | सदस्य | श्री विजय महर्षि (पत्रकार) | महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूँगरगढ़ |
| 9. | सदस्य | श्री विमल भाटी | होटल मालजी, श्रीडूँगरगढ़ |
| 10. | सदस्य | श्री प्रेमचंद शर्मा | झंवर बस स्टैण्ड, श्रीडूँगरगढ़ |
| 11. | सदस्य | श्री महावीर प्रसाद सारस्वत (पत्रकार) | कालूबास, श्रीडूँगरगढ़ |

# राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान
# वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाएं

## दैनिक

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | दैनिक नवज्योति | जयपुर | डोनेशन |
| 2. | पंजाब केसरी | जयपुर | डोनेशन |

## साप्ताहिक

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | इंडिया टुडे | जयपुर | डोनेशन |
| 2. | युवक | चूरू | विनियम |
| 3. | पेशकदमी | झुंझुनूं | विनियम |
| 4. | बीकानेर एक्सप्रेस | बीकानेर | विनियम |
| 5. | शेखावाटी एक्सप्रेस | चिड़ावा | विनियम |

## पाक्षिक

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | सरिता | नई दिल्ली | डोनेशन |
| 2. | सूरतगढ़ टाइम्स | सूरतगढ़ | विनियम |
| 3. | राष्ट्रीय विश्वास | नई दिल्ली | विनियम |
| 4. | नोखा जनपक्ष | नोखा | विनियम |
| 5. | आईना-ए-शेखावटी | खेतड़ी | विनियम |
| 6. | पार्टी जीवन | लखनऊ | विनियम |
| 7. | राष्ट्रोत्थान सार | नोहर | विनियम |
| 8. | समाचार सफर | कोटा | विनियम |
| 9. | चौकसी | बीकानेर | विनियम |
| 10. | लोक दशा | | विनियम |

## मासिक

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | प्रौढ़ शिक्षा | दिल्ली | निशुल्क |
| 2. | Amity | दिल्ली | निशुल्क |
| 3. | संवर्धन | तिरुवन्तपुरम | विनियम |
| 4. | आसपास | भोपाल | क्रय |
| 5. | मधुमती | उदयपुर | विनियम |
| 6. | हिन्दी ज्योति बिम्ब | जयपुर | विनियम |
| 7. | हिन्दी प्रचार वाणी | बेंगलौर | विनियम |
| 8. | समाज विकास | कोलकाता | विनियम |
| 9. | कादम्बिनी | दिल्ली | डोनेशन |
| 10. | आउटलुक | दिल्ली | निशुल्क |
| 11. | अंगिका मासिक | पटना | विनियम |
| 12. | नेणसी | कोलकाता | विनियम |
| 13. | माणक | जोधपुर | विनियम |
| 14. | जागतीजोत | बीकानेर | विनियम |
| 15. | रविन्द्र ज्योति | जींद (हरियाणा) | विनियम |
| 16. | जागरूक पेंशन | बीकानेर | विनियम |
| 17. | अभिनव प्रत्यक्ष | पटना | विनियम |
| 18. | ग्राम गदर | जयपुर | विनियम |
| 19. | निरामय जीवन | जोधपुर | विनियम |

## द्विमासिक

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | ओलख | डीडवाना | विनियम |
| 2. | कुरजां | जमशेदपुर | विनियम |

# राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

## वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाएं

### त्रैमासिक

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | कृति ओ | जोधपुर | विनियम |
| 2. | भाषा पीयूष | बेंगलौर | विनियम |
| 3. | राजस्थानी गंगा | बीकानेर | विनियम |
| 4. | वरदा | बिसाऊ | विनियम |
| 5. | मरु गुलशन | जोधपुर | विनियम |
| 6. | भाषा स्पंदन | बेंगलौर | विनियम |
| 7. | प्रतिश्रुति | जोधपुर | विनियम |
| 8. | वैचारिकी | कोलकाता | विनियम |
| 9. | अनुश्रुति | जयपुर | विनियम |
| 10. | अरावली उद्घोष | उदयपुर | विनियम |
| 11. | एक्शन | अलवर | विनियम |
| 12. | अमन पथ | अलवर | विनियम |

### वार्षिक

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | बिणजारो | पिलानी | विनियम |
| 2. | ख्यात | श्रीडूँगरगढ़ | विनियम |

### अनियमित-कालीन

| क्र.सं. | नाम पत्रिका | प्रकाशन स्थान | प्राप्ति का माध्यम |
|---|---|---|---|
| 1. | शबनम ज्योति | मेड़तासिटी | विनियम |
| 2. | शोध | बिजनोर | विनियम |
| 3. | सार्थक | मुम्बई | विनियम |